Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म

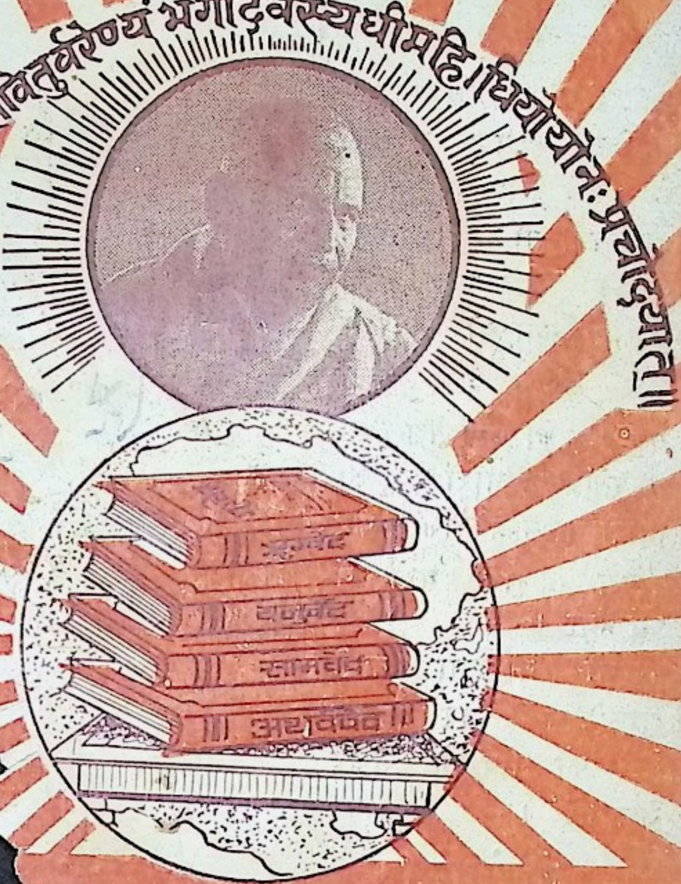

न ज्ञान (मासिक)

१६ दिसम्बर ८४ से १५ जनवरी, ८५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू हितों के लिए संघर्षरत

लखनऊ से हिंदू राष्ट्रवादी दलों की प्रत्याशी

पंडिता राकेश रानी

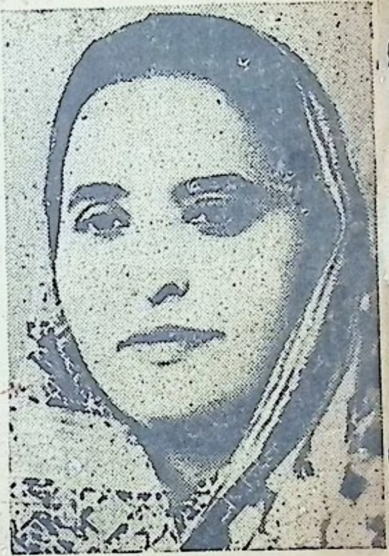

● जिन पर सरकार ने चौंतीस मुकद्दमे इसलिये चला रखे हैं कि इन्होंने धर्म-परिवर्तन, गौ-हत्या व अल्प संख्यक तुष्टिकरण का विरोध किया और देश में चल रहे देशी-विदेशी षड्यन्त्रों का पर्दाफाश किया

● सर्वप्रथम चारों वेदों का हिन्दी भाष्य प्रकाशित कर पचास हजार घरों में पहुंचाया।

● जो गौ-हत्या बन्दी आन्दोलन में चार माह की बेटी को गोद में लेकर जेल गईं।

वीरांगना

बहिन राकेशरानी को विजयी बनायें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः

की

प्रथम पुण्य तिथि २१ दिसम्बर, १६८४ के अवसर पर हम हिंदू समाज की जागृति व रक्षा के लिये खून की अन्तिम बूंद और जीवन की अन्तिम सांस तक लड़ने का संकल्प लेते हैं जिससे कि हिंदू राष्ट्र का वह लक्ष्य प्राप्त हो सके जिसके लिये आपने आजीवन संघर्ष किया और हमें मार्ग दिखाया। हम हैं :

राकेश रानी

(अध्यक्ष दयानंद संस्थान, सम्पादक जनज्ञान)

तथा

दयानंद संस्थान, जनज्ञान व हिंदू रक्षा समिति परिवार के सभी सदस्य गण।

(... पृष्ठ के सन्दर्भ में)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िए !

आगामी निर्वाचन और हमारा कर्तव्य (सम्पादकीय) ४

(महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी) ९

मेरे शहीद ! तुम्हारी याद कैसे मनाऊं ? (कविता) —वेदभिक्षुः ११

पण्डिता राकेशरानी का चुनाव घोषणापत्र १३

समय की शिला पर महात्मा वेदभिक्षुः के आलेख १७

स्व. महात्मा वेदभिक्षुः के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक दृष्टि —सत्यपाल शास्त्री २४

श्रद्धांजलि (कविता) —सत्यव्रत चौहान सिद्धान्त शास्त्री २६

मेरे अभिन्न साथी : महात्मा वेदभिक्षुः —महेन्द्र प्रताप शास्त्री २८

मानव जीवन और गायत्री (अध्यात्मधारा) ३०

एक और भारत देखा, सागर के उस पार (मारीशस यात्रा वृत्तान्त-२) —अनिल लोढ़ा ४९

आओ नटवर ! फिर एक बार (कविता) —राजेन्द्र चान्द्रायण ५६

सम्भवामि युगे युगे ! —डॉ॰ सुधांशुमोहन अग्निहोत्री ५७

आप ही के पत्र ५९

देशरत्न डॉ॰ राजेन्द्रप्रसाद —डॉ॰ रामजी सिंह ६१

प्रभु से प्रार्थना : क्यों और कैसे ?—महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी ६५

हिन्दू—अहिंसा का प्रतीक —पं॰ बिहारीलाल शास्त्री ६७

चतुर्वेद विश्वविद्यालय की स्थापना ६९

मालवीयजी पत्रकार के रूप में —वीणा श्रीवास्तव ७१

क्रान्तिकारी आर्य सन्यासी : —अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ७४

यज्ञोपवीत की मर्यादा (कहानी) —राकेशरानी ८१

योग और स्वास्थ्य —आचार्य 'प्रणव' ८७

कुछ भविष्य का ध्यान करो (कविता) प्रो॰ सारस्वतमोहन 'मनीषी' ९१

हिन्दू एक राष्ट्रीय सम्बोधन —महन्त दिग्विजयनाथ ९२

संगीत सम्राट् तानसेन हिन्दू थे —क्रान्तिकुमार वैद्य ९५

आइये, दिलों में पड़ी दरारों को भरें —सदाजीवतलाल ९[illegible]

[illegible]वाहन (बालजगत्) —प्रेमचन्द्र शास्त्री [illegible]

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी के बलिदान के कारण —धर्मवीर विद्यालंकार

भारत—हमारी मातृभूमि —स्वामी विवेकानन्द

आठवीं लोकसभा का चुनाव : एक युग बदलेगा ! —धर्मपाल शर्मा

साधुओं के वेश में विदेशी जासूसों का व्यापक जाल

कायदे आजम जिन्ना कितने डरपोक थे —निरंजन वर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः

सम्पादक—राकेशरानी

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग,
करोलबाग, नई दिल्ली–५
दूरभाष : ५६२६३६
५६४७४१
८०१२११

वार्षिक मूल्य : ३० रुपये
विदेश में : विमान से ४२ पौंड
६० डालर
समुद्री डाक से ४ पौंड, ६ डालर
आजीवन : ५०१ रुपये
विदेश में : १५०१ रु.
यह प्रति : तीन रुपये
पौष सम्वत् २०४१
दिसम्बर १९८४, वर्ष १७, अंक ८

वेद विचार

दो मेधा, रसधार प्रभो !

मेधां मे वरुणो ददातु,
मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च,
मेधां दाता ददातु मे स्वाहा ।।
यजु० ।।३२।२२।

वरुण मुझे मेधा देवें, जो
अग्नि ज्योति से ज्योतिर्मय हो
प्रजा शक्ति को बलशाली कर
इन्द्र, वायु, गति प्राणों की,
दिव्य प्राण आभा फैलाकर
सब कुछ चरणों में अर्पित कर
ज्ञान ज्योति का दे प्रतिदान ।

प्रभो ! बुद्धि दो ऐसी कि जा[...] सकूं, बन्धनरहित होने का मार्ग । ऐ[...] ज्योति पा सकूं कि अन्धकार मे[...] पास भी न आए ।

प्रजा की कीर्ति का कारण [...] बनूं । मेरा जीवन तेरे दर्शन से ऐस[ा] पावन हो जाए कि मैं इन्द्र समा[न] तेजस्वी होकर आसुरी शक्तियों क[ा] संहार कर सकूं । प्राण शक्ति धार[ण] कर मैं वह सब कुछ पा लू, जि[से] पाने के लिए मेधा की आवश्यकता [...] अनुभव कर रहा हूं ।

ज्ञान, गति और शक्ति का केन्[द्र] बनकर प्रभु मैं तेरे चरणों से व[...] प्रकाश पान करूं जिसका अमृ[त] निर्झर मेरे मानस को आनन्द [...] पूरित कर दे । (शेष पृष्ठ ३९ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

आगामी निर्वाचन और हमारा कर्त्तव्य !

भारतीय राजनीति के इतिहास पर एक नवीन अध्याय का सृजन हो रहा है। श्रीमती इन्दिरा गांधी के निधन से एक विराट शून्य का निर्माण हुआ है, इस तथ्य को तो कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता। नए प्रधान मंत्री के रूप में श्री राजीव गांधी ने पदभार ग्रहण करने के साथ ही साथ कांग्रेस (इ) का अध्यक्ष पद भी सम्भालकर इन्दिरा जी की दोनों पदों पर आरूढ रखने की परम्परा को ही आगे बढ़ाया है। साथ ही लोकसभा लोकसभा के चुनावों की घोषणा कराकर जैसे लोकतंत्र की स्वाभाविक प्रक्रिया को गतिमान किया गया है, वहीं यह भी कहा जा रहा है कि उन्होंने सहानुभूति की लहर पर सवार होकर कांग्रेस (इ) की ही नौका को चुनाव वैतरणी से पार लगाने का उपक्रम भी किया है।

चुनाव के रंगमंच पर समाजवाद का डिमडिमनाद करने वाले सत्तापक्ष के टिकट पर अनेक करोड़पति अपने 'हाथ' दिखा रहे हैं तो अनेक नेताओं को 'हाथ' दिखाने के लिए कई जाने-माने अभिनेता भी सत्तापक्ष ने अपने प्रत्याशी बनाकर खड़े कर दिए है। भाई भतीजावाद का विरोध करने वालों ने अपने चुनाव घोषणापत्र में भ्रष्टाचार को समूल नष्ट करने की गुहार तो लगायी है, किन्तु कई बड़े नेताओ के ऐसे निकट सम्बंधियों को भी पुनः चुनाव के अखाड़े में उतारा गया है, जिनके क्रियाकलाप उनके "जन-हितैषी कारनामों" की गवाही दे रहे हैं और क्षेत्र के मतदाता उनसे 'आवश्यकता से कुछ अधिक ही संतुष्ट' नजर आते है।

जहां तक तथाकथित विपक्षी दलों का संबंध है, उनके प्रचार के ढोल भी पूरे जोर शोर से बज रहे है। निर्धनों के इन हितैषियों द्वारा अपव्यय और जन-धन की बर्बादी के लिए सत्तापक्ष पर लगाए जा रहे आरोप की पोल वह हर पोल और खम्भी भी खोल रहा है, जिस पर अपनी पताकाएं सत्तारूढ़ दल के समान ही बांधने में होड़ ले रहे है।

विरोधी पक्ष की एकता का ढिंढोरा भी लम्बे समय से पीटा जा रहा था। विपक्ष सत्तारूढ दल को एकमात्र शत्रु बता रहा है तो सत्ता पक्ष भी विपक्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को ही देश का दुश्मन ठहरा रहा है। सत्ता पक्ष स्वयं को जन-कल्याण का प्रहरी जता रहा है तो तथाकथित विपक्षी दलों में से प्रत्येक स्वय को श्रीकृष्ण का एकमेव अवतार बता रहा है। किन्तु इतिहास साक्षी दे रहा है कि इन्दिरा कांग्रेस के समान ही इन तथाकथित विपक्षी दलों ने भी राष्ट्रहित के लिए अहितकर रीति-नीति अपनाने में कोई संकोच नही किया।

विरोधी दल एकत्रित होकर राज्य का संचालन कर सकते हैं या नही इस संबध में दलभद्री प्रयोग एक बार हो चुका है और उसका जो कुपरिणाम देश ने भोगा है, वह भी तो जनार्दन से छिपा नहीं है।

यदि तनिक गम्भीरता से विचार किया जाए तो यह तथ्य स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि कांग्रेस (इ) और तथाकथित विपक्षी दलों की मौलिक विचारधारा में कोई अन्तर है ही नहीं। मुस्लिम अनुनय, अल्पसख्यक तुष्टि-करण अथवा देश की संस्कृति और परम्परा की अवमानना म ये दोनों पक्ष एक दूसरे को मात देने में होड़ लगाते रहे हैं, इनकी अर्थनीति और विदेश नीति में भी कोई अन्तर प्रतीत नही होता।

सत्तापक्ष ने संविधान के निर्देश की अवहेलना कर हिन्दू कोड़ बिल बनाया था और अन्य मजहबों के लोगों के व्यक्तिगत कानूनों को हाथ नहीं लगाया था। सत्ता पक्ष ने समान नागरिक संहिता बनाने के लिए कोई पग नहीं उठाया तो ये आज के विपक्षी दल भी जनता पार्टी के नाम से सत्तारूढ़ हुए तो इन्होंने भी इस दिशा में कोई प्रयास करने का साहस नहीं दरसाया। हिन्दू हितों की उपेक्षा कांग्रेस शासन में होती रही तो जनता शासन को [illegible] केवल अल्पसंख्यकों की शिकायतों पर ध्यान देने के लिए अल्पसख्यक आयोग बनाकर राष्ट्र को वहुसख्यक और अल्पसंख्यक के नाम पर विभाजित करने की दिशा में ही कदम बढ़ाया। अरब तुष्टिकरण की अंधी होड में वर्तमान सत्तापक्ष और विपक्ष एक दूसरे से बाजी लेते रहे हैं। परिणाम यह हुआ है कि पाश्चात्य धन के बल पर हुए धर्मान्तरण ने नागालैंड और मिजोरम समस्याओं को उत्पन्न किया तो अरब देशों से आए धन ने मीनाक्षीपुरम में हरिजनों के सामूहिक इस्लामीकरण जैसे कांड राष्ट्र के इतिहास में जोड़े हैं।

[illegible] जिस प्रकार के काल्पनिक राष्ट्र के चित्र को कांग्रेस ने देश के समक्ष अ[illegible] किया था, वैसी ही राष्ट्रीयता का डिमडिमनाद विपक्ष भी कर रहा है। [illegible] सत्ता पक्ष सत्ता में रहने के लिए हर हथकंडा बरतने को लालायित है [illegible] विपक्ष भी उस उग्रवादी तत्वों तक से वोटों की सौदेबाजी करने में [illegible]कानी नहीं कर रहा जिन्होंने अलगाव के प्रेरक प्रस्तावों को खुलेआम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पारित कर अपना लक्ष्य घोषित किया है। उग्र अकाली तत्वों की मान मनौती के लिए दमकिपा हो या जनता अथवा भाजपा कोई भी तो पीछे नही है। जनता पार्टी के अध्यक्ष अकाली नेता जसवंत सिंह ठेकेदार से वोटों के बारे में ठेका करने के लिए उनके दरबार में गुहार करने से नही चूके तो भाजपा के अध्यक्ष श्री राम जेठामलानी—जिन्होंने आर्य नेता श्री ओम प्रकाश त्यागी के धर्म स्वातन्त्रय विधेयक (जिसमें धर्मान्तरण पर रोक का प्रावधान था) विरोध करने में अगुवाई की थी। अकाली नेता श्री लोंगोवाल की वकालत में भी अगुआ रहे है। श्री फारूक अब्दुल्ला—जिन्होंने पाकिस्तानियों को कश्मीर में आकर बसने की खुली छूट देने की ठानी थी। कद्रदानी में जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी और दलित मजदूर किसान पार्टी कोई भी तो पीछे नहीं रही।

इस पृष्ठभूमि में जन-साधारण के लिए स्थितियों पर गंभीरता सहित विचार करना आवश्यक है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संघचालक माननीय बाला साहब देवरस के शब्दों में कहा जाए तो हिन्दुस्तान में हिन्दू हित और राष्ट्र हित पर्यायवाची ही है अतएव हिन्दुत्व निष्ठ जनता को इन परिस्थितियों में स्थिति पर गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा।

मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि यदि दिवंगत मनीषी और दयानन्द संस्थान व हिन्दू रक्षा समिति के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षु: हमारे बीच होते तो वे भी निश्चय ही हिन्दू जनता को इस चुनावी चक्रव्यूह में अपने कर्त्तव्य की पूर्ति हेतु हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयता है का उद्घोष करते हुए राष्ट्रहित की दृष्टि से धर्मान्तरण पर रोक, गोहत्या बन्दी और समान नागरिक संहिता एवम् श्री राम जन्मभूमि, कृष्ण जन्मभूमि एवं वाराणसी के विश्वनाथ मंदिर के मूल स्थानों की हिन्दू समाज को वापसी के लिए कानून बनवाने के प्रश्नों को संसद में उठाने का वचन देने वालों को ही चुनाव में विजयी बनाने का आवाहन करते। क्योंकि इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वे पिछले अनेक वर्षों से कार्यरत थे।

चुनाव में मत प्राप्ति के लिए ऐसे आश्वासन व्यक्तिगत रूप से तो अनेक प्रत्याशी दे सकते है, किन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यदि वे उन दलों से जुड़े है कि जो निधर्मी राजनीति के पक्षधर है तो वे संसद में पहुंचकर ऐसे किसी प्रयास में कदापि सहयोगी नहीं हो सकेंगे। क्योंकि दलीय अनुशासन का अंकुश उनके हाथ उस समय बांध देगा।

इन परिस्थितियों में हिन्दू राष्ट्रवाद का सुस्पष्ट उद्घोष करने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजनीतिक पक्ष या ऐसी शक्तियों का हिन्दू मोर्चा और उसके प्रत्याशी ही संसद के बाहर और भीतर इन प्रश्नों को निष्ठा सहित उठा सकते है। अतएव आवश्यकता है उन प्रत्याशियों को समर्थन प्रदान करने की जो समान नागरिक संहिता, अल्पसंख्यकों के सबंध से सुस्पष्ट विचारधारा, राष्ट्र हितैषी अर्थनीति, मजदूर मालिक संघर्ष नहीं अपितु कामगार मालिक समन्वय द्वारा राष्ट्र की प्रगति के रथ को आगे बढ़ाने के पक्षधर है, जो राष्ट्र हितकारी विदेश नीति को अपनाने के प्रति आस्थावाद् है और राष्ट्र के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक राष्ट्र पुत्र को योग्य स्थान प्रदान करने वाली समाजनीति और राष्ट्र विरोधी तत्वों के प्रति मानवता के नाम पर उदारता बरतने के स्थान पर कठोरतम पग उठाने और उठवाने में भी जिन्हें संकोच नहीं है।

राष्ट्र हित साधना के लिए मुझे महात्मा वेदभिक्षु ने जिस पथ पर चलने का निर्देश दिया मैं उसी पर यथाशक्ति चलने का प्रयास कर रही हूँ। महात्मा जी के विचारों से प्रेरित अनेक बधुओं के आग्रह पर लखनऊ संसदीय क्षेत्र से हिन्दू राष्ट्रवादी मोर्चे के प्रत्याशी के रूप में भी चुनाव समर में उतरी हूँ। एक ओर सत्ता पक्ष और तथाकथित विपक्ष के पास साधनों का अम्बार है और मेरे पास साधनों का पूर्ण अभाव। यह टक्कर साधनों और साधना की है।

लखनऊ संसदीय क्षेत्र के मतदाता बन्धुओं से मेरा विशेष रूप से अनुरोध है कि यदि वे हिन्दू राष्ट्रवाद को भारत के सभी सम्प्रदायों, वर्गों और जातियों के अभ्युत्थान और राष्ट्र के कल्याण का मार्ग मानते है, यदि वे सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर रोक के लिए केन्द्रीय कानून बनवाने और मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगेश्वर श्रीकृष्ण की जन्मभूमि एवं काशी विश्वनाथ मंदिर के मूल स्थानों की हिन्दू समाज को वापसी के लिए कानून बनाए जाने और विदेशी धन के बल पर धर्मान्तरण करने वाले तत्त्वों पर कानूनी रोक लगवाने के पक्षधर है तो अपने हर घर को मेरा कार्यालय समझ कर स्वयं ही आस पास के मतदाता बन्धुओं से सम्पर्क कर उन्हें भी अपने साथ कर्मक्षेत्र में जुटाएं।

आपको मेरी ओर से शायद मतदाता पर्ची भी नहीं पहुंच पाये, किन्तु [illegible]ी भी दल की मतदाता सूची से आपको अपना वो नम्बर तो प्राप्त [illegible] हो जाएगा, उसी से मतदाता केन्द्र पर आपका नाम सूची में खोजवाइए [illegible] फिर मतपत्र पर घुड़सवार चिन्ह देखकर मोहर लगाइए। मैं अपना [illegible] निभा रही हूं। आप अपना कर्त्तव्य निभाइए।

जन-ज्ञान (रगि)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरे पास न धनबल है और न ही जनबल। मेरे पास तो हिन्दुत्व की साधना का सम्बल है। जिसके कारण लगभग तीन दर्जन (३४ केस) मुकदमों का उपहार मुझे अपनी 'सरकार ने प्रदान किया है। मैं आपको एक ही आश्वासन दे सकती हूँ कि मेरा जीवन सुजलां सुफलां वरदाम भारत भूमि और हिन्दू राष्ट्र की हित साधना के लिए समर्पित है।

देव दयानन्द, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय और हुतात्मा राम प्रसाद विस्मिल और अश्फाक तथा सरदार भगत सिंह एवं अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा वेदभिक्षु मेरे प्रेरणा स्रोत है, जिनसे मुझे यही सतत् प्रेरणा मिलती रही है कि अपने जीवन का हर क्षण और रक्त का कण कण परम पुनीता भारतभूमि विश्व में सच्ची मानवता की कण-कण भावना के प्रसारक हिन्दू राष्ट्रवाद की अभिवृद्धि के लिए समर्पित कर दूँ।

—राकेशरानी

हिन्दू समाज अपना वोट बैंक बनाये

आज सभी राजनैतिक पार्टियों में अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की होड़ लगी है। उनकी उचित मांगों को पूरा किया जा रहा हैं, जिसका दुष्परिणाम अगले १५ वर्षों में आपको मालूम पड़ेगा जब एक अनुमान के अनुसार हिन्दुओं की आबादी ८५ प्रतिशत से घटकर ४५ प्रतिशत हो जायेगी। यह भयावह स्थिति से बचने के लिए व अपनी सर्वधर्म-समभाव व शांतिमय जीवनधारा को अक्षुण्ण कायम रखने के लिए व अपनी भावी संतान की सुरक्षा के लिए हिन्दू समाज जागेगा और अपने विवेक और बुद्धि का सही उपयोग करेगा। आज जो कार्य सिर्फ ऊंगली उठाकर हो जायेगा, भविष्य में हथियार उठाने से भी पूरा होगा। आज ही समय है की हिन्दू समाज अपने वोट की ताकत पहचाने और अल्पसंख्यकों की तरह अपना वोट बैंक बनाये और अपनी संस्कृति, धर्म व भावी संतान की रक्षा के लिए उसका सदुपयोग करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी

विश्व अशांति क्यों ?

चिरअनन्त भावनाओं के साथ सृष्टि का समस्त प्रकाश शक्तियाँ चाहती हैं। शक्तियाँ दो होती हैं, लौकिक और अलौकिक।

लौकिक प्रकाश के बिना लौकिक शरीर कुछ भी कर सकने में असमर्थ है, और अलौकिक प्रकाश, अर्थात् ज्ञान के बिना अलौकिक शक्तियाँ, मस्तिष्क की, विचार की, सर्वथा निष्प्राण होहोती हैं इसलिए बाह्य प्रकाश की भाँति मस्तिष्क के आभ्यन्तरिक प्रकाश की भी निश्चित आवश्यकता होती है। यह निर्विवाद है।

जब बाह्य प्रकाश की उत्तम व्यवस्था सृष्टि के रचयिता द्वारा आदि में ही की गई, तब यह निःशंसय सिद्ध है कि आन्तरिक प्रकाश, अर्थात् ज्ञान, की (वेदोक्त) व्यवस्था भी सृष्टि के रचयिता द्वारा, मानव मस्तिष्क के पथ-प्रदर्शन व प्रत्येक जीवधारी की कल्याण-कामना के लिए, असंशोधनीय रूप से अवश्य की गई होगी।

लौकिक प्रकाश का आधार (दीवाली के दीपों की तरह) जड़ है। वह दृष्टि योग्य है। अतः प्रत्यक्ष होने के कारण वह सदा सर्वमान्य है। परन्तु ज्ञान का आधार (दिव्य) विचार है, और विचार (अदृष्ट) अनुभव-ज्ञान-शक्ति गम्य है। जिज्ञासु को (वह शक्ति पाने के लिए) अनुभूति-कल्पना-भावना का आश्रय लेना पड़ता है। इसी कारण समय-चक्र के साथ-साथ उन महती भावनाओं में, मानव अपनी स्मृति, कल्पना, सुविधानुकूल संशोधन करता गया, जिससे सत्य-ज्ञान का मौलिक आधार (दिव्य) ज्ञान मनुष्य से दूर होता गया और (अशांतिमूलक) विवाद का विषय बन गया। परिणाम यह हुआ कि अज्ञान फैला और यही अज्ञान विश्व-अशांति का कारण बन गया।

अ... सत्य ज्ञान का आधार त्याग है। त्याग का आधार प्रेम, और प्रेम ...ते का परिणाम शान्ति है। प्राचीन काल में त्याग के बल से दिव्य ...द की अमृत-धारा जन-जन के मानस में प्रवाहित होती रहती थी, ... मुग्ध कण्ठ से वर्णन हम आज भी करते हैं। अतः यह निर्विवाद है

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि पुनः विश्व में सुख-शान्ति और (दिव्य) प्रकाश के लिए आन्तरिक-प्रकाश के ज्ञान की लहरों का जनगण-मन में प्रसार परमावश्यक है।

(आषाढ़ २०३६ के जनज्ञान से उद्धृत)

भारत की जनता स्वयं अपन भाग्य का निर्णय करे

आज भारत की ६० करोड़ जनता को अपना भाग्य बनाना है। देश का भविष्य उसके हाथ में है। वह निर्णय करे कि उसे क्या चाहिए ?

डर और दबाव से नहीं, प्रलोभन से नहीं, अपितु निर्भय हो अपनी आत्मा की आवाज सुनो और आगे बढ़ो। हमने कभी अत्याचार के आगे सिर नहीं झुकाया। पशुता को हमने सदा हेय माना है। अंग्रेजों की गोलियां हमने छाती पर खाई हैं। आज भी भय और आतंक से झुकना भारत की जनता स्वीकार नही करेगी।

भारत का प्रत्येक नागरिक इसका स्वामी है। सब के अधिकार बराबर हैं। प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति जनता के सेवक हैं जो पद पाकर अपने को शासक समझने लगता है उसे जनता कभी स्वीकार नहीं कर सकती।

पद पाकर अभिमान करने वाले व्यक्तियों का अभिमान चूर करने का समय आ गया है। एक बार फिर हम यह सिद्ध कर दें कि हम जनतन्त्र में, समानता में, सब की एकता में और राष्ट्र की सर्वोपरि सत्ता जनता में स्वीकार करते हैं।

नेता जनता के सम्मुख सिर झुकाएं। सभ्य नागरिकों का सम्मान करें। कुनबापरस्ती का जहर मिटाया जाये और देश को मजबूत बनाया जाये।

चुनाव को इसी दृष्टि से देखिये और अपने भाग्य का निर्णय निर्भय होकर कीजिए। आप स्वामी हैं देश के, अपने मन में यह विश्वास रख कर अपनी सेवा के लिए उपयुक्त सेवक का चुनाव कीजिए।

समय बदलता रहता है। पशुबल कभी विजयी नहीं होता और स... कभी हारता नहीं; यह तथ्य है।

आज या कल भारत की विजय होगी। भारत की जनता की वि... होगी। गोली—दमन—पशबल को समाप्त होना ही होगा।

अतः निर्भय बनो, निर्भय होकर अपने भाग्य का निर्माण करो।

—वेदभिक्षुः (शारदे...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरे शहीद ! तुम्हारी याद कैसे मनाऊं ?

तुम्हें श्रद्धांजलि देने के लिए,
मेरे पास शब्द नहीं हैं।
क्योंकि श्रद्धा और आनन्द
दोनों ही मैं खो चुका हूं।
अंधकार का प्रतिनिधि बनकर,
सब कुछ गहरे सागर में डुबा चुका हूं।
तुम्हारी फुलवारी
जिसके लिए तुम्हारा बलिदान हुआ था।
आज मुझे याद नहीं है,
फिर तुम्हारी याद कैसे मनाऊं ?
श्रद्धा के फूल कैसे चढ़ाऊं ?
तुम शहीद थे,
जीवन भर शहीद रहे,
लाल-लाल गौरव की पताका
फहराते, उड़ाते
उषा की लालिमा से पावन
तपः पूत तुम ! और
स्वार्थ के कीचड़ में फंसे,
पद-मोह-गद्दी की भूख में धंसे,
आपस में लड़ने में निष्णात,
हम तुम्हारे गीत गाते हैं।
और जो कुछ भी तुमने कहा था—
उसे झुठलाते हैं।
मेरे शहीद ! प्राण ! बलिदानी !
लाल रक्त की गरिमा के पुंज,
जो खून तुम्हारा गर्म-गर्म
वृद्ध काया से बहा था,
वही रक्त माथे पर लगा,
अगर हम व्रत कर सकें।
तुम्हारी राह पर चलने का
तो सब कुछ बदल सकता है।
बिगड़ा भाग्य बन सकता है।

— भारतेन्द्रनाथ (वेदभिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंडिता राकेश रानी को विजयी बनाये

बन्धुओ, आपने सब राजनैतिक दलों को परखकर देख लिया। मेरा आप से निवेदन है कि आप कम से कम एक बार तो हिन्दू महासभा को मौका दें। वैसे तो मेरा यह निवेदन हिन्दू महासभा के सब उम्मीदवार के लिए हैं, लेकिन विशेष रूप से दयानन्द संस्थान और अखिल भारती हिन्दू रक्षा समिति की संयुक्त अध्यक्ष पंडिता राकेशरानीजी के लिए है, ज अनेक हिन्दू संगठनों के समर्थन से लखनऊ से लोक सभा का चुनाव ल रही हैं।

राकेशरानी जी से आप सभी परिचित हैं। वे हिन्दू समाज को जगाने के लिए बड़ी मात्रा में साहित्य प्रकाशित कर चुकी हैं और उनका य अभियान अबाध गति से चल रहा है। वे सुप्रसिद्ध हिन्दी मासिक जन-ज्ञा का सम्पादिका हैं। उन पर इस्लाम और ईसाइयत का भंडाफोड़ करने 'अपराध' में ३३ मुकदमे चल रहे हैं। इसके बावजूद वे हिमालय की तर अडिग हैं। वे विदुषी हैं। साहसी हैं। हम लोगों के प्रबल आग्रह पर उन्होंने नामांकन पत्र भरना स्वीकार किया। लखनऊ से जितने भी उम्मीदवार खड़े हुए हैं, वे उनमें योग्यतम हैं। अच्छी लेखिका, वक्त्री औ व्यवस्थापिका हैं। उनमें अध्यवसाय का एक नमूना यह है कि महात्मा वेदभिक्षु: जी के महाप्रयाण के बाद वे दयानन्द संस्थान और हिन्दू रक्ष समिति के कार्य को जारी रखे हुए हैं। किसी चुनाव क्षेत्र को ऐसा उम्मीदवा सौभाग्य से ही प्राप्त होता है। उनका समर्थन करके और उन्हें भारी बहुमत से विजयी बनाकर आप हिन्दू समाज की लाज रखें और स्वयं क गौरवान्वित करें। वे देश की सेवा के लिए लोक सभा में जाना चाहती हैं अब तक वे सार्वजनिक सभाओं और पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दू समाज के पक्ष में अपनी आवाज उठाती रही हैं। अब वे अपनी आवाज सत्ता के गलियारों में भी गुंजाना चाहती हैं।

आशा ही नहीं, पूरा विश्वास है कि आप अपने कर्त्तव्य को पहचा और तन-मन-धन से उन्हें सहयोग देंगे, ताकि वे चुनाव के इस धर्म निश्चित रूप से विजयी हों।

(डॉक्टर) गौरीशंकर कोठारी
उपाध्यक्ष, अखिल भारत हिन्दू
सूरतगढ़ (राजस्थान)

पौष संवत् २०४१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लखनऊ संसदीय क्षेत्र से हिन्दू राष्ट्रवादी संगठनों हिन्दू महासभा, भारतीय जनसंघ, हिन्दू रक्षा समिति हिन्दुस्तान हिन्दू मंच व हिन्दू राज्य मोर्चा की संयुक्त प्रत्याशी

पण्डिता राकेशरानी

का

चुनाव घोषणा पत्र

(घुड़सवार
चुनाव चिन्ह)

बहनो और भाइयो !

मुझे राजनीति का शौक नहीं है, न राजनीति मेरे लिए कोई व्यवसाय है। बचपन से ही देश और धर्म की मौन-मूक भाव से सेवा का निष्काम कर्म करती रही हूं और जीवन पर्यन्त करती रहूँगी।

राजनैतिक दलों और राजनेताओं की सिद्धांतहीनता, उनके मति-भ्रम, स्वार्थ, लोभ, लालच से जब देश के अस्तित्व, उसकी अखण्डता और अस्मिता के लिए संकट पैदा हो गया है और भगतसिंह, आजाद, बिस्मिल एवं सावरकर जैसे बलिदानियों के बलिदान से प्राप्त स्वतंत्रता पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं, तो मैं अपनी बात कहने आपके बीच आई हूँ।

मेरी लड़ाई अल्पसंख्यकों की साम्प्रदायिकता को शरण दे रहे और बहुसंख्यकों की उदारता का शोषण कर रहे धर्मनिरपेक्षवाद से है, सरकारीकरण का शिकंजा बढ़ा रहे समाजवाद से है और देश की अखण्डता को चुनौती दे रहे साम्प्रदायवाद से है। मैं हिंदू राष्ट्र के अपने संकल्प को लेकर आपके समक्ष प्रस्तुत हूं। विश्वास है कि आप देश की वर्तमान परिस्थितियों और उनके लिए उत्तरदायी हमारे राजनैतिक दलों की नीतियों को समझ कर इस संकट में सही निर्णय लेंगे।

समान नागरिक संहिता

अ... देश में सभी नागरिकों के लिये एक समान नागरिक संहिता

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लागू करवाना मेरा लक्ष्य है जिसमें किसी भी वर्ग, सम्प्रदाय के लोगों कोई विशेषाधिकार न हों बल्कि हर भारतवासी के एक समान अधिकार कर्तव्य हों।

धर्म परिवर्तन पर रोक

मैं धर्मान्तरण को कानूनन प्रतिबंधित करवाने के लिए संकल्पित हूं भय और प्रलोभन के जरिये जो विदेशी मिशनरी धर्मान्तरण करवा रहे उनकी गतिविधियां भी प्रतिबंधित की जायें, यह मेरा प्रयत्न रहेगा।

देश की विभिन्न संस्थाओं को मिल रहे विदेशी धन पर अंकुश र जाये और यदि कोई देश पैसा फेंक कर धर्मपरिवर्तन, देशद्रोह, सांस्कृ विघटन करवाने का प्रयत्न करे तो उसका दूतावास अविलम्ब बंद कि जाये।

धार्मिक स्थानों की मुक्ति

इस देश में अल्पसंख्यकों के तुष्टिकरण के लिए बहुसंख्यकों का जो शो किया जा रहा है, मैं उसके विरुद्ध संघर्ष करूंगी और हिंदुओं के जो स्थान यथा राम जन्मभूमि काशी का विश्वनाथ मंदिर व मथुरा का मंदिर मुक्त करवाने के लिए खून की अंतिम बूंद तक संघर्ष करूंगी। (इ लिए हमने पूर्व में १५ जनवरी, ८४ को सत्याग्रह प्रारम्भ करने की घोष की थी किन्तु हिंदू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु: के निधन कारण यह कार्य तब तक प्रारम्भ न हो सका। सरकार द्वारा इस आह्व के जन-ज्ञान मासिक पत्रिका में प्रकाशन पर मेरे विरुद्ध करौलबाग थाने मुकदमा कायम किया हुआ है।)

गौहत्या बंदी

मैं देश में गौ-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने के लिए संघर्ष करूं (पहले भी गौ-हत्या विरोधी आंदोलन में सपरिवार जेल यात्रा कर चुकी

संस्कृति व शिक्षा

भारत में हो रहा मूल्यों का विघटन और सांस्कृतिक पतन तुरन्त जाना चाहिये वरना सामाजिक अराजकता और अनैतिकता का सा स्थापित हो सकता है। इसके लिए प्रचार माध्यमों पर विदेशी टी कार्यक्रमों का प्रसारण रोका जाये और भारतीय सांस्कृतिक वैभव का प्रदर्शन किया जाये। टेलीविजन का विदेशीकरण व राज रोका जाये। फिल्म सेंसर बोर्ड को नैतिक मूल्यों में गिरावट रोकने कड़ाई से कार्य करने को कहा जाये, स्कूलों में नैतिक शिक्षा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस प्रकार देश की भावी पीढ़ी को संस्कारविहिन होने से रोका जाये। यह मेरा प्रयत्न रहेगा।

पूरे देश में एक जैसी शिक्षा पद्धति हो और एक ही जैसा पाठ्यक्रम हो जो भारतीयता पर आधारित हो ताकि देश के एक कोने से दूसरे कोने तक युवकों की शिक्षा-दीक्षा में एकरूपता व भारतीयता रहे। शिक्षा में प्रयोगों के नाम पर बच्चों व युवकों के साथ किया जा रहा खिलवाड़ बन्द किया जाये। मैं इसका पूरा प्रयास करूंगी।

युवा वर्ग के संदर्भ में

अगला वर्ष १९८५ युवा वर्ष है। मैं संसद में यह योजना रखूंगी कि युवा वर्ष में वैभवपूर्ण समारोहों पर फजूल खर्ची न करके देश के कम से कम दस प्रतिशत लोकसभा क्षेत्रों में शतप्रतिशत रोजगार दिलाने का लक्ष्य रखा जाये। इस लक्ष्य को स्वरोजगार के लिए ऋण, बड़े कारखाने खोलकर काम के अवसर उपलब्ध करवाकर व छोटे कुटीर उद्योगों का जाल बिछा कर प्राप्त किया जाये। कृषि पर आधारित उद्योगों को प्राथमिकता दी जाये। युवा वर्ष में एक पृथक् युवा मंत्रालय स्थापित किया जाये। खेल, कला व संस्कृति के अलावा युवा समस्या के प्रकोष्ठ इसमें बनाये जायें ताकि देश की नौजवान पीढ़ी को कुण्ठित होने से रोका जा सके।

पंजाब

मैं पंजाब के मुद्दे पर पंजाब हिंदू सुरक्षा समिति के कार्य का समर्थन करती हूं। भाषा व पंथ के नाम पर किसी को भी कोई विशेषाधिकार नहीं होना चाहिये।

देश की सम्प्रभुता संविधान में निहित है। किसी भी पंथ, दल या संगठन को उस सम्प्रभुता को हाथ में नहीं लेने दिया जाये। हम खालिस्तान की मांग के पूर्ण विरोधी हैं केशधारी हिंदूओं से उनकी प्राचीन परम्परा और इतिहास के अनुरूप आचरण करने और सहजधारी हिंदुओं के साथ मिलकर चलने का आग्रह करते हैं। पंजाब के सीमा विवाद व अन्य राजनैतिक विवादों को किसी भी प्रकार की कूटनीति या चालाकी के बिना राजनैतिक तौर पर तत्काल निपटाये जाने के पक्षपाती हैं क्योंकि विवादों को लटकाये रखना जहर को बढ़ाता है।

असम

हम असम के देशभक्त नौजवानों की इस मांग का पूरा समर्थन करते हैं, बंगलादेश और पाकिस्तान के नागरिकों को भारत की मतदाता सूची

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से निकाला जाये। विदेशी नागरिकों की घुसपैठ को मान्यता देने के लिए अपने देश के देशभक्तों को कुचलना अपराध है जो देश की पिछली सरकार ने किया। इसकी पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए मैं जागरूक रहूंगी व आवाज उठाऊंगी।

भाषा

हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है। इस पर कोई विवाद नहीं हो सकता। पूरे देश में इसे ही कामकाज की भाषा बनाया जाये हम उत्तरप्रदेश सरकार के उर्दू विधेयक का विरोध करते हैं तुष्टिकरण और वोट के लिए ऐसे दल प्रपंच तत्काल बंद किये जायें।

कश्मीर

कश्मीर को विशेषाधिकार देने वाला अनुच्छेद ३७० समाप्त हो। वहां के निवासियों और शेष भारत के निवासियों में कोई फर्क नहीं किया जाये। इसके लिये मैं संघर्ष करूंगी।

धर्म या सम्प्रदाय के आधार पर पुलिस व सेना में आरक्षण या भर्ती की मांग का हम पुरजोर विरोध करते हैं। इससे देश की सुरक्षा की नींव कमजोर होगी।

व्यावसायिक संस्थानों के अधिकाधिक राष्ट्रीयकरण की प्रवृत्ति का विरोध करते हुए मैं स्वतन्त्र व्यापार का समर्थन करूंगी। बिक्री कर की प्रणाली समाप्त कर व्यापारियों को कानूनी जाल-जंजाल से मुक्त कर देश के विकास में, व्यापार सें पूर्ण योगदान के लिये प्रोत्साहन किया जाये। इसके लिए मैं अपने पूर्ण प्रभाव का प्रयोग करूंगी।

इसके साथ ही मैं यह वचन देती हूं कि कभी दलबदल नहीं करूंगी, राजनीति में चरित्र व नैतिकता की प्रतिष्ठा के लिए पूर्ण संघर्ष करूंगी और सदैव अपने उपरोक्त लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहूंगी।

सूचना

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल (टीकरी) मेरठ का तेरहवां वार्षिकोत्सव मकर सौर संक्रान्ति के पवित्र पर्व पर १३, १४ जनवरी १९८[illegible] (रविवार तथा सोमवार) गुरुकुल भूमि में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा [illegible] अवसर पर स्थानीय एवं बाहर के संन्यासी, विद्वान् एवं संगीतज्ञ भाग [illegible] ऋग्वेद पारायण महायज्ञ पहली जनवरी से प्रारम्भ होगा।

पौष संवत् २०४१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समय की शिला पर
महात्मा वेदभिक्षुः के आलेख

क्या भारत में विपक्ष है ?

सम्भवतः इस प्रश्न को पढ़ कर आप कहें कि यह कैसा प्रश्न है ? किन्तु हम इस प्रश्न की गहराई में आपको ले जाना चाहते हैं। यह ठीक है कि भारत में अनेक दल हैं। किन्तु क्या इन दलों के मौलिक आधार शासक दल से पृथक् हैं ?

चाहे कोई भी क्यों न हो, सभी सैक्युलर हैं, सभी समाजवादी हैं, सभी अल्पसंख्यकों के चाटुकार हैं। सभी को अपने दल से प्यार है, देश से नहीं।

वर्तमान राजनीतिज्ञ अपने स्वार्थों के लिए राजनीति में हैं। उनके हाथ में समस्त साधन हैं, इसलिए उनकी आवाज है। किन्तु यह स्पष्ट है कि इस सारे टोले में ८५ प्रतिशत व्यक्तियों में देशभक्ति का अभाव है।

भारत माँ अनाथ है। भारत की जनता शोषित है। भारत का गौरव धूमिल है। भारत की एकता खंडित है। भारतीयता जल रही है और सबको चिन्ता गद्दी की है।

गरीब मिट रहा है। जनता भटक रही है। नौकरशाही का साम्राज्य है, या उच्छृखल राजनीति का लहरों का। पद-गरिमा, त्याग, मर्यादा, सब शून्य में सिसक रहे हैं। इसकी विवेचना हम नहीं कर रहे। हमारा पक्ष केवल यह है कि भारत में कोई विपक्ष नहीं है। वस्तुतः देश को रक्षा के लिए एक सबल विपक्ष की आवश्यकता है। ऐसे विपक्ष की जो—

१. सैक्युलरवाद को समाप्त कर धर्म-राज्य का उद्घोष कर सके।
२. समाजवाद के स्थान पर त्यागवाद और जनता को उन्नति की सच्ची स्वतंत्रता दे सके।
३. जो सारे देश के लिए समान नियम, सभी नागरिकों को समान अधिकार दे सके। भेदभाव और तुष्टीकरण की नीति को समाप्त कर सके।
४. महँगाई को रोकने के लिए जो वास्तव में प्रभावपूर्ण पग उठा सके। उद्योगों को उत्पादन के लिए प्रोत्साहन दिया जाए।
५. हड़ताल और तालाबन्दी समाप्त हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

६. अंग्रेजी का प्रयोग २४ घन्टों में समाप्त किया जाए।
७. सभी विधायकों और संसद् सदस्यों को दी जाने वाली सुविधाएँ कम की जायें।
८. सरकारी कर्मचारियों का मँहगाई एलाउंस बन्द किया जाए और सभी को आवश्यक वस्तुएं अल्पमूल्य में दी जाएं।

ये कुछ सुविधाकी बातें लिखी हैं। भाव केवल यह है कि विपक्ष की नीति और शासक दल की नीति में मौलिक अंतर यदि नहीं है तो विपक्ष कैसा ?

अमृत पान करो

अमृत देवता निर्माण करता है। अमृत अमरत्व देता है। अमृत अजेय बनाता है। अमृत आत्मशुद्धि करता है, इसलिए मैं कहता हूँ, अमृत् पान करो। प्रातःकाल उठते ही अमृत का पान। ओह ! कितना आनन्द देता है। कभी पीकर तो देखिए। कभी सोचिए तो सही कि अमृत खोकर आपने क्या खोया है।

अमृत पीजिए, सब सुख लीजिए। यह केवल कथन ही नहीं, शाश्वत सत्य है। प्राण की प्रेरणा का गीत आपने सुना नहीं, जीवन में प्यार का निर्झर कभी देखा नहीं, अन्तर में वीणा की झंकृतियां सुनी नहीं। तो यह केवल इस, कारण कि आपने अमृत नहीं पिया।

क्या है अमृत ?

जीवन का सत्य, ब्रह्माण्ड का दर्शन, दर्शन का लक्ष्य, लक्ष्य का केन्द्र है अमृत। अमृत क्या है, कहाँ है; जीवन की अनुभूति का हर्ष—अमृत उस सत्य का नाम है, जो आप में, आत्मा में, आत्म-ज्ञान में, आत्म-दर्शन में छलकता है। अपने को देखो, सत्य जागृत होगा, असत्य भागेगा और अमृत बरसेगा।

अपने को देखो, सब शुद्ध हो जायेगा। दु:ख, कष्ट, क्लेश, मोह, सब दूर हो जाएंगे। अपने को देखने पर परमात्मा—ईश्वर आपके समीप होगा। प्रभु जो अमृत का भंडार है, आपको अमृत से परिपूर्ण कर देगा।

अमृत पान करो और अमर हो जाओ। जीवन के प्रत्येक पल में ... का बल तुम्हें अजेय पथ का राही बना देगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समय की शिला पर महात्मा वेदभिक्षुः के आलेख

मेरे प्रिय आत्मन् ! जीवन के अनमोल क्षण व्यर्थ में खोकर क्यों चल रहे हो ? एक बार, बस केवल एक बार, अमृत की दो बूंदें घट में डालो। प्रियतम भी मिलेगा और आनन्द भी। तुम साकार स्वर्ग ला सकते हो— अमृत पीकर, अपने को देखकर, प्रभु से मिलकर।

आज से ही प्रयत्न आरम्भ कीजिए। कुछ क्षण तो दीजिए—अमृत पान के लिए।

(जन-ज्ञान श्रावण संवत् २०३७)

□ □ □ □ □ □ □

हिन्दू की रक्षा का प्रश्न

जब हम मानवता की बात करते हैं, विश्व बंधुत्व के गीत गाते हैं। सत्य-न्याय, धर्म-समानता और ऊंचे आदर्शों का बखान करते हैं तब एक प्रश्न उठता है कि इन बातों को कौन कह सकता है ? इनके प्रचार के लिए सहयोग कौन दे सकता है ? केवल हिन्दू।

मुसलमान-ईसाई दोनों तो सिर्फ कुरान-बाइबिल की लकीर पर चलते हैं। उन पर न चलने वालों को अपराधी मानते हैं जब कि हिन्दू के एक घर में अनेक चिन्तन जन्म लेते हैं, रहते हैं।

इसलिए हमारा विश्वास है कि हिन्दुत्व की रक्षा भारत मां की रक्षा है। देश के उदात्त गौरव की, ऊँचे अध्यात्म की, दर्शन परंपरा की रक्षा है। वेद-शास्त्र, गौ-गंगा-गायत्री की रक्षा है। जो भी हिन्दू है वह ९५ प्रतिशत देशभक्त हैं; जो अहिन्दू है वह ९५ प्रतिशत देशद्रोही हैं। इस नग्न सत्य को अनदेखा करने से काम चलने वाला नहीं। दुर्भाग्य यह है कि आज हिन्दू सो रहा है, अपने भाग्य पर रो रहा है या धन बटोर रहा है।

किन्तु वर्तमान काल खण्ड में मैं वेद-शास्त्र, दर्शन-गीता गायत्री का एक छोटा-सा पहरेदार हिन्दू को जगाने के लिए आवाज लगा रहा हूं। भारत मां की स्वतंत्रता को बचाने के लिए जन मानस को उठा रहा हूँ। मेरी [illegible]ावाज भारत के भविष्य की पुकार है। आप उसे सुनें या न सुनें किन्तु अ[illegible] मय आएगा जब हमें पछताना होगा और जागना होगा, न जाने कितने [illegible]र सिर कटाकर। मुरादाबाद जलता है और देश का हिन्दू सोता रहता [illegible] त्रिपुरा में नर संहार होता है और किसी के कानों पर जूं तक नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रेंगती। असम में आग लगे एक वर्ष हो गया, किन्तु शासन विदेशियों को निकालने के लिए तैयार नहीं। इन्दिरा जी कहती हैं कि हमारे देश ने शरणार्थी को सदा अपनाया है; किन्तु प्रधानमंत्री जी! शरणार्थी को अपनाया है—देशद्रोही को नहीं।

नगालैंड गया—सारा पूर्वांचल गया, झारखंड गया, अब हिमाचल की बारी है। विदेशी पादरियों के व्यापक षड्यन्त्रों के विरुद्ध संगठित और सबल आन्दोलन यदि आज न किया गया तो क्रास और ईसा का झंडा और पादरियों का डंडा भारत मां पर वज्र प्रहार करेगा।

इस्लाम का सुसंगठित राष्ट्रव्यापी गृह युद्ध का षड्यन्त्र कुचलने का काम शासन तो कर नहीं सकता, तब कौन करेगा—केवल हिन्दू। भारत हमारा है, वह हमारी मातृभूमि भी है और पुण्य भूमि भी। वह हमारी मां है। हमने अपनी मां के मस्तक पर प्रहार करने वालों को कभी क्षमा नहीं किया, जहां किया वहां अपनी स्वतंत्रता को संकट में डाला। इसलिए आज हिन्दू को पूरे मनोबल के साथ जागना होगा, संघर्ष करना होगा अन्यथा अपना सब कुछ स्वाहा करने के लिए तैयार रहना होगा।

□ □ □ □ □ □

"ईसाइयत और इस्लाम के संगठन पूरे बल से हमें मिटाने की तैयारी कर रहे हैं। हमने युद्ध का बिगुल प्रभु के भरोसे बजाया है। हमने आजतक अपना नीतियां न बदली हैं, न बदलेंगे। हमारी स्पष्ट घोषणा है कि—

"(१) हम भारत मां की स्वतंत्रता नष्ट नहीं होने देंगे। (२) जो भारत की आजादी, एकता और गौरव पर प्रहार करेगा, वह भारत का शत्रु है और उसे भारत से जाना होगा (३) हमारा नारा "वन्दे मातरम्" गाना होगा। (४) हम भारत में एक भी मुस्लिम विश्वविद्यालय नही बनने देंगे। (५) मुसलमान भारत में हमारे बराबर के अधिकार लेकर रह सकते हैं पर यदि वे अल्पसंख्यक होने के नाते विशेष अधिकार चाहेंगे, तो उन्हें नहीं दिए जाएँगे। (६) भारत के सभी नागरिकों के लिए समान विधि-नियम शासन को बनाने होंगे (७) हम तिरंगे झण्डे का अपमान नहीं होने देंगे।"

(जन-ज्ञान ज्येष्ठ सं० २०३९)

□ □ □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समय की शिला पर महात्मा वेदभिक्षु: के आलेख

आज का संघर्ष हिन्दू-मुस्लिम या हिन्दू-ईसाई संघर्ष नहीं, यह देशद्रोहियों और देशभक्तों का संघर्ष है। इस संघर्ष में विजय देशभक्तों की होगी, यह हमारा अटल विश्वास है।

"हम एक निर्णायक युद्ध लड रहे हैं। हमें जीतना ही है। लाखों सिर कटाकर भी हम विजय वरण करेंगे। भारत के कण-कण पर ओ३म् पताका फहराएँगे। यह हमारा दृढ़ विश्वास है।"

□ □ □

"मैं विश्वास रखता हूं कि संकट की इस भीषण घड़ी में, जब हम जीवन-मृत्यु के झूलों में झूल रहे हैं, इस देश की समस्त हिन्दू जनता का आशीर्वाद हमें मिलेगा। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हिन्दुओं की विजय के लिए हम अपने प्राणों की अंतिम सांस तक लड़ते रहेंगे, इस विश्वास के साथ कि विजय हमरी होगी—विजय हिन्दुओं की होगी।"

□ □ □

"आज की संकट की घड़ी में कायरता या गोलमोल भाषा बोलने से काम नही चलेगा। हमें प्यार का उत्तर प्यार से और ईंट का उत्तर पत्थर से देने की नीति पर चलना होगा।"

□ □ □

"देशद्रोही शक्तियाँ जिस तेजी से सिर उठा रही हैं, उन्हें यदि उसी तेजी से न कुचला गया तो हमारा सब कुछ संकट में पड़ जाएगा।"

□ □ □

शुद्धि का मंत्र भारत की समस्याओं का एकमात्र हल है। मुसलमान और ईसाई सभी पहले हिन्दू थे। वे फिर से अपने घर लौट आएँ और विदेशों का मुंह ताकने की जगह भारतमाता की वंदना करें, इससे उत्तम मार्ग कोई और नहीं है।

□ □ □

"हम यह न भूलें कि भारत को इस्लामिस्तान या ईसालैंड बनाने का है [illegible]ही जवाब शुद्धि का शंखनाद ही है।"

"प्रभु हिन्दू जनता को जागृत करेंगे और भारत शीघ्र हिन्दू गणतंत्र [illegible]षित होगा। यह मेरा स्वप्न है, इसकी पूर्ति के लिए आप जो भी कर [illegible]ते हों करें।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समय की शिला पर महात्मा वेदभिक्षु: के आलेख

आज इस्लाम और ईसाइयत को चुनौती देने की आवश्यकता है।

(जन-ज्ञान आषाढ़ सं० २०३६)

☐ ☐ ☐

भारत में एक ज्वालामुखी सुलग रहा है। विदेशी इस्लामी षड्यंत्र और प्रत्येक सम्भव उपाय से भारत को इस्लामिस्तान बनाना चाहते हैं। विदेशी ईसाई शक्तियां सर्वत्र ईसालैंड बनाने में दिन-रात जुटी हैं। रॉकेटों, बमों और भीषण संहारक अस्त्रों के भंडार भारत के अनेक भागों में बने हुए हैं। इस्लामी षडयंत्र हिंसा से, दंगों से, धन से, छल से, भारत की आजादी नष्ट करने पर तुले हैं। हमारी सरकार कुर्सी के लिए मुसलमानों और ईसाइयों की खुशामद करती है।

बहुतेरे मूर्ख आज भी यह कहते हैं कि हम तो करोड़ों वर्षों से चले आ रहे हैं। हमें कौन मिटा सकता है? मेरा प्रश्न है कि जो भाग पाकिस्तान बना, क्या वह हमारी प्राचीन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण केन्द्र नहीं था? क्या पाकिस्तान बनने से पहले किसी ने सोचा था कि पाकिस्तान बन जाएगा? नगालैंड, मिजोरम आदि की जो हालत हो रही है; क्या उसकी सम्भावना थी?

☐ ☐ ☐

कश्मीर जा रहा है, असम दांव पर है। दक्षिण धधक रहा है और सारा देश षडयन्त्रों का केन्द्र बन चुका है। शासन को स्थिति की गंभीरता का ज्ञान न हो, ऐसा सम्भव नहीं। फिर यह मौन क्यों?"

☐ ☐ ☐

कुछ दिन हुए प्रधान मंत्री (इंदिरा गांधी) ने बड़े गर्व से कहा था कि—मैं हिन्दू हूं, मेरा परिवार हिन्दू है। तो क्या वे एक बार फिर इमरजेन्सी लगाकर भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करने का साहस करेंगी?

☐ ☐ ☐

आग लग चुकी है और सभी सो रहे हैं। यदि भारत की रक्षा इष्ट तो प्रत्येक देशभक्त को हिन्दू गणतंत्र की स्थापना का संकल्प लेना होगा।

☐ ☐ ☐

आज आवश्यकता है कि हिन्दू समाज सर्वत्र संगठित होकर मो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पादरियों को शास्त्रार्थ का निमंत्रण दे। यह निमंत्रण प्रेमपूर्वक और दृढ़ता से देना चाहिए। इस्लाम-ईसाइयत और सत्य सनातन वैदिक धर्म के बीच क्या मौलिक अन्तर है, यह भारत की ७० करोड़ जनता को बताने से ही विदेशी षड्यंत्रों पर कुठाराघात हो सकेगा। सत्य को प्रकट न करना भी उतना ही बड़ा अपराध है, जितना असत्य का प्रचार करना। यह बात सभी को भलीभाँति समझ लेनी चाहिए।

□ □ □

इस हमाम में सभी नंगे हैं। पथभ्रष्ट हैं। स्वार्थी हैं। पद के भूखे हैं। उद्देश्य है केवल कुर्सी के लिए आपस में लड़ना।

□ □ □

नेता सभी रोगों की जड़ है और जनता इन नेताओं के ही दिमाग से सोचती है। दयानन्द को कोई नहीं मानता। कोई उनके उपदेशों पर आचरण नहीं करता। इसीलिए स्थिति बिगड़ती जा रही है। काश, आर्यसमाज के सदस्य वर्तमान नेताओं के स्थान पर दयानन्द के अनुयायी बन सकते।

सन् १९८५ का कलेंडर पांच रंगों में

मूल्य डेढ़ रुपया : एक सौ रु. सैकड़ा

एक प्रति मंगाये या दस डाक प्रेषण व्यय ६) रु० लगेगा। १० जन० तक १) रु० प्रति ही मिलेगा।

नये वर्ष की वैदिक डायरी

मूल्य आठ रुपया : ५०० रु. सैकड़ा

३१ दिसम्बर तक मंगाने पर पांच रु. में ही

प्रेषण व्यय पृथक्

आदेश के साथ कम से कम चौथाई अग्रिम धन भेजें व रेलवे स्टेशन लिखें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व० महात्मा वेदभिक्षुः के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक दृष्टि

आर्यसमाज के मिशन को आगे बढ़ाने वालों में महात्मा वेदभिक्षुः (वानप्रस्थपूर्व नाम पंडित भारतेन्द्रनाथ) का नाम उल्लेखनीय है। उनका जन्म १४ मार्च १९२८ को हुआ था। पिता पंडित गयाप्रसाद शुक्ल गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में शिक्षा प्राप्त कर चुके थे और प्रसिद्ध क्रान्तिकारी थे। माता पंडिता विद्यावती शारदा भी सुशिक्षिता और क्रान्तिकारी कार्यों में अग्रणी थीं। भारतेन्द्रजी ने गुरुकुल जेहलम में (जो अब पाकिस्तान में है) शिक्षा प्राप्त की। उन्हें लेख लिखने, कविता करने और पत्रकारिता में बचपन से ही रुचि थी। उन्होंने १६ वर्ष की उम्र में गुरुकुल से हस्तलिखित पत्रिका 'विहान' निकाली। (उससे पूर्व वे सन् १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी सक्रिय भाग ले चुके थे।) गुरुकुल से स्नातक बनकर निकलने पर उन्होंने बरेली से डॉक्टर श्यामस्वरूप सत्यव्रत द्वारा संचालित 'संघ' पत्रिका का सम्पादक पद ग्रहण किया। यह पत्रिका आर्यवीर संघ की मुख पत्रिका थी। आजीविका की समस्या सामने आई तो भारतेन्द्रजी रेल विभाग में २५० रु० के हिन्दी अधिकारी का पद ग्रहण न कर ६० रु० पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक नियुक्त हुए। सभा में उपदेशक के रूप में कार्य करते हुए वे सभा के मुखपत्र 'आर्य' के सह-सम्पादक भी रहे। सन् १९५५ के प्रारम्भ में वे 'आर्य' को छोड़कर उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र 'आर्यमित्र' (लखनऊ) का सम्पादन करने लगे। आपके सम्पादन काल में ही लगभग एक वर्ष तक 'आर्यमित्र' दैनिक रूप में निकला। सन् १९६० में वे पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में आ गये। इंस्पेक्टर आफ स्कूल्स के पद के साथ-साथ उन्होंने 'आर्योदय' के सम्पादक का पद भी सँभाला।

जन-ज्ञान का प्रकाशन

सन् १९६८ में आप सभा से अलग हो गये और आपने महात्मा आनन्द-स्वामी जी के आशीर्वाद से जन-ज्ञान (मासिक) का प्रकाशन प्रारम्भ किया। साथ ही जन-ज्ञान प्रकाशन के नाम से प्रकाशन गृह भी चालू किया। Light of Truth (अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश) और Life and Teachings o[f] Swami Dayanand सदृश बृहत्काय ग्रन्थ केवल ५-५ रुपयों में दिये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अत्यल्प मूल्य में स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र (हिन्दी में) प्रसारित किया। इस पुस्तक के अनेक संस्करण निकले।

दयानन्द संस्थान की स्थापना

जब काम बहुत बढ़ गया, तब उसके समन्वय, सामंजस्य और व्यवस्था के लिए उन्होंने सन् १९७२ में दीपावली के दिन दयानन्द वेद संस्थान (संक्षेप में दयानन्द संस्थान) की स्थापना की। इसके साथ ही चारों वेदों का भाष्य प्रकाशित करने का निश्चय किया। शुरू में आपने केवल ३५ रु० में चारों वेदों का भाष्य उपलब्ध कराया। दो-तीन वर्ष तक जन-ज्ञान का अंग्रेजी संस्करण भी निकाला। आगे चलकर मराठी संस्करण और साप्ताहिक संस्करण भी प्रकाशित हुए। सन् १९७५ में जब आर्यसमाज की शताब्दी मनाई गई, तब दयानन्द संस्थान के प्रकाशनों की धूम मची हुई थी। सत्यार्थ-प्रकाश (हिन्दी) और स्वामीजी का जीवन-चरित्र लाखों की संख्या में प्रसारित किये गये। अब तक चालीस हजार घरों में वेदभाष्य पहुंचाये जा चुके हैं।

जन-ज्ञान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची बहुत लम्बी है। स्वामी अभयदेवजी द्वारा लिखित वैदिक विनय यहां से वेदांजलि नाम से प्रकाशित हुई। वेदों का यथार्थ स्वरूप (स्वामी धर्मानन्द कृत), ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, रामायण (अंग्रेजी), महाभारत, वैदिक गीता (पंडित आर्यमुनि कृत टीका), स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती द्वारा लिखित अनेक पुस्तकें, प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति की पुस्तक 'मेरे पिता' आदि अनेक पुस्तकों के प्रकाशन का श्रेय जन-ज्ञान प्रकाशन को ही है। प्रेमचन्द्र शास्त्री द्वारा लिखित पुस्तक वीर बच्चों की अमर कहानियां यहीं से प्रकाशित हुई। (यह पुस्तक हरयाणा सरकार द्वारा पुरस्कृत हुई है।) डॉ० रामनाथ वेदालंकार, श्री क्षितीश वेदालंकार, श्री दीनानाथ सिद्धान्तालंकार सदृश अनेक आर्य विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें यहां से प्रकाशित हुईं। भारतेन्द्रजी की कुछ स्वलिखित पुस्तकें भी यहां से प्रकाशित हुईं।

प्रकाशन के अतिरिक्त भारतेन्द्रजी आर्यसमाज की अन्य गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेते थे। सन् १९६६ में उन्होंने सपरिवार गोरक्षा ...ाग्रह में भाग लेकर जेल काटी। आर्यसमाज के प्रचार कार्य को नई ... देने के लिए अनेक सम्मेलन आयोजित किये।

...दयानन्द संस्थान का कार्यालय करौलबाग (नई दिल्ली) में हरध्यानसिंह ...ार्ग है। संस्थान द्वारा इब्राहीमपुर गांव (आजादपुर के समीप) में एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शोकांजलि

वेद प्रकाशक वेदभिक्षु: हो गये स्वर्ग के वासी ।
ओ प्रकाश के पुंज तुम्हारी कीर्ति अमर अविनाशी ।।

हुआ कंठ अवरुद्ध गिरा गद्-गद् लेखनी न चलती,
अश्रु बिन्दु दृग् भरे लिखूं क्या श्रद्धांजलि है खलती,
वाणी वीर विराट् विलक्षण प्रतिभा तुमने पायी,
दयानन्द के दिव्य दिवाकर वैदिक ज्योति जगायी,

आर्य जगत् के कर्णधार अब कहाँ विमल आभाषी ।
ओ प्रकाश के पुंज तुम्हारी कीर्ति अमर अविनाशी ।।

प्रहरी निष्ठावान देश के कर्मठता ऋषि भक्ति
हिन्दू रक्षा समिति बनायी सुदृढ़ संगठन शक्ति
वरद पुत्र माँ सरस्वती के थे महान् विज्ञाता,
दिशाबोध आलोक आप से लोकतन्त्र था पाता

आर्य संस्कृति श्रुति मन्त्रों के आराधक प्रत्याशी ।
ओ प्रकाश के पुंज तुम्हारी कीर्ति अमर अविनाशी ।।

आश्रम का भी संचालन होता है।

१४ मार्च सन् १९७९ को भारतेन्द्रजी ने आर्यसमाज के तपोध सन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी से वानप्रस्थ की दीक्षा ली और उसके वाद महात्मा वेदभिक्षु: नाम से पुकारे जाने लगे।

जीवन के अन्तिम वर्षों में महात्मा वेदभिक्षु: ने हिन्दू हितों की रक्षा लिए हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना की। हिन्दू दृष्टिकोण प्रस्तुत करने लिए लाखों की संख्या में पुस्तिकाएं प्रकाशित की गईं। इन्हीं वर्षों History of the Assassins, Inside Congress सदृश पुस्तकें प्रकाशि हुईं। वैदिक सम्पत्ति (पंडित रघुनन्दन शर्मा कृत) दुर्लभ थी। महात्मा जी उसका पुनर्मुद्रण करवाया।

२१ दिसम्बर सन् १९८३ को जिगर की बीमारी से उनका देहान्त गया। उनकी धर्मपत्नी पंडिता राकेशरानी निष्ठावान् आर्य परिवार भी महात्मा जी के मिशन को जारी रख रही हैं।

—सत्यपाल शास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थे हिन्दी के प्रबल समर्थक मृदु ओजस्वी वाणी।
ज्ञान प्रकाशक तम के नाशक दिव्यलोक के प्राणी,
आर्य जनों को शक्ति-भक्ति दो शमा न बुझने पाये,
परवाने जल-जल कर इसकी ज्योति और बढ़ जाये,
है अब आर्य गगन मंडल का अस्त नक्षत्र प्रकाशी।
ओ प्रकाश के पुंज, तुम्हारी कीर्ति अमर अविनाशी॥

□ □ □

डाल दी दुर्दैव ने है काल रूपी गाज।
हा तपस्वी आर्य नेता, चल बसे तुम आज॥
जन्म से भाई न तुम को सुख-सुयश की चाह,
क्षुद्र जन-मन ने न पाई आपकी कुछ थाह,
स्वार्थ की जो साधना में हैं स्वयं लवलीन,
दृष्टि उनकी आपको पाई न किंचित् चीन,
संगठन के सूर्य के तुम बन गये सरताज।
हा तपस्वी कर्मयोगी, चल बसे तुम आज॥
देश की सेवा सदा करते रहे अविराम,
तुम चले थे ओ३म् की पावन पताका थाम,
आप करते थे सदा चिन्तन समय अनुकूल,
थी तुम्हें अपवर्ग से प्रिय मातृभू की धूल,
बन गई वाणी तुम्हारी राष्ट्र की आवाज।
हा यशस्वी आर्य नेता, चल बसे तुम आज॥
रत रहे श्रुति साधना में वेदभिक्षुः महान्,
था तुम्हारे सामने हिन्दुत्व का उत्थान,
तुम रहे गतिशील युवकों के हृदय सम्राट्,
था तुम्हारा दीप्त-सा व्यक्तित्व रूप विराट्,
लेखनी से सरस्वती मां का सजाया साज।
हा तपस्वी कर्मयोगी, चल बसे तुम आज॥
राष्ट्र के प्रहरी अचानक हो गये क्यों मौन,
पथ-प्रदर्शन के लिए उद्बोध देगा कौन;
त्याग-तप अनुपम तुम्हारा गति कलम की मन्द,
लेखनी है शोक में सन्तप्त होकर बन्द,
शब्द श्रद्धा के सुमन अर्पित मनीषी राज।
हा यशस्वी आर्य नेता, चल बसे तुम आज॥

—सत्यव्रत चौहान सिद्धान्तशास्त्री

पौष संवत् २०४६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुण्य स्मरण

मेरे अभिन्न साथी : महात्मा वेदभिक्षु :

—महेन्द्रप्रताप शास्त्री (सासनी)

लगभग पैंतीस वर्ष पुरानी बात हैं जब पहली बार मेरा श्री भारतेन्द्रनाथ से संम्पर्क हुआ था। वे आर्यमित्र के सम्पादक थे और मैं दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक कालिज लखनऊ का प्रिन्सिपल। उनके लेखों, टिप्पणियों आदि को पढ़कर मुझ पर यह प्रभाव पड़ा था कि वे एक मंजे हुए लेखक और कुशल सम्पादक थे। उनमें अपने कार्य के प्रति उत्साह और लगन थी। उन्हें यह बात बहुत खटकती थी कि आर्यसमाज का अपना कोई समाचारपत्र नहीं है, इसलिए उन्होंने साप्ताहिक आर्यमित्र को ही दैनिक करने की योजना बनाई और उसे आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के अधिकारियों के सामने रखा। सभा के अधिकारियों ने उनके उत्साह को देखकर योजना स्वीकार कर ली और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर दे दिया। मुझे इस परीक्षण के लिए आर्यमित्र का अधिष्ठाता नियुक्त किया गया। इससे श्री भारतेन्द्रनाथ जी मेरे और अधिक सम्पर्क में आ गए। योजना अत्यधिक महंगी और अनेक बाधाओं से घिरी हुई थी पर उन्होंने हिम्मत न हारी। आर्यमित्र दैनिक हो गया पर कुछ ही महीने बाद सभा ने अनुभव किया कि वह इतने मंहगे सौदे को निबाह न सकेगी और परीक्षण बंद कर दिया गया, लेकिन इससे श्री भारतेन्द्रनाथ जी उत्साहहीन न हुए। वे अपने अधिक विस्तृत कार्यक्षेत्र के लिए आर्यमित्र को छोड़कर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पत्र आर्य के सम्पादक हो गए। कुछ वर्ष बाद उन्होंने व्यक्तिगत रूप से पुस्तक प्रकाशन की एक बड़ी योजना बनाई। उसी के अन्तर्गत उन्होंने चारों वेदों का बृहदाकार भाष्य प्रकाशित किया। वह भाष्य छपाई आदि की दृष्टि से अत्यन्त आकर्षक है। उसके साथ ही उन्होंने अपने विचारों को जनता तक पहुँचाने के लिए 'जनज्ञान' मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ कर दिया। कुछ दिन बाद वे वानप्रस्थ लेकर वेदभिक्षु: बन गए, जिससे उनकी वेदों के प्रति आस्था प्रकट होती है। उन्होंने अपने प्रकाशन का नाम दयानन्द संस्थान और भवन का नाम वेद मन्दिर रख कर ऋषि दयानन्द और वेदों के प्रति अपनी [illegible] प्रकट की थी।

कुछ दिनों से उनका ध्यान मुख्य रूप से हिन्दू संगठन की ओर गया [illegible] वे अपने विचारों को निर्भीकता और दृढ़ता के साथ प्रकट करते थे। [illegible]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहधर्मिणी पंडिता राकेशरानी जी एक आदर्श नारी की तरह उनके सभी कार्यों में अपना पूरा सहयोग देती रहीं। अपनी आत्मा की पुकार को स्पष्ट रूप से प्रकट करने के कारण उन पर शासन की ओर से ३३ मुकदमें चल रहे हैं। इससे अपने आदर्शों के प्रति उनकी निष्ठा, लगन और साहस का परिचय मिलता है। महर्षि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर हमें अजमेर में उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। बातचीत में हमें एक बार फिर उनके उपरिलिखित गुणों का आभास मिला था और हमें पूरी आशा थी कि श्री भारतेन्द्रनाथ जी अपने कार्यों को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने में सफल होंगे, परन्तु प्रभु को यह स्वीकार न था और अचानक ही उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई। निश्चय ही उनकी मृत्यु से आर्यसमाज और हिन्दू समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। हमें पूरी आशा है कि पंडिता राकेशरानी जी अपने पति के उपयोगी कार्यों को पूरा करने में कसर न छोड़ेगी। □

देश-धर्म की रक्षा के लिए

कम से कम

या

अधिक से अधिक

जो भी संभव हो

प्रति मास अपना

दान अवश्य भेजिए

राकेशरानी

अध्यक्ष दयानन्द संस्थान

१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानव जीवन और गायत्री

मानव क्या है ? क्या केवल कुछ भौतिक पदार्थों का सम्मिश्रण ? भौतिक विज्ञान के पण्डित कहते हैं कि मनुष्य-शरीर लोहे, चूने, अभ्रक, गन्धक, सीसा चर्बी, नमक, खांड, पानी तथा थोड़ी सी चांदी ही का संघात है, और शेष कुछ भी नहीं। यदि मानव इन्हीं पदार्थों का नाम है, तब तो इसका मूल्य इस महंगाई के काल में भी ५-१० रुपये से अधिक नहीं होगा। परन्तु 'महाभारत' के शान्ति-पर्व के १८०।१२ में जो यह कहा गया है कि—

गुह्य ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि। न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्

यह रहस्य-ज्ञान तुम्हें बताता हूं कि मनुष्य से श्रेष्ठ अन्य कुछ नहीं है। तो क्या इतनी श्रेष्ठता अभ्रक, चूने, नमक, गन्धक, चर्बी इत्यादि से आंकी जायेगी ? नहीं, ये पदार्थ तो मानव शरीर से कहीं बहुत अधिक हाथों में है, तब उसे सर्वश्रेष्ठ क्यों नहीं कहा गया? मानव–शरीर को क्यों कहा गया! फिर 'महाभारत' ही में नहीं, उपनिषदों में भी मानव–देह ही को सबसे अच्छा बतलाया गया है। ऐतरेय उपनिषद के ऋषि ने बतलाया है कि देवताओं ने अन्य प्राणियों के शरीर की अपेक्षा मानव–देह ही को पसन्द किया और वे देव मानव शरीर को देखकर प्रसन्नता से उछल पड़े और यह कहते हुए कि यह बहुत अच्छा बना है, यह तो बड़ा प्रिय है, मानव–शरीर में प्रवेश कर गए। और तो और, स्वयं परमात्मा ने अपनी पवित्र वाणी वेद में इस मानव–देह को बहुत दुर्लभ बतलाया है। अथर्ववेद के 'केन–सूक्त' में मनुष्य शरीर के एक–एक अंग की अदभुत रचना पर कैसी सुन्दर कविता की है, और इसके बनाने वाले विलक्षण कारीगर की भूरि–भूरि प्रशंसा की है ! कैसा सुन्दर संगठन है इसका ! जहां जिस पदार्थ की आवश्यकता थी, उसे वहीं रखा है। मुख के कुछ ही ऊपर नाक को, उससे ऊपर नेत्रों को, दायें–बायें की बात जानने के लिए दो कान जैसे कि दो वायरलेस यन्त्र लगा दिये है। उंगलियें तथा बांहों और जंघाओं की संधियां कितनी कारीगरी से बनाई हैं ! प... ऐसी कारीगरी तथा निपुणता तो मानव के अतिरिक्त दूसरे प्राणियों ... पशु पक्षों के निर्माण में भी दिखलाई देती है तब मानव-देह में क्या विशे... है कि इसी के गुण गाए जाते है !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परमात्मा से मिलने का साधन : तन

इसका उत्तर वेद भगवान ही ने दिया हैं—

इयं ते यज्ञिया तनूः -यजुर्वेद

तेरा यह तन (देह) परमात्मा से मिलने का साधन है। मानव-शरीर में यही विशेषता है। शेष सब प्राणियों में आत्मा भी है और परमात्मा भी, परन्तु उनमें इन दोनों का मिलाप होते हुए भी मिलाप नही होता, क्योंकि उन प्राणियों के पास वे साधन नही जो परमात्मा ने अपार कृपा से मनुष्य को दे रखें है।

सबसे पहली बात तो यह है कि सारे देवता मानव—शरीर रुपी पुरी ही में निवास करते हैं। अथर्ववेद में इसे देवपुरी कहा है, यजुर्वेद में इसे ऋषिभूमि बतलाया हैं। सात ऋषि बिना प्रमाद के शरीर की रक्षा करते हैं; और दो ऋषि तो सोते समय भी जागते रहते हैं। यह मानव शरीर ब्रह्मपुरी वेद तथा उपनिषद ने बतलाया हैं। यह मानव शरीर तो एक दैवी नाव हैं; जिस पर हम इसलिए चढ़े बैठे है, ताकि भवसागर से पार होकर परमधाम में जा पहुंचे। हाँ, यह मनुष्य-देह तो एक रथ है, जिस पर सवार होकर यह रथी (आत्मा) बुद्धिरुपी सारथी द्वारा मन को लगाम से संसार-यात्रा को प्रसन्नता से पूरा करता हैं। और ऋग्वेद के शाखायन आरण्यक में मानव-देह को दैवी वीणा कहा है। मानुषी वीणा के स्वर बहुत मधुर, बड़े रसीले तथा चित्ताकर्षक होते है, परन्तु जिसने इस दैवी वीणा का बजाना सीख लिया; वह इसके अन्दर ऐसे दिव्य स्वर झंकृत करता हैं कि मानव तो क्या, देवता भी मुग्ध हो जाते हैं।

वेद प्रचार के लिए

अधिक से अधिक साहित्य बांटिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मृत्यु-वरण

निश्चित है, दारुण है, पीड़ा का मूर्त रूप,
हर्ष की छाया इससे दूर-दूर रहती है।
अन्तरिक्ष के अन्तिम छोर पर इसका अन्त नहीं होता—
स्वप्नों की समाधि इसका उद्गम है।
प्राणों के कंपन में तिरता मोह जाल है,
स्नेह देता या लेता है, किसी को क्या पता,
इतना सभी जानते हैं, विरह का प्रदाता यह
सत्य है जीवन-सा पता नहीं कब किसे बांध ले ?
ओ अदृश्य, तेरी छाया से सभी को डर लगता है,
पर मैंने सदा तेरे स्वागत में पलकें बिछाई हैं।
बहुत गीत गाए हैं तेरी प्रतीक्षा में—
निष्ठुर निशा में तारे गिन डाले हैं।
अन्तर की वेदी पर तेरी पूजा की है बड़े ध्यान से,
तू बिछोह देकर भी, चिर-मिलन दिया करता है।
इसीलिए श्रद्धा से, कण-कण संचित सौरभ मैं,
तेरे आने पर नयनों से ढुलकाता हूं।
ओ प्राण ! तू सत्य का संदेश-वाहक है,
तू सत्य है, केवल सत्य का परिचय तू ही कराता है।
इस धरती पर यदि मनुष्य अपने को पहचाने,
तो समझो यह तेरी छाया का परिणाम है।
नील गगन तक रवि की किरणों से स्वागत तेरा,
तेरा अभिनन्दन ! तू क्रान्ति का सच्चा सिपाही है।
मैं झुकाता हूं तेरे चरणों में अपना माथा,
तेरी बाट देखता तेरा आवाहन कर रहा हूं।

—भारतेन्द्रना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रश्न : गीत

अंधकार की रेखाओं से नया सृजन कैसे प्रिय होगा,
शून्य साधना की मंथर गीत, कैसे मानस को बतलाए ?
कैसे काली रात किसी के मन मंदिर को गीत सुनाए ।
प्राणों में जीवन की वीणा, कांप उठी है नदी किनारें,
स्नेह सुधा का अमृत मंथन, जीवन में कैसे मुस्काए ।
तुम्हीं बता दो, नीरवता में, गीतों का गुंजन क्यों होगा ?
अंधकार की रेखाओं से, नया सृजन कैसे प्रिय होगा ?
नीले नभ के पार, उषा की थिरकन मैंने देखी,
स्वप्न देश में पीड़ा का शृंगार थिरकता भी देखा है,
देखी मैंने ठंडी ज्वाला, सत्य सुधा के अंतर तल में—
गंगा की लहरों पर आशा अनजानी सी मैंने देखी,
शीतल लहरों का अवगुंठन, कौन हटाए, कैसे होगा,
अंधकार की रेखाओं से, नया सृजन कैसे प्रिय होगा ?
पता नहीं जीवन मंजिल का, ज्ञात नहीं है लक्ष्य ललाम,
मरघट कब पहुंचेंगे हंस कर, कौन जानता है यह ज्ञान,
नीरवता में कोलाहल की, ध्वनि कैसे प्रिय लग सकती है,
दीप जलाकर किसने खोजा, प्राण सुधा का मादक गान,
चलते-चलते थक कर बैठे, हिम गिरि पर चढ़ना कब होगा ?
अंधकार की रेखाओं से, नया सृजन कैसे प्रिय होगा ?
कौन सितारों की दुनियां में, अपने स्वप्न सजा बैठा है,
कौन निराशा की लहरों पर, मादक गीत बजा सकता है,
टूटे स्वर पर सब हंसते हैं, ज्योति नहीं देखी है हमने,
अंतर के तारों से कोई, कैसे गीत सुना सकता है,
जब तक ज्योति न जागी मन की, कल्याण कहो प्रिय कैसे होगा ?
अंधकार की रेखाओं से, नया सृजन कैसे प्रिय होगा ?

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरी माँ रो रही है—

अपने क्रंदन से मेरी नींद खोल रही है !
रात के अंधेरे में, गहरी नींद में सोया था,
सब कुछ भूल कर, अपने में मस्त मैं,
जीवन की मीठी, थपकियाँ याद करता,
सपनों की दुनियाँ में खोया था !
लगा, कोई रो रहा है—
क्रन्दन के स्वर मेरे कानों में टकराए,
मैं उठ कर बैठ गया,
और फिर बाहर खोजने निकल पड़ा तो देखा—
माँ रो रही थी !
जी हाँ, मेरी माँ,
जिसने मुझे पाला था, बड़ा किया था।
खाने को अन्न, पीने को जल,
रहने को भूमि, और फल दिए थे।
जिस ने मुझे जन्म देकर दुलारा था,
प्यार की थपकियों से पुचकारा था,
सुख में दुःख में जो मेरे साथ हँसी रोई थी,
वह आज अंतर पीड़ा से त्रस्त थी, भयग्रस्त थी !
उसका रुदन सुन कर मैं कांप गया,
भूल गया सब कुछ, केवल स्मरण रहा,
माँ के आँसू कैसे रुकें,
वह कैसे हँसे ? ताकि मैं भी हँस सकूं !
मेरे तन मन में अब यही एक प्रश्न है,
यही चिन्तन कर ढंग खोज रहा हूँ।
आप से भी पूछता हूँ कि—क्या आपने माँ का रुदन
सुना है ?
क्या करेंगे आप ? कैसे हँसेगी माँ,
उलझन है, कंपन है, काश राह मिल पाती
—और मेरी माँ मुस्कराती ! !

—भारते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन की बात

मरघट में बैठा हूं,
जीवन की आशा में,
उठने को कहता हूं,
किन्तु सब सोए हैं।
लगता है शेष नहीं,
कुछ भी बचा है आज,
प्राणों के कम्पन तक,
भी पड़े खोए हैं।
सपनों की बात करूं,
सत्य सब भूल जाऊं,
कैसे यह सम्भव है,
गीत सब सोए हैं।
पुण्य कहीं लेश भी हो,
शेष यदि धरती पर,
समझूंगा भाग्य तो,
विधाता ने ही बोए हैं।

प्यार की पवित्र कामना,
को भूल गए सभी,
कर्म-धर्म खो दिया,
समय के प्रवाह ने।
लक्ष्य—इष्ट मिट गया,
प्रपंच पंच बन गए,
सुन न सके आर्तनाद,
मानस कराह में।
लगता हैं, तारों ने,
आंसू जो बहाए हैं,
बहते हैं आज वही,
शून्य बन आह में।
उन के जो सपने थे,

ख संवत् २०४१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने जो अपने थे,
आज सभी टूट गए,
स्वार्थ भाव चाह में ।

—भारतेन्द्र नाथ

□ □ □

पत्थर से !

तुम पत्थर हो, केवल पत्थर !
हमने तुम्हारी पूजा की है,
भगवान मानकर, पुष्प अर्घ्य चढ़ाए हैं ।
अपना स्नेह—श्रद्धा अर्पित की है,
पर तुमने, कब किसी की बात सुनी है ?
तुम पत्थर हो,
हृदय हीन, भावना शून्य,
कोई क्या सोचता है, तुम्हें चिन्ता नहीं,
कोई रो रोकर अपनी आंखें फोड़ ले,
सिर पटक-पटक कर मर जाए,
पर तुम मौन-शून्य से,
अपनी जगह स्थिर हो, क्योंकि तुम पत्थर हो !
तुम किसी को मार सकते हो,
ठोकरें लगा सकते हो,
पर किसी को अपनाने की शक्ति,
तुम में नहीं है .
क्योंकि तुम्हारे पास न भाव है न भावना,
न प्यार है न आराधना,
शुष्क शिला खंड !
तुम देखने में भले ही सुन्दर हो,
पर……जब तुम में स्पंदन नहीं,
तो तुम्हें भगवान मान कर पूजने वाले,
सिर धुन कर रोने के सिवाय
और क्या आशा कर सकते हैं ।

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सपनों का महल

जितने भी सपने थे देखे, वर्षों से
जो-जो कल्पनाएँ की थीं ;
जिन्हें सहारा समझा था—जीवन का
अंधड़ आया, उधड़ गया सारा ही ढांचा
सपनों का, महलों का—जीवन का ।

वीराने में एकाकी हम खड़े हुए हैं—
हाथ थके हैं--थकन बहुत है
भटकन मन की—
कोई अपना बोझ नहीं अब उठा सकेगा, बांट सकेगा ।

परंपरा गौरव की थाती
कांप रही है इस कलियुग में—
खून गर्म नहीं, अब बर्फ बना है ।
सत्य बनाते जीवन या स्वार्थ·········
इसका निर्णय कौन करेगा

क्या है ?
मैं—तुम—ये सब उलझे हैं—
सबकी राह अलग—अलग है—
वीणा के स्वर कांप रहे हैं बोझिल से,
शून्य गगन के पार न जाने क्या होगा !

मेरे मन !
धरती की ओर अब मत देख ।
आकाश असीम है,
उसमें उड़ने की तैयारी कर,
रुक मत, बढ़ता जा, चलता जा,
कभी न कभी, कोई तेरा अपना
तेरे कांपते हाथ थामेगा और कहेगा,
मैं आया हूँ ।
लोरियाँ अब बेकार हैं,
सपने फिर से जागेंगे, भूकंप आएगा ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नए रिश्ते, नया गीत गाएंगे,
हमारा दायां हाथ बन, ज्योति की मशाल
अपने सुदृढ़ हाथों में थाम लेगा ।

अभी तो मैं रो रहा हूं ।
समय पर-स्वार्थ पर-लालच पर ।
दुनियां के बदलते रिश्तों की छाया पर ।
रुदन-क्रंदन या चीखता कोई नहीं सुनेगा ।
जानता हूं-फिर भी मन स्वतन्त्र है !

गगन-धरा-वायु सब मुस्कराओ ।
तुम्हें देखकर मैं भी मुस्कराऊंगा ।
तुम लहराती ध्वजा को देख नृत्य करो ।
मैं तुम्हें देखकर ही नए जीवन पा लूंगा ।

□ □ □

पाषाण !

पाप हो या पुण्य—प्यार हो या छाया;
तुम्हारे लिए कोई अंतर नहीं,
क्यों कि तुम्हारे पास अंतर नाम की
कोई वस्तु नहीं ।
प्यार······स्नेह—श्रद्धा की अनुभूतियां
तुम नहीं दे सकते ।
तुम केवल देखने की वस्तु हो
पूजा की नहीं ।
फिर भी पता नहीं क्यों
तुम्हारी पूजा कर मन अंधकार में भटक रहा है ।
सिसक रहा है
काश तुम उत्तर दे सकते ?—

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शहीद के प्रयाण पर

दीप ज्योति जल गयी……
द्वार द्वार सो गया !
स्वप्न टूट कर यहां, सत्य भाव खो गया।
आज प्राण मस्त क्यों, भावना अधीर है,
वे गए कि सब गया, गीत भी चले गए।
कौन सी घड़ी-घड़ी कि सब सहम गया यहां,
पता नहीं कि जिन्दगी, उदास दास हो गयी,
कौन जानता कि मौत लक्ष्य से अधीर था,
कामना की भावना से दूर सब अजीब था,
आज चैन खो गया, शब्द रूठ कर गए,
आँख रो पड़ी मगर, न कोई दर्द गा सका,
एक शून्य बन गया, एक दीप बुझ गया,
एक दीया जल गया, कहीं तो रोशनी हुई,
अंधकार में खड़े हम उदास भाव से,
बूंद आंख से गिरी, हृदय के गीत रो पड़े,
समय के हाथ हैं प्रबल, कौन जानता नहीं,
कौन मानता नहीं।

—भारतेन्द्रनाथ

□ □ □

(पृष्ठ ३ का शेष)

दे प्रभु मुझे अपनी वह किरण, जो मेधा बनकर मेरे मस्तिष्क में प्राण को साकार करे। मैं आत्मदर्शन करूं। तुझ से मिलूं, तुझे देखूं, तुझसे बातें करूं और तेरे प्यार में सब सत्य जान लूं।

स्वाहा करता हूं सब कुछ अपना, तेरी पावन यज्ञ अग्नि में ओ मेरे प्राण ! मुझे अग्नि के धारण की शक्ति दे ताकि पाप, अज्ञान सब कुछ स्वाहा कर मैं तेरा साक्षात्कार कर वह सब पा लूं। जिसे पाने के लिए मैं जन्मों से तरस रहा हूँ

दो मेधा रसधार प्रभो !

—वेदभिक्षुः

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आगामी चुनाव : बुद्धिजीवी अपना कर्त्तव्य पहचानें

—राजेन्द्र दीक्षित

विश्व के सबसे बड़े लोकतान्त्रिक देश में आठवीं लोकसभा का चुनाव भय आशंका और असमंजस के वातावरण में हो रहा है। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या, उसके बाद प्रशासनिक सुरक्षा और गुप्तचर व्यवस्था की असावधानी और अक्षमता के कारण असामाजिक एवं आपराधिक तत्वों द्वारा कुछ मजबूत हाथों के सहयोग से पूरे देश में एक ही समय योजनाबद्ध ढंग से हिंसा, आगजनी और लूटमार के नंगे नाच में किसी भी राजनीतिक दल को आरोपों के घेरे में कैद किये बिना सत्ता की मानसिकता का प्रतिबिम्ब देखना अनिवार्य हो जाता है। लोकतन्त्र में पक्ष-विपक्ष के संयुक्त रूप को सत्ता कहना उपयुक्त होगा और पक्ष के दायित्व से विपक्ष को उत्तर-दायित्व हीन नहीं माना जा सकता। आज के संदर्भ में राष्ट्र की एकता और अखंडता की रक्षा का ढोंग और पाखंड करने वाले राजनीतिक दलों की उपलब्धियों का लेखा जोखा पूरे देश में भयंकर आग की लपटों को हवा दे रहा है। दो प्रतिशत आबादी वाले समुदाय के ग्यारह प्रतिशत लोग सेना में हैं, जिस आधार पर सेना की निष्कलंक निष्ठा को कलंकित किया जाता दिखाई पड़ रहा है। फिर भी स्वार्थ की रोटी सेकनें वाला तत्त्व जातीय, साम्प्रदायिक या वर्गीय संघर्ष को हवा देने से स्वयं को बचाने की कोशिश नहीं कर रहा। अलगाववादी ताकतें देश के अस्तित्व को चुनौती दे रही है जबकि अंधा धृतराष्ट्र केवल दुःशासन की सुरक्षा को सुनिश्चित बनाये रखने के लिए द्रौपदी की मर्यादा भंग के प्रयास को चुनौती देने का साहस नहीं कर रहा।

देश में भयंकर आग की लपटें साफ दिखायी पड़ रही हैं। फिर भी नया जवान भीष्म पितामह चुनावी महाभारत के सेनापतित्व की स्वीकृति के बाद भी समझने में असमर्थ है कि वर्तमान युद्ध के मुद्दे क्या हैं? श्रीमती इन्दिरा गांधी के निधन से उत्पन्न महाशून्य को बिना किसी मारामारी के भर देने को संतुष्टि के गर्व में डूबे लोग शून्य की समाप्ति का दावा करने से स्वयं को बचा रहे हैं। महाशून्य की हड़बड़ाहट में विचलित लोगों को देखना होगा कि विद्रोह ने शून्य का विस्तार कर सत्ता पर प्रश्न चिह्न लगा दि[या] है। भय और आतंक में थोपा गया हर निर्णय असंतोष और विद्रोह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनक होता है, यदि इस मान्यता को स्वीकार किया जाता तो वंशतंत्र के आरोप से शुरू हुआ सवाल कुलीनतंत्र की संभावना में कैद नहीं होता। दून कालेज में पाश्चात्य पद्धति पर शिक्षा पाये नौजवान भारत की पहचान को सुरक्षा कैसे दे सकेंगें, जबकि उन्हें भारत सिर्फ भौगोलिक और राजनीतिक रेखाओं का कैदी के रूप में दिखाया गया हो। साम्राज्यवादी, सामन्तवादी व्यवस्था डाइनिंग हाल में अपने लाभ का मूल्यांकन करती हैं। शायद इसी कारण त्याग-बलिदान की पवित्र थाती राजनीतिक ठगों के जाल में फंसकर लाभ देने वाली पूंजी में बदल गयी है। बहुमत द्वारा चुनी गयी संसद् अब तक ग्यारह प्रतिशत से अधिक की प्रतिनिधि संस्था नहीं बन सकी। मतदाता को शौकिया स्तर पर मताधिकार देने वाला संविधान मतदाता को सत्ता का नियंत्रक बनाने में बुरी तरह असफल रहा है, जिसके परिणामस्वरूप संसद् अपने सुख-सुविधा की सुरक्षा में जनभावनाओं की लाशों को बेचकर लाभ कमाने में लज्जा की अनुभूति नहीं कर पाते। निष्ठा और ईमानदारी का राजनीति से सम्बन्ध समाप्त करने के लिए चुनाव को बहुत महगा कर दिया गया है।

सौन्दर्य का आकर्षण और भोग की भावना आर्थिक और सामाजिक अपराधों को जन्म देती है, तभी रासुका में बन्दी बनाने का ढोंगी नाटक के बीच उन्हें चुनाव लड़ने की खुली छूट देना सत्ता के घिनौने चरित्र और इरादे को साफ कर देता है। एक अनुमान के अनुसार इस चुनाव में शासकीय खर्च के अतिरिक्त राजनीतिक तथा निर्दलीय प्रत्याशियों द्वारा लगभग चालीस अरब रुपया खर्च किया जायेगा। अरबों रुपये कहाँ से प्राप्त किये जायेंगें, इसे बताकर मतदाता को परेशान करने की जिम्मेदारी न लेते हुए कहा जा सकता है कि आगामी संसद् देश को आर्थिक-सामाजिक अपराधों के कठोर पंजे से मुक्त कराने में अशक्त रहेगी। समानान्तर काली अर्थव्यवस्था इस देश का कोढ़ बन गयी है। मिश्रित अर्थव्यवस्था से सुविधा भोगियों की सम्पन्नता बढ़ी, जबकि सुविधाहीन अपने अस्तित्व को संकट में देख रहा है। गरीबी की रेखा के नीचे रहने वालों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। फिर परिभाषा के उलट फेर के द्वारा १९९० तक गरीबी मिटाने के दावे किये जा रहे हैं। सातवीं लोकसभा द्वारा किये गये इस दावे पर आठवीं लोकसभा को प्रमाणिकता की मुहर लगानी है। नियोजन मंत्रालय के दावों और गरीबी की रेखा के मध्य छिड़े सुरसा हनुमान् युद्ध के निपटारें के गंभीर [illegible]यित्व-निर्वाद के लिए जिस संकल्प शक्ति की आवश्यकता है, उस [illegible]श्यकता की पूर्ति में नई लोकसभा सक्षम होगी, इसकी संभावना नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिखायी पड़ती। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षायें कोढ़ में खाज बनती जा रहीं हैं लेकिन देश केवल तमाशाई बना मूक दर्शक है।

महंगाई को विकास का प्रतीक मानकर नागरिक की क्रय-शक्ति के साथ घिनौना मजाक किया जा रहा है। इस देश के मरियल इसानों से शोषण का अधिकार पत्र मांगा जा रहा है। बैलेट पेपर यदि शोषण का अधिकार पत्र नहीं है तो जन-प्रतिनिधि का लबादा ओढ़े महानुभाव जानवरों की तरह बिकते क्यों हैं? ससद् की बाजारी संस्कृति ने स्वतन्त्रता शब्द को मूल्यहीन कर नागरिक को सत्ता प्रतिष्ठान से दूर पटक दिया है। सत्ता के विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया को वंशतन्त्र के शब्दाडम्बर में छिपाया जा रहा है। यदि ऐसा नहीं है तो बताया जाये कि स्वायत्तशासी संस्थाओं पर नौकरशाही को आरोपित करने के अपराधी कौन हैं?

लोकतन्त्र की मान्यताओं से बलात्कार कर राज्यों में सूबेदारी परम्परा का संचालन सत्ता का संकुचन नहीं तो क्या है। देश बदलाव चाहता है—उसकी यह चाहत विद्रोह के नाम से पुकारी जा रही है। इसकी ओट में दमन का जो रास्ता अपनाया जा रहा है, वह अराजकता की मंजिल की ओर जाता है। अराजकता के मुकाबले के लिए यदि नागरिक सड़क पर आ गया तो वह स्थिति कष्टकारी हो सकती है। आठवीं लोकसभा यदि सरकार के माध्यम से सामान्य नागरिक को शिक्षा, औषधि, न्याय आदि दिलाने में सक्षम हो सकी तो आने वाले कल की कष्टकारी स्थिति से बचना संभव होगा।

शिक्षा, औषधि, न्याय आदि के लिए तड़प रहे नागरिक ने क्षेत्रीय दलों को प्रोत्साहित किया। भाषा, जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्रीयता आदि देश के लिए संकट नहीं बन सकते, यदि केन्द्र अपनी औकात की समीक्षा और विश्लेषण कर सके। सत्ता में कुर्सियां बदलना न स्वतन्त्रता है, और न बदलाव बल्कि सत्ता पर नागरिक का नियण्त्रण स्थापित करना इन शब्दों को सार्थक बनाता है। व्यक्ति, समाज और सत्ता में पारस्परिक सहयोग और सतुलन देश को बचा सकता है तो क्या सत्ता किताबी जेल से मुक्त होकर देश को बचाने का साहस करेगी?

राजनीति किसी देश का प्राण नहीं होती बल्कि अतीत के मूल्य, संस्कृति, आदर्श और परम्परा देश जीवन के आवश्यक तत्व होते है। अतीत का भारत राजनीतिक स्तर पर टुकड़ों-टुकड़ों में बंटा था, लेकिन धार्मिक और सांस्कृतिक स्तर पर भारत अपने वृहत्तर रूप में विराट् पुरुष बना प्रकाशपुंज की तरह चमकता रहा, लेकिन आज राजनीतिक एकता के नाम पर देश में बिखराव पैदा किया जा रहा है। देश के एक हिस्से को बेचकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हथियाने वाले घिनौने हाथ आज भी देश को घायल कर रहे हैं। तड़पन को एकता और अखंडता के खिलाफ आवाज के रूप में प्रचारित किया जा रहा है।

हर राजनीतिक दल पारम्परिक तौर पर स्वच्छ प्रशासन देने का वायदा तो करता है, लेकिन प्रशासनिक ढांचे की परिकल्पना बताने का साहस नहीं करता। प्रशासनिक भ्रष्टाचार को यदि सदाचार नहीं माना जा रहा है तो फिर देश की आंख में पड़े शहतीर को तिनका क्यों प्रचारित किया जा रहा है? भ्रष्टाचार विश्वव्यापी हो तो हुआ करे, लेकिन भारत भ्रष्टाचार को आश्रय देने के लिये मजबूर क्यों है?

देश जीवन-मृत्यु की कगार पर खड़ा है, ऐसी स्थिति में यदि बुद्धिजीवी वर्ग अपने दायित्व से किनारा काटेगा तो आने वाली पीढ़ी इस वर्ग को देश का कलंक कहने में संकोच नहीं करेगी। वर्तमान चुनाव बुद्धिजीवियों के लिए खुली चुनौती है। धर्म निरपेक्षता के आडम्बर में अब तक देश को धोखा दिया जा रहा है—समुदायों में कटुता पैदा कर उसे प्रोत्साहित किया जा रहा है तो फिर बुद्धिजीवी सर्वधर्म समभाव की भावना को जगाने की कोशिश क्यों नहीं कर रहा? ब्रिटेन या अमेरिका स्वयं को धर्म-निरपेक्ष मानते हैं, फिर भी अपने देश के मूल्य, आदर्श, प्रतीक और परम्परा की रक्षा के लिए तत्पर हैं। फिर भारत अपने मूल्यों, आदर्शों, परम्पराओं और प्रतीकों की हत्या क्यों करे? भारत कभी धर्मान्ध नहीं रहा। यही कारण था कि अतीत की सत्ता ने थ्योरोक्रेसी यानी मजहबी राज्य को कभी स्वीकार नहीं किया। यूनाइटेड किंगडम या यू० एस० ए० की सत्ता आज भी चर्च को समर्पित हैं। तो क्या धर्म-निरपेक्षता के नाम पर देश में थ्योरीक्रेसी चलायी जाने का प्रयास नहीं हो रहा है? इस सवाल का जवाब बुद्धिजीवियों को देना होगा। किसी भी देश का संविधान कभी भी अन्तिम सत्य नहीं होता। फिर भारत को नया संविधान बनाने से क्यों रोका जा रहा हैं? जिस संविधान ने थोड़े ही समय में देश को भयंकर और भयावह बिखराव की स्थिति में पटक दिया है, उसे क्या बुद्धिजीवी अंतिम सत्य के रूप में स्वीकारता है? तन्त्र की सर्वोच्चता ने लोक को मतदाता में बदलने का अपराध किया है। बुद्धिजीवी इस घिनौने अपराध को लोकतन्त्र कहकर सम्मानित क्यों कर रहा है? क्या वर्तमान के तन्त्रलोक को भविष्य के लोकतन्त्र में बदलने का साहस बुद्धिजीवी करेगा? चुनाव सत्ता का ढोंग और पाखंड न बना रहे, इसके लिए बुद्धिजीवी वर्ग को लोकक्षेत्र में कूदना होगा।

....

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चुनाव : एक परेशान करने वाला सवाल

—शंकर रामचन्द्र

वर्तमान चुनाव में हिन्दुत्व निष्ठ मतदाताओं के समक्ष एक परे उपस्थित करने वाला प्रश्न विद्यमान है। ऐसे कई चुनाव क्षेत्र हैं जिनमें भारतीय जनता पार्टी और हिन्दू राज्य मोर्चा (जिसमें महासभा, विश्व हिन्दू परिषद के प्रमुख नेता ब्रह्मचारी विश्वनाथ जी आर्य समाज के राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय कार्यकर्ता, हिन्दू सेना, जागृति मंच आदि शामिल है) दोनों के ही प्रत्याशी मैदान में है। उन में यह प्रश्न किसी भी हिन्दुत्व निष्ठ मतदाता के मन में अवश्य ही आ कि वह किसका साथ दे। हिन्दुत्व निष्ठ मतों के विभाजन की चर्चा भी लोग करेंगे ही। इस स्थिति मे प्रस्तुत लेख एक सुस्पष्ट मार्गदर्शन सिद्ध सकता है। इसके लेखक है महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध पत्रकार लोकमान्य ब गंगाधर तिलक के प्रखर अनुयायी एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक एवं हिन्दुत्व संगठनों में सक्रिय योगदान देने वाले प्रमुख विचारक एवं पत्रकार तथा के विख्यात मराठी साप्ताहिक 'काल' के सम्पादक श्री शंकर रामचन्द्र दा

दीन दयाल शोध संस्थान के प्रमुख श्री नानाजी देशमुख का दि ८ नवम्बर को एक लेख प्रकाशित हुआ है। वह उन्होंने ६ नवम्बर को लिखा था। तात्पर्य यह है कि यह लेख चुनावों की घोषणा होने से पहले लिखा गया था और उसका चुनावों से कोई सम्बन्ध नही है, यह भी उन्होंने स किया है।

श्री राजीव गांधी प्रधानमंत्री के रूप में ३१ अक्टूबर को पदारूढ़ थे। उस समय भी यह स्पष्ट ही था कि चुनाव होने ही वाले है। श्रीम इन्दिरा गांधी भी अनेक बार यह स्पष्टतः घोषित कर चुकी थी कि चुन समय पर ही होंगे। यों भी वर्तमान लोकसभा की अवधि १९ जनवरी समाप्त हो रही है। ऐसी स्थिति में इस बारे में कोई शंका ही नहीं थी चुनाव जनवरी तक अवश्य ही होंगे।

विरोधी दल भी इस दृष्टि से अपनी तैयारियों में व्यस्त थे, कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नेक लोगों का यह विचार था कि इन्दिरा गांधी की हत्या हो जाने के कारण सारूढ़ पक्ष के समक्ष भी कुछ समय के लिए परेशानी पैदा हो गई है, ऐसा अनेक लोगों का विचार था।

(लोकसभा के एक अधिवेशन से दूसरे अधिवेशन के बीच छह माह से धिक का अन्तर नहीं होना चाहिए, ऐसा भी एक नियम है) अतएव निर्वाचन अधिक से अधिक मार्च माह तक टाले जा सकते है, यह मत भी नेक लोगों ने व्यक्त किया था। तथापि कांग्रेस (इ) ने श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या का लाभ उठाने की इच्छा से पांच जनवरी तक चुनाव कराने की अपनी योजना से भी दस दिवस पहले ही चुनाव कराने की घोषणा करा । यह सब स्थिति श्री नाना देशमुख को विदित नही होंगी यह समझ में ने वाली बात नहीं है। (अतएव नाना जी ने जो पत्रक प्रकाशित किया चुनावों की घोषणा होने से पहले प्रकाशित किया इसलिए पहले उनके चार एक प्रकार के थे और चुनावों की तिथि घोषित हो जाने के बाद कुछ ग प्रकार के होते यह बात किसी के गले उतरने वाली नहीं है।

उन्होंने अभी भी यही कहा है कि वे अपने विचार पर दृढ़ है। लेकिन नाव से उन विचारों का कोई संबंध नहीं। देश हित की दृष्टि से क्या वश्यक है, जो कुछ उन्हें इस दृष्टि से उचित प्रतीत हुआ उन्होंने वही कहा यह स्पष्टीकरण उन्होंने अवश्य ही दिया है।

तथापि वर्तमान परिस्थिति के विरोधी पक्ष के लोगों को इन्दिरा कांग्रेस सहयोग करना चाहिए इसका तात्पर्य उस पार्टी में विलीन हो जाना अथवा उसके विरूद्ध चुनाव नहीं लड़ना चाहिए, यह तो नही। परन्तु भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने उसका ऐसा ही अर्थ लगाने की भूल की है, ऐसा प्रतीत होता है। इसीलिए नानाजी का पत्रक उन्हें स्वीकार्य नहीं है, वह का व्यक्तिगत मत है, उन्होंने राजनीति से सन्यास ले लिया है, इत्यादि रण पेश कर, हम नाना जी की राय से असहमत है, ऐसा प्रचार भारतीय ता पार्टी द्वारा किया जा रहा है। उसके कारण उन्हें परेशानी महसूस हो ही है, यह भी किसी से छिपा नहीं है।

आगामी चुनाव में भारतीय जनता पार्टी यह विरोधी दलों में से एक दल है। सभी विरोधी दलों को मिलकर एक मोर्चा बनाना चाहिए; कांग्रेस (इ) को सत्ता से हटाया जाना चाहिए यह विचार धारा भारतीय पार्टी भी पेश करती रही है। अतएव नाना ली के लेख के फलस्वरूप (इ) के प्रति लोगों में सहानुभूति पैदा हो सकती है व भारतीय जनता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पार्टी को मत देने वाले लोग भी कांग्रेस की ओर झुक सकते है, ऐसा जनता पार्टी के नेताओं को लगने लगा है। उन्हें यह भय भी सता रहा नाना जी के पत्रक का परिणाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता भी हो रहा है।

(संघ के सर संघचालक श्री देवरस ने अपने भाषणों में आगामी में हिन्दू हित को दृष्टिगत रखकर उसका समर्थन व संरक्षण करने वा ही मत दो अन्य को नहीं ऐसा आह्वान् भी किया हैं।)

......भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा हिन्दुत्व को संरक्षण करने वाली है या नहीं, यह शंका भी लोगों के मन में पैदा हुई है। इ में भारतीय जनता पार्टी के नेताओं की ओर से स्पष्टीकरण आवश्यक फिर भी उनकी ओर से तो ऐसा नही किया गया, अलबत्ता राष्ट्रीय सेवक संघ के कार्यवाह श्री रज्जू भैया ने ऐसा किया है और कहा भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा भी हिन्दुत्व के विपरीत नहीं हैं।

भारतीय जनता पार्टी के अनेक कार्यकर्ता संघ के स्वयंसेवक कार्यकर्ताओं की संख्या काफी है, यह भी उन्होंने कहा है और यह संघ व भारतीय जनता पार्टी संगठन की दृष्टि से अलग-अलग है, फि उनके अनेक उद्देश्य समान है, यह बात भी कही गयी है।

परन्तु इस संबंध में भारतीय जनता पार्टी के नेताओं की ओर से करण किया जाना आवश्यक है। १९५२ में जब जनसंघ की स्थापन तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जनसघ परस्पर पूरक थे। जनसं राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ से व्यबहारिक दृष्टि से स्वतंत्र थी किन्तु उसका एक राजकीय शाख का था। हिन्दू सभा से अपना संबंध तोड़ लेने के संघ के समक्ष जो परिस्थिति पैदा हुई थी संघ को अपना समर्थन करे किसी राजनीतिक संगठन की आवश्यकता थी इसलिए उसने राष्ट्रीय सेवक संघ का समर्थन करने वाले जनसंघ के निर्माण में प्रमुख निभायी। १९७७ पर्यन्त सघ और जनसंघ की यही भूमिका थी!

(किन्तु जब जनता पार्टी का संगठन हो गया और उसके हाथ में भी आ गयी तो उस सत्ता में भागीदारी के लिए जनसंघ के लोगों ने में जनसंघ और उसकी हिन्दुत्ववादी विचारधारा को गंगा में विसर्जित गांधीवाद, समाजवाद व निधर्मवाद की अर्थशून्य विचारधारा को कर लिया उसी समय से जनसंघ का पहला स्वरूप भी नहीं रहा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस तरह पहले की जनसंघ तो समाप्त हो गयी। जनसंघ के नेता जनता पार्टी में समाजवादी विचारधारा वाले गुर के अनुभवी बने थे, फिर भी इस विचारधारा पर जनसंघ के नेताओं का विश्वास नहीं है, इस धारणा के साथ समाजवादियों ने यह आवाज उठानी आरम्भ कर दी थी कि हिन्दुत्व-वादी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जनसंघ के लोगों को अपना संबंध तोड़ने की घोषणा करनी चाहिए। इसके बाद जनसंघी बंधु जनता पार्टी से अलग हो गए और उन्होंने भारतीय जनता पार्टी का गठन किया। इसमें पूर्व जनसंघ व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंधित नही रहे ऐसे अनेक लोग भी शामिल हो गए। इसके अलावा भारतीय जनता पार्टी आज भी गांधीवादी और समाज-वादी होने की ही दावेदार है। इसकी विचारधारा में अल्पसंख्यको का अनुनयवाद भी समाविष्ट है। उसमें हिन्दुत्व का संरक्षण करने के विचार का कही भी उल्लेख नहीं है। आजकल अल्पसंख्यक अर्थात् मुसलमानों व ईसाइयों के मत मिलने चाहिए, इस बात के लिए सभी दलों ने उनके अनुनय (तुष्टि-करण) को अपनी नीति बनाया हुआ है, भारतीय जनता पार्टी भी इसका अपवाद नहीं है।

ऐसी स्थिति में हिन्दू समाज पर अल्पसंख्यक समाज के द्वारा जब जब भी प्रहार होता है तो उसके विरुद्ध डटने की नीति भारतीय जनता पार्टी नहीं अपनाती है। ये सभी पक्ष मुस्लिम तुष्टिकरण में ही अपनी प्रतिष्ठा मानते है। इसलिए हिन्दू समाज की उपेक्षा की जाती है। अनेक स्थानों पर हिंदुओं के विरुद्ध हुए आक्रमणों के प्रसंग में भी ऐसा ही अनुभव आया है।

(संभवत: ऐसी स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ चालक श्री देवरस ने मतदाताओं से इस चुनाव के अवसर पर यह आह्वान् किया है कि जो लोग हिन्दू हितों का संरक्षण करने को संकल्पबद्ध नहीं हैं, उन्हें वोट नहीं दिए जाए, ऐसी घोषणा की है।)

भारतीय जनता पार्टी के नेता ऐसी घोषणा करने और इस विचारधारा को मानने को तैयार है क्या, उन्हें यह स्पष्टीकरण करना चाहिए। जब तक ये ऐसा स्पष्टीकरण नहीं दे देते तब तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्य-वाह श्री रज्जू भैया द्वारा उन्हें बिना मांगे ही दिए गए प्रमाणपत्र को कोई भी उसे स्वीकार नहीं करेगा। क्योंकि इससे पहले का अनुभव ऐसा नहीं रहा है। ऐसी स्थिति में भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को यह स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि उनकी भावी विचारधारा इस बारे में क्या रहेगी। गोलमोल शब्दावली का प्रयोग करने से बात बनने वाली नहीं हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय जनता पार्टी के नेता अपने बल पर चुनाव में विजयी हो जा[…] तब भी उनके प्रत्याशियों की संख्या इतनी नहीं है कि वे लोकसभा में बहुम[…] प्राप्त कर सके।

वस्तुतः नाना जी देशमुख ने जो विचार व्यक्त किए हैं, उनसे भारती[…] जनता पार्टी के नेताओं को घबराने की जरूरत नहीं थी, किन्तु वे घबरा[…] हुए हैं, उसका कारण यही प्रतीत होता है कि उन्हें अपनी राजनीति[…] विचारधारा पर आस्था नहीं है और यह भी स्पष्ट लगता है कि उनकी को[…] स्पष्ट राजनीतिक विचारधारा है ही नहीं, यही उनकी दुर्बलता है।

□ □ □ □

मेरा दर्द

हमने यौवन चढ़ाया तेरे द्वार पर,
तू ने समझा नहीं, भाव माना नहीं,
सब कुछ दिया तुझ को हमने मगर,
तुझ से कभी कुछ तो मांगा नहीं।
इच्छा थी केवल तेरी शान का,
चरचा हो दुनियाँ के हर देश में,
तेरी रोशनी से हो रोशन जमीं,
तेरे गीत गूँजें हवा में सदा !
तू मेरे लिए तो सभी कुछ रहा,
मैंने सपना जो देखा वो तेरा ही था,
मेरी तमन्ना तो बस एक थी,
कि झंडा तेरा ही फहरे सदा !
घड़ी आज चलने की है आ गयी,
जिन्दगी का दिया टिमटिमाने लगा,
दर्द केवल है इतना मेरे दिल में अब,
मैं तुझ को शहंशाह बना न सका !

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मारीशस यात्रा वृत्तांत २

एक और भारत देखा, सागर के उस पार

—अनिल लोढ़ा

आर्य सभा में

दोपहर एक बजे आर्य सभा, पोर्ट लुई में ऋषि निर्वाण उत्सव था। वहां हवन के बाद भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के चुने हुए प्रतिनिधियों के स्वागत का कार्यक्रम रखा गया। प्रतिनिधि मण्डल की नेता रामदुलारी सिन्हा सहित लगभग बीस प्रतिनिधियों का वहां अभिनंदन किया गया। आर्य सभा के प्रधान श्री मोहन लाल मोहित ने सबका स्वागत किया। अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। मॉरीशस में आर्यसमाज की गतिविधियों का परिचय दिया गया। यह भी बताया गया कि किस तेजी से वहां वैदिक विचारधारा का प्रचार-प्रसार किया गया। अब वहां छोटे से देश में ४१६ आर्य समाजें हैं। सर्वाधिक सार्थक बात कही स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने। उन्होंने मारीशस के आर्यसमाजियों से कहा कि "आप लोग भारत के गुण ही ग्रहण कीजिए, अवगुण नहीं। मैं देखता हूं कि कल तक जो बड़ा तालाब था वह अब तीर्थराज गंगा सागर हो गया है, भारत की तरह किस्म-किस्म के देवी देवता यहां प्रतिष्ठित हो रहे हैं, जातिगत भेद भाव पनप रहा है। इन संक्रामक रोगों को भारत से यहां मत आने दो। ऋषि दयानंद का सच्चा काम यही होगा।"

यहां से हम कुछ लोगों के घर गये। इनमें से एक हरि जी भारत गये हुए थे। एक मिले नहीं। यहां एक बहिन राधिका मणि जी से भेंट हुई जो आर्य समाज के एक अनाथालय की संचालिका हैं। हम अनाथालय देखने गये। वहां एक लड़की मिली जिसकी समाज का कोई प्रभावशाली व्यक्ति किसी के साथ जबरन शादी करना चाहता था पर वह स्वयं तैयार नहीं हुई। उसे अनाथालय से इस कारण निकाल दिया गया और अब वह अपनी मौसी के साथ रह रही थी। बाद में पता चला कि लड़का बदचलन था तो अनाथालय से निकाले जाने का उसका गम खुशी में बदल गया, क्योंकि उसका जीवन बच गया था। भारत की यह बुराई भी वहां दिखी, सत्ता और शक्ति के स्वेच्छाचारी उपयोग की। पास ही हम मारीशस स्वतंत्रता संग्राम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के विख्यात सेनानी विष्णुदयाल जी के पास गये। वे हिन्दी, अंग्रेजी और फ्रेंच पर समान अधिकार रखते हैं। मारीशस के स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान सर शिव सागर रामगुलाम से किसी भी तरह कम नहीं रहा है। पर आजादी के बाद रामगुलाम राज सत्ता में चले गये और विष्णुदयाल जी लोक सत्ता में चले गये भारत के नेहरू और जयप्रकाश की तरह। उन्होंने मारीशस की वर्तमान स्थिति की काफी सही जानकारी दी। विसंस्कृतिकरण व राजनैतिक विघटन की प्रक्रिया को समझाया। वहां से लौटकर हम भारतीय उच्चायोग गये। वहां शाम सात बजे राष्ट्रपति जी आये। उन्होंने सभी लोगों को दीपावली की बहुत-बहुत मुबारकबाद दी। फिर भारतीय उच्चायोग की ओर से शानदार पार्टी दी गई। हमने सागर के उस पार भी घर जैसी दीवाली मनाई।

यहां से मुक्त होकर हम बाजार घूमने गये। इक्का-दुक्का घरों को छोड़ सभी के यहां रोशनी थी, दिये थे, सजावट थी, भारत की ही तरह। हम कतर बोन गये दीपावली मेला देखने। इससे पहले मारीशस की वर्तमान राजनीति के सूत्रधार भू० पू० उपप्रधानमंत्री हरीश बुधु के गांव बेलतेर में दीपावली समारोह का निमंत्रण था पर समयाभाव के कारण वहां न जा सके। राष्ट्रपति जी वहां गये और लौटकर कतरबोन के दीवाली महोत्सव में आये। वहां कारें ही कारें थी कोई दो कि०मि० तक पार्किंग की जगह नहीं थी। हम लौट आये और हमने टी० वी० पर ही इस महोत्सव का सीधा प्रसारण देखा। राष्ट्रपति का भाषण सुना। प्रधानमंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ भी वहां थे। भारत से दूर प्रवासी भारतीयों के बीच अपने देश की परम्परा को जीवित देख राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी बेहद प्रसन्न नजर आ रहे थे। रात साढे ग्यारह बजे हम सो गये।

परिस्थितियों का अध्ययन

२५ अक्टूबर को कोई विशेष कार्यक्रम नहीं था। उस दिन पं० रामसहाय जी को घर जाना था ताकि वे शेष ३ दिन के काम किसी और के हवाले कर आयें और मेरे साथ रह सकें। सुरेश जी को भी स्कूल जाना था सो उनकी पत्नी सुधा जी मेरे साथ महात्मा गांधी संस्थान गईं, मैंने बहुत मना किया पर वे नहीं मानीं, 'भाई जी, आप परदेशी हैं, आपको अकेले नहीं जाने देंगे।'

इससे पहले भू० पू० सांसद मेवा सिंह जी आये और अपने घर ले गये, राजनैतिक चर्चा करने। अब तक मेरा भी काफी अध्ययन हो चुका था। सो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अच्छी खासी चर्चा उनसे हुई। महात्मा गांधी संस्थान में श्री रामदेव धुरन्धर से मारीशस में हिन्दी की स्थिति पर बातचीत हुई। पता चला कि हिन्दी दैनिक के अभाव में मारीशस में हिन्दी और हिन्दू दोनों ही संकट में पड़ते जा रहे हैं। यहां पता चला कि शाम साढ़े पांच बजे सत्तारूढ़ दल के मुख्य सचेतक व भू० पू० उपप्रधानमंत्री हरीश बुधु के घर भारत–मारीशस सम्बन्धों पर एक गोष्ठी है। सुरेश रामदीन जी मुझे वहां छोड़ आये। गोष्ठी में सारी स्थितियों की खुलकर चर्चा हुई। वहीं सबने खाना खाया। दिनभर दिमागी कसरत ज्यादा हुई थी। आज थकान महसूस हुई और हम घर जाकर सो गये।

२६ अक्टूबर को सुबह बड़ी जल्दी घर से निकलना पड़ा। हरीश बुधु ने भारत से आये संवाददाताओं का पोर्ट लुई में एक सम्मेलन बुलाया था। इस की विशेषता यह रही कि हरीश बुधु ने जो कुछ कहा सब 'ऑफ दि रिकार्ड' कहा। उनकी ओर से, उनके नाम से कुछ न छापा जाये, राजनैतिक कारण थे पर पत्रकारों के ज्ञान में वृद्धि अवश्य कर दी गई।

जन-जन से सम्पर्क

दोपहर १२ बजे से हम कार लेकर पं० रामसहाजी के कार्य क्षेत्र फ्लाक जिले का भ्रमण करने निकले। समुद्र के किनारे-किनारे घूमते हुए हम फ्लाक में हिन्दी अध्यापक गणेश संसाराम से मिले, पं० जगमोहन जाधी, श्रीमती धनवन्ती रामचरन, विभुत आचार्य आदि से मिले। सभी में वैदिक साहित्य के प्रति, जिज्ञासा व सीखने की ललक देखी। कुछ ने तो मेरे पास मौजूद वैदिक सम्पत्ति, वेद भाष्य आदि ग्रन्थों को तुरन्त देने का आग्रह किया पर मैं विक्रेता न था; संस्थान का प्रतिनिधि था जिसे अपनी गतिविधियों की जानकारी जन-जन तक पहुंचाकर विशाल आर्य समुदाय को, समूचे हिन्दू जगत् को संस्थान से जोड़ना था। फिर भी लौटते समय सभी पुस्तकें पं० रामसहाजी को देकर जाने का वादा किया। वहां से हम लाल माटी आये जहां पं० रामसहा राजमन से भेंट हुई। वे सुरेश रामदीन के बहनोई थे। वैदिक साहित्य के विद्वान्, जिज्ञासु और जानकार श्री राजमन से काफी धार्मिक व साहित्यिक चर्चा हुई। उन्होंने मुझे बताया कि एक वेदभूषण नामक आर्य विद्वान इन दिनों भारत से मारीशस आये हुए हैं—वेद पाठ की शिक्षा देंगे। वे महर्षि दयानन्द द्वारा बताई पद्धति से हवन आदि करने का दावा करते हैं और उन्होंने गायत्री मंत्र से भूर्भुवः स्वः को निकाल दिया है, कई मंत्रों की मनमानी व्याख्या कर रहे हैं। इससे वे काफी दुःखी थे और कह रहे थे कि भारत से आने वाले लोग यहां पूजे जाते हैं। कई लोग इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्थिति का दुरुपयोग कर यहां के लोगों को मूर्ख बनाने और छलने लग जा हैं। बड़े प्यार से भोजन करवा कर उन्होंने हमें विदा किया। देर रात हो घर पहुंचे।

अगले दिन २७ अक्टूबर को महात्मा गांधी संस्थान में चल रही अन्त रांष्ट्रीय गोष्ठी का समापन था। गोष्ठी प्रवासी भारतीयों के इतिहास, उनकी भाषा व सांस्कृतिक परम्परा, उनमें परिवर्तन आदि पर हुई और इसमें भारत व मारीशस के अलावा दक्षिण अफ्रीका, फिजी, सुरीनाम आदि उन सभी देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जहां-जहाँ प्रवासी भारतीय थे। यह विशुद्ध अकैडमिक गोष्ठी रही।

गोष्ठी के समापन के अवसर पर मारीशस के गवर्नर जनरल सर शिवसागर राम गुलाम ने 'वसंत' के आप्रवासी विशेषांक का विमोचन किया। वापस लौटते हुए क्यूपिप में खरीदारी की।

महात्मा गांधी संस्थान में एक कवि सम्मेलन हुआ। दोपहर दो बजे भारत मारीशस संयुक्त कवि सम्मेलन। डा० कुंवर बेचैन ने मारीशस पर बनाया ताजा गीत सुनाया। डा० रमा सिंह, कृष्ण मित्र जी व कुछ अन्य भारतीयों ने कवितायें सुनाईं। मुझे भी कविता सुनाने का अवसर मिला। मारीशस के ३-४ कवियों-शायरों ने कवितायें, गजलें सुनाईं। श्रोता बहुत ही पारखी थे और अच्छी कविता को पहचान कर दाद देते रहे।

लौटकर वाकवा आर्य समाज के मंत्री श्री गोवर्धन जी के घर गये। वे भी पूरे जानकार लगे। अध्ययन की दृष्टि से पूर्णतः परिपक्व। उन्होंने अगले दिन समाज के साप्ताहिक सत्संग में बुलाया। इसके बाद हम नैतिक शिक्षा सभा के मंत्री सत्यप्रकाश बिगु के घर यूनियब पार्क गये। वे एक विवाह में गये थे। हम वहां पहुंच गये। भारतीय तौर तरीके से विवाह हो रहा था। दहेज का प्रचलन वहां नहीं था पर इधर कुछ दिनों से थोड़े बहुत लोग लेन देन की भाषा में बात करने लग गये हैं। बिगु ने मारीशस में वैदिक साहित्य के अभाव को देखते हुए दयानन्द संस्थान से काफी मात्रा में साहित्य भिजवाने को कहा। वे 'जनज्ञान' के प्रसार में जुटने को कृत संकल्प थे। इधर पं० रामसहाय व श्री सुरेश रामदीन जी भी दयानन्द संस्थान की गतिविधियों से जुड़कर ज्ञान का प्रकाश मारीशस में फैलाने का संकल्प करने लगे। उनका उत्साह प्रशंसनीय और अनुकरणीय था। लौटकर हम मारीशस के प्रधान-मन्त्री डा० अनिरुद्ध जगन्नाथ के घर गये जो वाकवा में सुरेश रामदीन जी के घर से चार-पांच मकान आगे था। डा० जगन्नाथ घर पर नहीं थे। हम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिलने की इच्छा व पत्र छोड़कर आ गये ।

अब भारत लौटने की घड़ी निकट आ रही थी । हमें २६ अक्टूबर की रात ६ बजे अपने देश के लिए उड़ जाना था । मेरे सभी साथी अब तक अधिकांश मारीशस घूम चुके थे । वे निरन्तर वहां की प्राकृतिक सुषमा की प्रशंसा कर रहे थे, कह रहे थे—स्वर्ग है स्वर्ग । मैं अब तक कहीं घूम नहीं पाया था, काम में ही व्यस्त रहा था । मुझे दिल्ली के दैनिक 'जनसत्ता' की ओर से भी इस समारोह को कवर करने का दायित्व सौंपा गया था । मारीशस की राजनीति पर कुछ लेख भी लिखने थे, सो स्थितियों के अध्ययन, जनसम्पर्क, दयानन्द संस्थान के कार्य तथा समारोहों में ही सारा समय निकल गया था । यहां तक कि २७ अक्टूबर को गवर्नर-जनरल के घर गार्डन पार्टी में भी नहीं जा पाया था, इसलिए मेरे मेजबानों ने आग्रहपूर्वक २८ अक्टूबर का दिन सिर्फ घूमने के लिए रखा ।

२८ अक्टूबर की सुबह वाकवा आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में गया । हवन के बाद मुझे बोलने को कहा गया । मैंने दयानन्द संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी, भारत की स्थितियों का खुलासा किया । इसके बाद दस बजे पोर्ट लुई में सनातन धर्म सभा मन्दिर फैडरेशन की ओर से आयोजित स्वागत समारोह में गया । वहां हिन्दुत्व पर संकट तथा भारतीय संस्कृति पर क्रियोल आक्रमण की खुलकर चर्चा हुई तथा भारत से अधिकाधिक साहित्य व सहयोग देने को कहा गया ।

हमारी दल नेत्री श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने शेर पढ डाला—'सितारों से आगे जहां और भी हैं, अभी इश्क के इम्तहां और भी हैं । और उम्मीद की कि भारतीय मारीशस के साथ इश्क के हर इम्तहां में सफल होंगे । वहां टेम्पल फैडरेशन को मारीशस के ८० मन्दिरों के लिये ८०० कैसेट भेंट किये गये जिनमें आरती व भजन आदि टेप थे । टेम्पल फैडरेशन से लौटकर गाड़ी में खाना रखा और सुरेश रामदीन उनकी पत्नी व बच्चों के साथ पं० रामसहा जी और मैं मारीशस की नैसर्गिक सुषमा देखने निकल पड़े ।

प्राकृतिक वैभव के दर्शन

सबसे पहले हमने देखा तमारिन फाल्स । मारीशस का सबसे बड़ा झरना जहां से मारीशस की आधी से अधिक बिजली की आवश्यकता पूरी होती है । इस झरने का फ्रांसीसी नाम है सितकसकद यानि सात सीढ़ियों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाला झरना। यहां हजारों फुट ऊपर से पानी नीचे गिरता है, सात सीढ़ियां तय करके और सामने समुद्र दिखता है जिसमें विलीन हो जाती है झरने से निकली सरिता। झरने के दोनों ओर की ऊंची पहाड़ियां हरी-भरी थीं। ऊपर गन्ने के खेत थे।

यहां से आगे चल कर मारखो वाकवा तालाब पहुंचे। यह मारीशस का सबसे बड़ा बांध है तथा पीने के पानी की अधिकांश आपूर्ति यहां से होती है। इसके सामने हरा-भरा घना जंगल है, ऊंचे-ऊंचे पेड़ हैं, फूलों वाले, फलों वाले। पूरा मार्ग हराभरा है। कहीं सूखा देखने को नहीं आया।

मारीशस में यह समय गरमी की शुरुआत का था, पर इस समय भी आकाश पर बादल थे, कभी-कभी बूंदा-बादी हो जाती थी। इस सुहावने मौसम में हम पहुंचे ग्रां बासां यानी बड़ा तालाब जिसे अब यहां गंगा तालाब कहा जाता है।

कुछ वर्ष पूर्व तक यह एक रमणीक स्थल था पर अब यह तीर्थ स्थल हो गया है। इस तालाब के किनारे-किनारे राम, कृष्ण, शिव-पार्वती, गायत्री के मंदिर बना दिये गये हैं और लोगों ने पूजा प्रारम्भ कर दी है। शिवरात्रि को मेला भरने लगा, लोग जल चढ़ाने लगे। यहां ऊपर पहाड़ी पर हनुमान् मन्दिर बन गया, दो बड़े सभागार बन गये और देखते ही देखते यह एक धार्मिक आस्था का केन्द्र हो गया।

वहां से आगे हमने ब्लैक रिवर गोज की अंधी घाटी देखी, तत्पश्चात् हम समर हिल गये। वहां पहाड़ी के ऊपर मिट्टी के कुछ टीले थे जिनमें सात अलग-अलग रंगों की मिट्टी। बिलकुल इन्द्रधनुषी धरती। लाल, पीली, हरी, काली, भूरी धारियां पड़ी थीं इन टीलों पर। लगा कि सृष्टा ने इन्द्रधनुष को सृष्टि आकाश के आंचल में ही नहीं धरती की गोद में भी ला कर डाली है।

इसके आगे हम दक्षिण पश्चिम सागर के किनारे-किनारे की सड़क पर घूमते हुए लौटे। मारीशस की सबसे बड़ी विशेषता वहां का यही समुद्र है जो किनारे की मूंगे की चट्टानों के कारण किनारे-किनारे हरा होता है, जहां से ये चट्टानें शुरू होती हैं, वहां सागर की लहरें इन चट्टानों को छलांग लगा कर पार करती हैं और सफेद झाग से एक रेखा पूरे द्वीप के चारों ओर बना देती हैं, जैसे ये द्वीप का प्रभामण्डल बना रही हो। इस रेखा के भीतर पानी उजला हरा होता है और बाहर गहरा नीला। यहीं मैं सागर में पैर डाले बैठा रहा। कोई लहर भारत के तट से चली हो और मारीशस में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं उसे छू लूं।

घूमघाम कर लौटे और शाम को ५ बजे वाकवा नगर पालिका भवन में आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण समारोह में गया। मारीशस के गवर्नर-जनरल शिवसागर रामगुलाम और प्रधानमंत्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ वहां आये थे। यह एक विराट् समारोह था।

वहीं मेरी मुलाकात मारीशस की विरोधी पार्टी मारीशस मिलिटेंट मूवमेंट के नेता पॉल वेरांजे से हुई जिन्हें वहां भारतीय सभ्यता व संस्कृति का शत्रु माना जाता है। यहीं पर वे सभी आर्य समाजी फिर मिले जिनसे पूरे सप्ताह भर मैं मिला था।

रात में हमारा खाना 'जनज्ञान' के लेखक परिवार के सदस्य राजमन राधाकृष्ण के यहां था। उनके यहां मानसिक खुराक भी मिली और शारीरिक भी। उन्होंने मारीशस के सम्बन्ध में कुछ किताबें भी पढ़ने को दीं।

विदाई की बेला

अगले दिन मुझे स्वदेश लौटना था। एक सप्ताह के आत्मीय और सुखद सान्निध्य के बाद अपने इस नये परिवार से बिछुड़ने की कल्पना ही टीस पैदा कर रही थी। बड़े सवेरे उठकर हमने हवन किया। सभी परिवार जनों ने पुष्प वर्षा कर मुझे विदाई दी। आशीर्वाद और शुभकामनायें भी।

दिन भर बाजार में खरीददारी करते रहे। दोपहर एक बजे पोर्ट लुई में हमारे प्रतिनिधिमण्डल ने प्रधानमंत्री के कार्यालय में उनसे भेंट की और भारत से लाये उपहार दिये। मैंने भी संस्थान की ओर से एक बड़ा १५ × १० साइज का सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया।

घर लौटकर सामान बांधा और गाड़ी में रखा। पूरा परिवार चल पड़ा मुझे विदाई देने। सभी के मन भारी थे। हवाई अड्डे पर पहुंचते-पहुंचते रामदीन जी की पत्नी सुधा जी रो पड़ीं। बच्चे कह रहे थे—घर सूना लगेगा। और मैं सोच रहा था कि किसी जन्म का कोई सम्बन्ध रहा होगा जो इतने घनिष्ठ हो गये।

हमारे प्रतिनिधिमण्डल के हर सदस्य को उसके मेजबान छोड़ने आये थे। सभी साथी बता रहे थे—भारत से भी एक कदम आगे थी यहां की अतिथि सत्कार की परम्परा! सभी की आंखों में आंसू थे, मस्तिष्क में स्मृति शेष थी उस स्नेह-सिक्त सम्मान की, सद्भाव की। लगा मारीशस भारत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का छोटा भाई है। हम बड़े भाई की संतान हैं और वे छोटे भाई की।

किसी कारण से मैं विमान पर चढ़ने वाला अंतिम व्यक्ति था और मैंने पलट कर देखा हवाई अड्डे की छत पर खड़ा मेरा मेजबान परिवार विदाई देने वाला अन्तिम परिवार था। मैंने हाथ हिलाया, एक साथ पांच व्यक्तियों के हाथ हिले। मैं जहाज के अन्दर प्रवेश कर गया, स्नेह से भीगा मन—अश्रु से भीगे नयन लिये। ठीक नौ बजकर बीस मिनट पर जहाज उड़ा और हम लौट आये छोटे भारत से बड़े भारत को।

मुक्ति-यज्ञ पर

आओ नय्यर ! फिर एक बार

—राजेन्द्र चान्द्रायण

शुभ राम-जानकी-रथ निकला, भारत के कोने-कोने में।
सांस्कृतिक चेतना है दिलखी, जर्जर से दुर्गिल 'दोने' में॥
यह मुक्ति-यज्ञ-वाहिनी कहे, जन-जागृति लवलिम लाएगी।
मस्जिद के अन्दर कैद राम-शिव-माधव मुक्त कराएगी॥
त्रेता युग का वह 'रामकोट', जिसके विशाल थे सिंह द्वार।
मस्जिद बाबर की कहलाए, यह महा अनर्गल धुंआधार॥
स्थापत्य कला इसकी परखो, इसमें उत्कीर्णित शुभ्र शंख।
हर द्वार-भित्ति-शहतीरों पर, हिन्दू संस्कृति विलसित अभ्रंश॥
वह जन्मभूमि रघुनंदन की, जिस पर खेले आनंद कंद।
थे खोजक लोमश मुनि जिसके, वह झेल रही छलनात्म द्वन्द्व॥
जिस थल पर राघव थे जन्मे, जिसका यश श्रुतियों ने गाया।
कुश विक्रमादित्य ने जिस पर, था अभिनव मन्दिर बनवाया॥
कहला सकती वह क्योंकर, बोलो ! बर्बर बाबर की ईदगाह ?
नकली तर्कों की ओटों में, क्यों कुदक रहे वे खामखाह ?
थी जहाँ सीय की पाकथली क्या वह मस्जिद है हो सकती ?
सारे जन की संयत प्रज्ञा, इन प्रश्नों का उत्तर चाहती॥
हम लड़े छिहत्तर बार और लाखों भक्तों ने प्राण गँवाया।
पर बात जहाँ-की-तहाँ रही, तो अब पुनः गुहार लगाया॥
अब स्वतंत्र निज देश, हाय ! कोशलाधीश क्यों कैद पड़े ?
है कैसा यह निरपेक्ष राज्य, शासक क्यों आंखें मूद खड़े ?
जो बातें अयाँ हैं बिल्कुल, वे किसकी माँगें न्याय-शरण।
लम्बित वादों की दलदल में, हैं फंसे पड़े सियाराम चरण॥
सांस्कृतिक अस्मिता सिसक रही, ओ ! जगो 'रणंजय' एकबार
गुरु 'गोविंद सिंह' जल्दी धावो आओ 'नय्यर' फिर एक बार॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्भवामि युगे-युगे !

—डॉ० सुधांशु मोहन अग्निहोत्री

द्वापर में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने न्याय और धर्म की विजय हेतु जीवन अर्पित किया था। बाल्यावस्था में उन्होंने वंशी बजाकर जन-साधारण को आकर्षित किया जिससे वे सब कुकृत्यों, कुसंगतियों से बचे रहें। कृष्ण के पूर्व त्रेता युग में श्रीराम ने आततायियों, दुराचारियों को युद्ध में परास्त किया था।

राम और कृष्ण मनुष्य ही थे किन्तु अन्याय के विरुद्ध लड़ने की सामर्थ्य से युक्त थे। जो भी व्यक्ति अन्याय, अनीति और अमानवीयता के विरुद्ध लड़ा, वही ईश्वर का अवतार कहलाने योग्य है। सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, राष्ट्रपिता गांधी, चन्द्रशेखर आजाद और उनके सहयोगी सभी ईश्वर के ही अवतार थे। महान् कार्य करने वाला व्यक्ति ही ऐश्वर्यशाली होता है।

आज, भ्रष्ट, अनैतिक, व्यभिचारी, शोषक और आतंकवादी—सभी मानव जाति के शत्रु हैं, जिन्हें परास्त करने हेतु शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक रूप से स्वस्थ, सशक्त, दृढ़व्रती नर-रत्नों की आवश्यकता है। कायर, लोभी और चाटुकार जन कभी न स्वयं सुख-शांति पा सकते हैं और न ही दूसरों को सुखी कर सकते हैं।

समय कभी बुरा नहीं होता। दुष्टजन सदैव रहे हैं—कभी कम कभी अधिक। यह अवश्य कहा जा सकता है कि वर्तमान परिस्थितियों में सदाचारियों का बहुमत नहीं रहा। किन्तु निराश होना तो बुद्धिहीनता है—कायरता है। सिनेमा हाल में कभी अनुभव किया है? नायक द्वारा खलनायक की जबरदस्त पिटाई पर्दे पर देखकर दर्शकगण तालियाँ बजाने लगते हैं। ऐसा क्यों होता है? सिर्फ इसलिये कि उस अंधकारपूर्ण छविगृह में दर्शकों की मानवता जागृत हो उठती है। वे मानसिक रूप से न्याय और धर्म के पक्षधर हो जाते हैं।

समाज की स्थिति पर एक दृष्टि डालिये। भोले-भाले लोग उपहास के पात्र बने हुये हैं। कुटिल, धूर्त और लम्पट व्यक्तियों को मान्यता दी जाती है जो इस वातावरण से असन्तुष्ट हैं, जो छटपटाहट का अनुभव कर रहे हैं, वे दुष्टजनों का बहिष्कार क्यों नहीं करते? अश्लील साहित्य छप रहा है लेकिन क्यों खरीदते हैं लोग? माना कि शराब खुले आम बिकती है बाजारों में।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेकिन लोग पीने के लिये विवश तो नहीं किये जाते ।

धर्म का झण्डा लिये लोग घूम रहे हैं। पूजा, इबादत, पाठ से आका गूंज रहा है। लेकिन नारियाँ बाजार में बिक जाती हैं, निर्बलों का शोषण-उत्पीड़न जोर-शोर से हो रहा है। क्या धर्मग्रन्थों में लिखा है—चोरी क झूठ बोलो, कमजोर को सताओ, अपनी बहू-बेटियों की इज्जत बेचो औ दूसरों को लूटो।

जो लोग सुधार चाहते हैं उन्हें हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठना है आसमान से कोई राम, कृष्ण, दयानन्द या आजाद नहीं उतरेगा। यहीं माटी में खेलकर तैयार होंगे महापुरुष, जो अन्याय और अधर्म के वि आवाज उठायेंगे, हथियार उठायेंगे !

राम और कृष्ण को बन्दी बनाने का साहस किसी में न है और न होगा मर्यादित, सच्चरित्र और साहसी युवकों में ही राम भी हैं और कृष्ण भी धर्माचार्यों और नेताओं को चाहिये कि आदर्शवादी प्रतिभा सम्पन्न युवाओं प्रोत्साहन' दें। वे ही करेंगे धर्म की रक्षा। जब हमारी बहनें अपने सती बल का महत्व समझेंगी तब होगी धर्म की विजय। राम और कृष्ण तथाकथित भक्तों में से मात्र दस प्रतिशत भी उनके आदर्शों पर चल पड़े समाज सुधरने में कोई कठिनाई नहीं होगी। देश में हनुमान् जी अगणित मूर्तियां हैं। उनकी पूजा करने वाले लोगों में से कितने हैं ब्रह्मचर्य का रक्षण, धारण, पालन करते हैं ?

कृष्ण योगेश्वर थे। राधा के प्रति उनका प्रेम पवित्र था—वासनाज नहीं। किन्तु क्या उनके तथाकथित भक्तों ने 'उस दिव्य प्रेम' का अर्थ सम की चेष्टा की है कभी ?

दुर्बल चरित्र का व्यक्ति स्वयं को कभी कृष्ण भक्त कहने का अधिका नहीं है। कृष्ण का अनुयायी बनने के लिये कुत्सित कामनाओं का त्या करना होगा। महर्षि दयानन्द के नाम पर यशार्जन करने वालों को ब्रह्म का महत्व समझना होगा। उन्हें दृढ़ता के साथ दुराचार, वेश्यावृत्ति औ मद्यपान का विरोध करना होगा। देशभर में दयानन्द के अनुयायी य दुराचारियों का बहिष्कार करने का संकल्प ले लें तो कोई कारण नहीं समाजोत्थान न हो।

कुछ भी हो, धर्म की रक्षा और अधर्म के नाश के लिये हमें कथनी-करनी का भेद मिटाना होगा। हमारे मध्य ही राम हैं, कृष्ण हैं—बस उ ानने की आवश्यकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

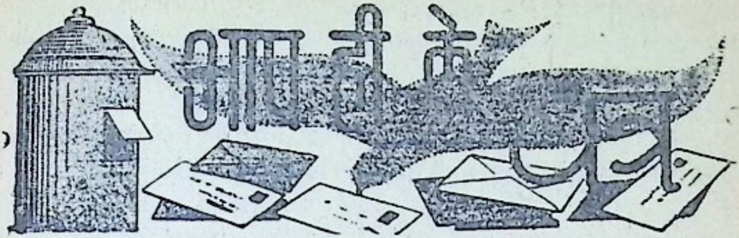

संपादक के नाम पत्र

बधाई

महोदय,

प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों को प्रकाशित करने में आपकासंस्थान अग्रणीं है और हिंदू मात्र को जन्म से नही बल्कि आदर्श कर्मों से हिंदू बनाने में अमूल्य योगदान कर रहा है, जिसके लिए वह बधाई का पात्र है।

अल्मोड़ा। जगत्मोहनजोशी

□ □ □ □

जन ज्ञान का संस्थान महत्वपुर्ण

मान्यवर,

भारतीय संस्कृति-सभ्यता एवं आस्मिता संरक्षक आपके मासिक 'जनज्ञान, के अकों को पढ़कर हृदय में राष्टीय गौरव सन्चार होता है। आर्य जीवन के विभिन्न परिवेशों को विवीधायामी रचना—विधाओ से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता हुआ यह मासिक पत्र हिन्दी पत्रकारिता-जगत में अपना अलग महत्त्वपूर्ण स्थान बनाये हुए है।

गोलागोकर्णनाथ

□ □ □ □

महात्मा वेदभिक्षु :

अपने गुण, कर्म, स्वभाव से प्रत्यक्ष दर्शित कर दिया कि एक सच्चे आर्य को किस तरह जीवन यापन करना चाहिये। वे स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे। वे आजन्म संघर्ष करते हुए अपने कर्तव्य मार्ग पर अडिग रहे।

इस समय हमारी जाती को धर्मच्युत करने के कुचक्रों, षडयन्त्रों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और प्रलोभनों का जाल बिछाया जा रहा है। इसका महात्मा जी ने डटकर विरोध किया और वे अन्त समय तक उन्होंने जो कार्य किया वह हम सबके लिए अनुकरणीय हैं। वह भविष्य में भी अगामी पिढ़ियों का पथ प्रदर्शन करता रहेगा

आपसे मेरा अनुरोध है कि महात्मा जी द्वारा प्रारम्भ किये गए कार्य को आप पूरा करें। हम हर परिस्थितियों में आपकी सहायता करेंगे।

रामेश्वर दयाल मास्टर
बदायूं

□ □ □ □

सफलता के लिए आशिवाद दें

महोदया,

मेरा सौभाग्य है जा मुझे आप जैसे समाज सेवी और हिंदू रक्षक का पथ प्रदर्शन प्राप्त हुआ है। मेरे जीवन का यह प्रथम संकल्प है कि मैं हिंदू धर्म और संस्कृति की रक्षा के घर जन्धीर को तोड़कर उस तूफान से टक्कर लेने की कोशिश करुन्गा जो हिंदू धर्म और संस्कृति का मुलोच्छेदन कर रहा है कृपया मेरा पथ प्रदर्शन करो और सफलता के लिए आशिवाद दें।

अलीगंज। विश्वाजीत सिंह यादव

□ □ □ □

जनज्ञान का इन्तजार रहता है

महोदय,

आप द्वारा भेजी "जनज्ञान" प्रति प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। मैं इस पत्रिका का नियमित पाठक हूँ इसका इंतजार रहता है। पढ़कर बहुत दुःख हुआ कि सरकार आपकी सेवाओं का पुरस्कार ३३ अभियोग लगाकर दे रही है।

मैं स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वता जी को बधाई देता हूं, जिन्होंने आपकी जमानत देकर सहृदयता का परिचय दिया। आप अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग रहें और निष्ठा से कार्य करती रहे सत्य की सदैव जीत होती है। आपके मार्ग दर्शन द्वारा हमारा देश एक हिंदू राष्ट्र बनकर विश्व के सामने आएगा।

वासुदेव शर्मा।
घांगी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश रत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

(जन्मशती ३ दिसम्बर के अवसर पर)

—डॉ० रामजीसिंह

सरदार पटेल बापू के लौह शरीर, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी उनके मस्तिष्क, आचार्य विनोबा उनकी आत्मा और देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद उनके हृदय समझे जाते थे। इसी से हम समझ सकते हैं कि राष्ट्र पिता और देशरत्न के बीच किस प्रकार का अन्तरंग एवं एकात्मक सम्बन्ध था। दोनों श्रद्धालु एवं निष्ठावान धार्मिक परिवार में पाले-पोसे गये। धर्म इन दोनों के लिये कोई रूढ़िगत विश्वास या निर्जीव कर्मकांड नहीं बल्कि एक जीवनपद्धति थी।

देशरत्न के लिये बापू केवल देश के नेता नहीं बल्कि जीवन-गुरु थे, जिसके आगे उनका सम्पूर्ण समर्पण भाव था। इसे देशरत्न ने अंत तक निभाया। यही कारण था कि देशरत्न पर बापू का अन्यतम विश्वास था। एक बार बापू ने कहा भी था—'राजेन्द्र प्रसाद ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें यदि मैं जहर का प्याला भी पीने के लिये बढ़ा दूं तो वे निःसंकोच पी लेंगे।"

राजनीतिक जगत में व्याप्त महत्वकांक्षाओं के बीच रहते हुए भी देशरत्न ने कोई महत्वाकांक्षा नहीं पाली, पद और प्रतिष्ठा के पीछे वे कभी परेशान नहीं हुए, भरत की तरह सत्ता का मद तो उन्हें कभी हुआ ही नहीं। इसलिये सत्ता की घुड़दौड़ में शामिल होने के बजाय देशरत्न ने राजनीति के गर्म वातावरण को भी अपने सौजन्य एवं समन्वय भावना से शीतल रखा। इसलिये बापू ने उन्हें आधुनिक भारतीय राजनीति में अजात शत्रु माना। राजनीति की काल कोठरी में भी रहकर देशरत्न ने अपने सार्वजनिक जीवन की चादर को बेदाग रखा। इसीलिये राष्ट्रपति-भवन को छोड़ते समय तक भी उनके परिवार के किसी सदस्य के विषय में कोई कानाफूसी नहीं सुनायी पड़ी। लोगों ने यही कहा—'ज्यों की त्यों धर दीनि चदरिया।'

गांधी की तरह देश रत्न के लिये राजनीति सत्ता या प्रतिष्ठा, लाभ या लोभ की वस्तु नहीं, वह तो अध्यात्म की साधना एवं कठोर कर्त्तव्य तथा त्याग का अभ्यास था। सत्ता में रहकर भी सत्ता के प्रति देशरत्न की अनासक्ति हमें जनक के आदर्श को इंगित करती है जिसे उन्होंने बापू से सीखा था। हां उनकी अनासक्त-वृत्ति में संयास नहीं, कर्मयोगी की साधना थी। यही कारण था कि उनके जीवन में घोर कर्म का दर्शन तो होता है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेकिन कहीं अव्यवस्था या त्रस्तव्यस्तता नहीं दीखती।

कर्म की कुशलता का ही नाम योग है—'योगः कर्मसु कौशलम्।' रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन में पं० जवाहरलाल नेहरू ने राजेन्द्र बाबू के विषय में कहा ही था—'हम लोग अक्सर भूल कर बैठते हैं, हमारे कदम अक्सर गलत हो जाते हैं। हमारी वाणी में भी भूलें हो जाती हैं। लेकिन राजेन्द्र बाबू एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो भूल करते ही नहीं, उनके कदम लड़खड़ाते नहीं इसलिए उन्हें अपने कहे गये कथन या कार्यवाही को वापस लेने की आवश्यकता नहीं होती है।"

असल में राजनीति राजेन्द्र बाबू का स्वधर्म नहीं था। मूलतः वे धार्मिक और आध्यात्मिक वृत्ति के थे और रचनात्मक कार्यक्रम उनका जीवन प्राण था। ग्रामीण जीवन और खादी ग्रामोद्योग के प्रति उनकी बापू जैसी ही निष्ठा थी। सत्याग्रह को उन्होंने कभी राजनैतिक प्रपंच का साधन नहीं, बल्कि मान्यता एवं मूल्य-परिवर्तन का अहिंसात्मक अस्त्र माना।

अहिंसा एवं विश्व शांति के प्रति उनकी अप्रतिम आस्था थी। १९५[illegible] यूनेस्को द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय में परिसंवाद को संबोधित करते हु[illegible] उन्होंने मार्मिक शब्दों में कहा था—"मैं ऐसे राज्य का प्रधान हूं जिसने अ[illegible] तक युद्ध एवं हिंसा का परित्याग नहीं किया है लेकिन दुनिया हमारी सफलताओं की शायद उससे भी अधिक हमारी विफलताओं से सबक सीख सकती है।'

यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारा विश्वविद्यालय का शिक्षा जगत देशरत्न की प्रतिभा और प्रखरता, हृदय की उदारता एवं स्वभाव की सरलता से पूर्णरूपेण परिचित नहीं है। आदर्शों एवं मूल्यों के ढहते संदर्भ में सात्विक राजनीति के पुरस्कर्त्ता, रचनात्मक कार्यक्रम के जीवन प्राण एवं बापू [illegible] निष्ठा के जीवन्त स्वरूप देशरत्न के विचारों की प्रासंगिकता पहले से ब[illegible] गयी है।

जीवन का मूल मंत्र—श्रद्धा

मेरे अन्तःकरण में जब कभी निराशा की लहर उठती है, उसी समय श्रद्धासागर में विलीन हो जाता है। मेरा जीवन आशातीत व्यतीत हुआ है इसलिए जब तक दम में दम है; तब तक मनुष्य को बेदम नहीं होना चाहि[illegible] यह मेरा सिद्धान्त है।

—श्रद्धानन्द संन्या[illegible]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने ग्राम-नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कीजिए

सबसे पहले आप समिति के उद्देश्य और मांगें पढ़ डालिए। यदि आप उनसे सहमत हों तो कम से कम अपने १९ साथी और बनाइए। इस प्रकार २० सदस्य बनाकर उनके फार्म तथा उनके पूरे शुल्क का ड्राफ्ट "अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति" के नाम का बनाकर केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को भेजिए। साथ ही स्वीकृति के लिए पत्र भी लिखें।

स्वीकृति प्राप्त होने पर आप में से जिन्हें संयोजक बनाया जाए—वे एक अस्थायी कोषाध्यक्ष व मंत्री नियुक्त कर लें तथा अपने यहां विधिवत् कार्यालय बना लैटर-हैड, रसीद बुक आदि छपवा लें। स्थापना के दो मास के भीतर आप एक कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाएं और रात्रि को सार्वजनिक सभा हिन्दू रक्षासम्मेलन के रूप में रखें।

आपका लक्ष्य अधिक से अधिक सदस्य बनाना हो। अपने सदस्यता शुल्क व दान से सम्मेलन कीजिए। साहित्य बांटिए, पोस्टर लगाइए और संगठन को सुदृढ़ बनाइए।

२० सदस्यों के बाद बने सदस्यों का चौथाई शुल्क आप केन्द्र को भेजेंगे। दान के रूप में एकत्र सम्पूर्ण धन आप अपने क्षेत्र में व्यय कर सकेंगे, किन्तु आप को सारा हिसाब नियमानुसार रखना होगा।

केन्द्र कभी भी आपके आय-व्यय की जांच कर सकेगा और केन्द्र को यह भी अधिकार होगा कि अनियमितता प्रतीत होने पर आपकी समिति भंग कर नयी समिति गठित कर सके।

हिन्दू रक्षा समिति वस्तुतः राष्ट्र के गौरव, परम्पराओं, इतिहास और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कृतसंकल्प सर्वस्व-समर्पित देशभक्तों का संगठन है। इसी भावना से सब कार्य करें, ताकि सफलता मिल सके।

हम किसी भी संकट में सेवा के लिए सदा प्रस्तुत हैं।

(प्रो०) धर्मवीर, प्रधानमंत्री

अ०भा० हिन्दू रक्षा समिति, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नि
और अधिकार बनाये जाएं।

२. मजहब के आधार पर पुलिस, सेना या किसी भी सरकारी वि
में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

३. पंजाब, कश्मीर, असम व देश के अन्य भागों में पाकिस्तानी
पैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे
विदेश पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

४. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

५. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने
अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्व
प्रदान किया जाए।

६. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीक
की नीति समाप्त की जाए।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहां भा
के नागरिकों के स्थायी तौर पर बसने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को
शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधि
न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक श
पत्र भरने का नियम बनाया जाए, जिसमें वह लिखे कि मैं भारत
अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के
रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

११. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने
आदेश तुरन्त रद्द किया जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभु से प्रार्थना : क्यों और कैसे ?

—महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी

यह शरीर भौतिक ढांचा दीख पड़ता है, परन्तु यह आध्यात्मिक शक्तियों का आधार है। यदि आपने शरीर की क्रियाओं पर कभी ध्यान दिया है, तो आप यह अवश्य जानते हैं। यहां तो केवल यही लिखा जा सकता है कि मानव को जब हम मरा हुआ कहते हैं, तब सारा का सारा भौतिक ढांचा हमारे समक्ष होता है। तो हुआ न आध्यात्मिक शक्तियों का आधार ? अतः हमें आध्यात्मिक शक्ति को जानना चाहिए, पुनः प्रेरणा लेने के लिए प्रार्थना आवश्यक है। प्रार्थना से शान्ति मिलती है। दुःख घट जाता है। क्या हम अपने दुःखों को व्यक्त करके अपने मन का भार हल्का नहीं कर लेते ? विश्वास कीजिये, सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना प्रेरणा बन कर साधना का रूप धारण कर लेती है।

प्रार्थना जीवन ज्योति है, जो मार्ग दर्शन करती है। प्रार्थना से पुण्य हो या न हो, संकट टलें या न टलें, परन्तु दिव्य शक्ति के ध्यान से स्वभाव में दिव्यता और पवित्र शक्ति के ध्यान से पवित्रता आती ही है। मन को प्रसन्न, बलवान्, उत्साह सम्पन्न और निर्भय बनाने का क्या यह उत्तम उपाय नहीं कि हम अपने अपराधों का प्रायश्चित्त और कष्टों का निवेदन करके सुमति, सद्गति, और शान्ति मांगें।

मानव कितना अभागा है कि अपना दुःख भाइयों, बन्धुओं एवं मित्रों को तो सुनाता है, जो इस दुःख से पहले ही दुःखी होते हैं, परन्तु दुःख नाशक परम मित्र परमात्मा को अपनी व्यथा नहीं सुनाता। कल्याण चाहने वाले कल्याण का मार्ग ढूंढ। दुःखों को मिटाने वाले की शरण पकड़। तेरा परम सौभाग्य होगा, यदि प्यास बुझाने के लिए तू सरोवर प्राप्त कर लेगा। रोग का उपचार वैद्य ही कर सकता है।

अपराध के फल से बचने की प्रार्थना करने का अर्थ है अपराध स्वीकार करना और भविष्य में अपराध न करने का व्रत लेना। इस प्रकार हमारा जीवन उज्जवल हो सकता है। गान्धी जी इस बात के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। गान्धी जी की जीवन गाथा पढ़ने से मालूम होता है कि गान्धी जी ने आत्म-शक्ति प्रार्थना से ही पाई। वे अपने जीवन में कम से कम दो समय प्रार्थना करते थे और उन्होंने प्रार्थना के बल का प्रत्यक्ष अनुभव किया तथा अपने अनुभवों को अपनी जीवन गाथा में लिखा। प्रार्थना से आत्मिक बल बढ़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाता है।

सभी सुखी हों, नीरोग हों, भद्र दृष्टि युक्त हों, सभी के सब दुःख दुर्गुण दूर हों, यही है प्रार्थना का सच्चा स्वरूप। क्या राजा, क्या रंक, साधु, गृहस्थी, ब्रह्मचारी, विद्वान्, भक्त, ऋषि सभी प्रार्थना करते हैं। अपनी-अपनी अभीष्ट सिद्धि की सभी याचना करते हैं। सभी मांगते हैं, क्योंकि वह राजाओं का राजा, धनियों का धनपति अर्थात् सभी ऐश्वर्यों का दाता है। भिखारी दाता से मांगते हैं। भगवान् के दर के सभी भिखारी हैं। यहां आकर सब एक समान हैं।

भगवान ने मानव को वाणी दी है, अन्य किसी को नहीं। किस लिए? प्रार्थना करने के लिए ही। जब वाणी गुड़ के स्वाद का वर्णन नहीं कर सकती तो प्रभु की शक्ति का वर्णन कैसे कर सकती है? यह तो प्रभु के गुणों की गणना भी नहीं कर सकती। वाणी तो भावों को व्यक्त करने के लिए हैं परन्तु सभा में हर वक्त भावों को व्यक्त करने के लिए हर वक्ता को अनुमति नहीं मिलती। बोलने के लिए ओजस्विता, ज्ञान और शक्ति चाहिए। ऐसे ही प्रार्थना ओजस्वी, ज्ञानी उसे हृदय में समझने वाला श्रद्धावान् कर सकता है। जो प्रार्थना करना जानते हैं, वे तो आंखें बन्द करके मौन हो जाते हैं। इसलिए प्रार्थना का रहस्य नहीं लिखा जा सकता। प्रार्थना एक संस्कार है। यदि इस भाव को पा गये तो कल्याण ही कल्याण है।

जन-ज्ञान में विज्ञापन दीजिये

'जन-ज्ञान' मासिक एक सामाजिक, धार्मिक व पारिवारिक पत्रिका है। देश-विदेश में लाखों पाठक इसे पढ़ते हैं।

इस प्रकार यह पत्रिका आपके प्रतिष्ठान तथा उसके उत्पादनों के प्रचार-प्रसार के लिए एक उपादेय माध्यम बन सकती है।

आप अपने प्रतिष्ठान व उसके उत्पादन के प्रचार के लिए इस सशक्त साधन का उपयोग करें।

विवरण पत्र लिखकर मंगायें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू अहिंसा का प्रतीक

—पं० बिहारीलाल शास्त्री

'हिन्दू' शब्द के अर्थ फारसी कोशों में बहुत बुरे किये, कारण यह कि उन लिखने वालों को हिन्दुओं से घृणा थी। फारसी में 'हिंदू' के अर्थ काले के हैं, क्योंकि ईरानियों की अपेक्षा हिंदुओं का रंग मैला था। द्वेष के कारण ही हिंदू शब्द के इतने बुरे अर्थ किये हैं।

संस्कृत में हिन् हिंसा, दुःख-दूर रहने वाला, अर्थात् जीव मात्र की हिंसा न करने वाला हिंदू है। हिंदू ने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया, न किसी को सताया और लूटा अपितु अनेक जातियों और नेताओं की सहायता की। 'हिंदू' के लक्षण पूज्य सावरकर जी के अनुसार निम्न लिखित हैं—

आसिंधु सिन्धु पर्यन्ता यस्य भारत भूमिका।
मातृभूः पुण्यभूश्चैव सवै हिंदुरिति स्मृता॥

अर्थात् पश्चिमी समुद्र से पूर्वी समुद्र तक भूमि जिसकी मातृभूमि हो तथा इसे जो पुण्यभूमि समझता हो वह, 'हिंदू' है। अर्थात् जिसकी पुण्यभूमि और मातृभूमि यह भारत है, वे सब हिन्दू हैं।

मुसलमान और ईसाइयों की भी यह मातृभूमि भारत देश है। मुसलमानों के लिए यह पुण्यभूमि अवश्य है, क्योंकि 'हदीस' के अनुसार एक बार रसूल महोदय भारत की तरफ मुख करके नमाज पढ रहे थे, मुसलमानों ने पूछा—आज आपने पूर्व की ओर मुख करके नमाज क्यों पढ़ी? उत्तर में रसूल महोदय ने कहा कि हिंदुस्तान की ओर से वहदानियत की ठंडी हवायें आ रही हैं। इसी पर सर इकबाल ने लिखा है—

मेरे अरब को आई ठन्डी हवा जहां से,
वहदत की लय सुनायी दुनिया ने जिस मकां से।

अर्थात् एकेश्वरवाद का विचार संसार में भारत से फैला। अतः भारतभूमि सब की पूज्य है, जिसका मुख्याधिकारी हिंदू है। संसार भर से मेल रखने वाला, किसी के धर्मस्थानों को न उजाड़ने वाला, पर स्त्रियों को न लूटने वाला केवल 'हिंदू' है।

इमाम हुसैन की दर्दनाक मौत के बाद उनका परिवार अनेक वर्ष तक लाहौर रहा, जहां उनके ब्राह्मण राजा ने सारा खर्च उठाया।

जिस समय हिंदुओं का वैभव और सैनिक गौरव पूरे जोर पर था उस समय भी हिंदुओं ने किसी धर्म का अपमान नहीं किया। हिन्दू पीटने वालों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और लुटने वालों में रहे, ऐसा नहीं। वीर शिवाजी ने जब हिंदुओं को संगठित करने का शंख बजाया तो हिंदुओं की शक्ति पुनः विशाल हुई। हिंदुओं ने ऐसे ग्रन्थ भी लिखे जो कोई और जाति नही लिख सकी। 'रामायण' के जोड़ का ग्रन्थ यूरोप वाले नहीं लिख पाये। भारतीय आस्तिकता और नास्तिकता में यूरोप का दर्शन तुलना नहीं कर सकता।

संगीत तथा चिकित्सा में भी हिंदू सर्वश्रेष्ठ है। हिंदू नारी के चरित्र की तुलना तो संसार भर के नारियों के इतिहास में नहीं मिल सकती जिसने चरित्र रक्षा के जौहर व्रत किये हों।

हिंदुओं को संसार भर में अपनी संस्कृति का प्रचार करना चाहिये। वास्तविक मानवता हिंदू धर्म में ही है। छोटी पुस्तकों द्वारा विदेशों में भी प्रचार होना चाहिये। भारतीय दर्शन के प्रसार से ही विश्व-कल्याण सम्भव है।"

☐ तीन मित्र बालकृष्ण, कंवल और अरविंद भारत और पाकिस्तान के मध्य खेले जाने वाले मैच का आंखों देखा हाल आकाशवाणी से सुन रहे थे।

अरविंद : "यार, यदि मुझे लायड, गावस्कर, कपिल देव, जहीर अब्बास मिल जाए तो मैं विश्व कप जीत कर दिखा दूं।

बालकृष्ण : "यार छोड़, मुझे केवल पाकिस्तान के एम्पायर मिल जाएं तो प्रत्येक कप जीत कर दिखा दूं।"

☐ एक महिला डाकघर में गई तथा पोस्ट मास्टर से बोली, "मुझे आपके डाक प्रबन्ध के विरुद्ध शिकायत करनी है।"

पोस्टमास्टर ने अत्यन्त धैर्यपूर्वक पूछा, "कहिए, आपको क्या शिकायत है।"

महिला : "मेरे पति व्यापार के सिलसिले में कलकत्ता गए हुए हैं परन्तु मुझे उनका जो जवाब मिला (एक खत के रूप में) उस पर मोहर शिमला की है, यह क्या गड़बड़ी है?"

☐ एक बार श्रीमान हरीन्द्र हैट की दुकान पर नया हैट खरीदने गए। दुकानदार ने उनको अनेक हैट दिखाए परन्तु उन्हें कोई फिट नहीं आया। अचानक काऊंटर से एक हैट उठा कर पहन कर बोले "यह बिल्कुल फिट है। इसकी क्या कीमत है?"

दुकानदार: इसकी कोई कीमत नहीं।" हरिन्द्र (आश्चर्य से) "क्यों?"

दुकानदार : "क्योंकि यह वह हैट है जो आप पहन कर यहां आए थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चतुर्वेद विश्वविद्यालय की स्थापना

"वेदों को बचाओ !" नारा लगाते हुए, गत वर्ष विजयवाड़ा की एक पहाड़ी के समीप कृष्णा नदी के दक्षिणी तट पर सीतानगरम् में "जीर एजुकेशनल ट्रस्ट" ने एक वैदिक स्कूल खोला था जिसमें ५० छोटे-छोटे भरती बच्चे हुए थे। शायद यह स्कूल अपनी किस्म का वह पहला स्कूल है जिसमें वेद पढ़ाए जाते हैं।

इस समय इस स्कूल में ३४ छात्र शिक्षा पाते हैं, जिनमें २७ विद्यार्थियों को कृष्ण यजुर्वेद की शिक्षा दी जाती है और ७ को शुक्ल यजुर्वेद की। दस विद्यार्थी ऋग्वेद का, आठ सामवेद का और एक अथर्ववेद का अध्ययन कर रहे हैं।

छात्रों को गुरुकुल की प्राचीन प्रणाली के अनुसार संस्कृत, हिन्दी, तेलुगू, तमिल और अंग्रेजी की शिक्षा दी जाती है। पाठ्यक्रम के अनुसार इन भाषाओं का शिक्षा महाकाव्यों के आधार पर दी जाती हैं। उदाहरणार्थ संस्कृत की रामायण द्वारा और तेलुगू की महाभारत के आधार पर। पहले छात्रों को छोटी-छोटी कहानियों के रूप में महाकाव्य पढ़ाए जाते हैं, बाद में उन्हें व्याख्या पढ़ाई जाती है। अन्त में महाकाव्यों में सन्निहित दर्शन का उपदेश दिया जाता है।

आधुनिक शिक्षा धारा से अवगत रखने के लिए छात्रों को गणित, विज्ञान और भूगोल की भी शिक्षा दी जाती हैं जिससे आजीविका प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी विश्वविद्यालयों में प्रवेश का द्वार खुला रहे।

दिल्ली में, १९७३ में, आंध्र प्रदेश में नादिगछापलम् के स्वर्गीय त्रिदण्डी श्री मन्नारायण रामानुज जीर स्वामी ने एक अखिल भारतीय वैदिक विद्वानों सम्मेलन आयोजित किया था, जिसमें उन्होंने कृष्णा नदी के तट पर एक छात्रावास युक्त विश्वविद्यालय की स्थापना का संकल्प घोषित किया था। किन्तु अन्ततोगत्वा यह कार्यभार उनके उत्तराधिकारी श्री चिन्न जीर स्वामी पर पड़ा, जिन्होंने १९८३ में इस विद्यालय की स्थापना की। उन्हें पहले शंका थी कि १२ वर्षों के पाठ्यक्रम के लिए शिक्षार्थी मिलना कठिन होगा। किन्तु उनके आग्रह पर करीमनगर में वेंकटेश्वर मन्दिर के एक पुजारी ने अपने तीनों लड़कों को उपनयन संस्कार के पश्चात् स्वामी जी को सौंप दिया, जिनमें दो सात-सात वर्ष के जुड़वां लड़के थे और एक बड़ा ९ वर्ष का था। छात्रों की संख्या अब बढ़कर ५० हो गई हैं। प्रबन्धकों ने भर्ती की उमर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१४ से घटाकर ११ कर दी है। हैदराबाद के एक अफसर ने अपने दोनों लड़कों को भर्ती कराया है। १२ वर्ष का एक हृदयरोगी बालक भर्ती हुआ है जिसके पिता और पितामह दोनों डाक्टर हैं जिनका विश्वास है कि वैदिक मंत्रों के गान से उत्पन्न नाद से वह अच्छा हो जाएगा।

छात्रों पर कड़ा प्रतिबंध है कि वे बिना १२ वर्षों का पाठ्यक्रम पूरा किये स्कूल के छात्रावास से बाहर नहीं जा सकते। वे चिट्ठी डालने को डाकखाने भी नहीं जा सकते। स्कूल उनकी सब जरूरतें पूरी करता है और समय-समय पर विद्यार्थियों को शिक्षार्थ तीर्थयात्रा भी कराई जाती है। उनमें स्वाभिमान का विकास करने के लिए उन्हें "संभावना", दान या भेंट लेने की मनाही है।

छात्रों को दिन में १६ घण्टे अध्ययन करना होता है। वे प्रात: ४ बजे वंदना के साथ दिन का प्रारंभ करते है, सवा चार बजे व्यायाम करते हैं, छः बजे स्नान करते हैं, साढ़े छः बजे संध्या वन्दन और समिधान करते हैं ७ बजे वैदिक कक्षा में जाते है और ७-३० से ११ बजे मध्याह्न तक पढ़ते है। दोपहर के भोजन और विश्राम के बाद वे एक बजे तक भाषा तथा अन्य विषयों की शिक्षा पाते है। संध्या को स्नान करने से पहले वे एक घण्टा खेलते है और ७ बजे संध्यावंदन करते है। तदुपरान्त ७-३० बजे तक वे विष्णुसहस्रनाम का पाठ करते है और ८ बजे भोजन करके विश्राम करते हैं। इस शिक्षण व प्रशिक्षण में १५००० रु० प्रति मास खर्च होता है, जो भक्तों द्वारा दान में मिलता है, जिनकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है।

त्रिद०डी चिन्न जीर स्वामी की योजना है कि २५० छात्रों और ६० अध्यापकों के साथ १२ वर्षों के पाठ्यक्रम का एक आवासीय विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए, जिसके पूरे होने में पांच वर्ष लगेंगे। इसमें एक पुस्तकालय होगा जिसमें वेदों पर अधिकार पूर्ण ग्रन्थ (छपे तथा हस्तलिखित) रखे जाएंगे। वैदिक संस्कृति पर ग्रन्थों का प्रकाशन भी किया जाएगा। वैदिक विद्वानों की सहायता भी की जाएगी और वेदों के प्रचार-प्रसार के लिए शास्त्रार्थों और सम्मेलनों के आयोजनों का भी प्रबन्ध किया जाएगा। वेदों पर वैज्ञानिक अनुसंधान करने के लिए एक प्रयोगशाला भी स्थापित की जाएगी।

जीर ट्रस्ट ने डेढ़ करोड़ रु० की लागत से एक विशाल विद्यालय भवन निर्माण कराने की एक योजना भी बनाई है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय संचालन के लिए भी डेढ़ करो रु० का दान संचित करना आवश्यक होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मालवीयजी पत्रकार के रूप में

—वीणा श्रीवास्तव

धवल वेश-भूषा, अमृत तुल्य वाणी, महानता की प्रतिमूर्ति और हिन्दी के अनन्य पुजारी महामना पं० मदनमोहन मालवीय का समस्त जीवन प्रेरणादायक है। जीवन पर्यन्त वे दलितों के उद्धार के लिए प्रयत्नशील रहे। स्वतंत्रता संग्राम के अनन्य पुजारी व शिक्षा साधनों की उन्नति के लिए संघर्षरत मालवीय जी उच्चकोटि के पत्रकार भी थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका योगदान स्तुत्य है। वस्तुतः वे अपने आदर्शों की सिद्धि, लोकजीवन के कल्याण और जनता-जनार्दन के स्वर को गुंजाने के लिए पत्र का सहारा लेना परम आवश्यक समझते थे।

अपने जीवन में मालवीय जी ने अनेकों पत्रों का संपादन किया और कई पत्र स्वयं भी प्रकाशित किए। उस समय के उन्नत साहित्यकारों, लेखकों का सहयोग उन्हें सदैव मिलता रहा। पत्रों को चलाने के पीछे उनकी प्रमुख धारणा समाज कल्याण की थी। वे हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं पर पूरा अधिकार रखते थे, इसलिए इन भाषाओं में पत्रों का संचालन व उनके लिए स्तरीय रचनाएं लिखना उनके लिए मुश्किल काम न थे। इन्हीं गुणों के कारण वे एक सफल पत्रकार रहे।

सन १८८७ में वे हिन्दी के प्रथम दैनिक 'हिन्दोस्थान' के सम्पादक नियुक्त हुए। इस पत्र के मालिक कालाकांकर के तत्कालीन राजा रामपाल सिंह थे। राजा ने काफी आग्रह करके मालवीय जी को संपादक बनने को तैयार किया था। मालवीय जी उन दिनों गरीबी में दिन बिता रहे थे। गृहस्थी पालन का कोई निश्चित व समुचित प्रबंध नहीं था, अतः उन्होंने राजा का आग्रह स्वीकार कर लिया।

संपादक व संपादकीय कार्यालय की मर्यादा उनके लिए सर्वोपरि थी, इसलिए 'हिन्दोस्थान' के संपादक के पद पर जाने के लिए उन्होंने एक शर्त रखी कि राजासाहब नशा करके संपादकीय कार्यालय में प्रवेश नहीं करेंगे। राजा रामपाल सिंह सदैव इस बात का ध्यान रखते।

विद्यालय में कक्षा के कमरे छोटे और "साउन्ड प्रूफ" होंगे, जिनमें केवल आठ छात्रों के बैठने का स्थान होगा, जिससे वेदों के स्वर का निनाद भीतर ही गूंजे और मंत्रोच्चारण के नियमों की वैज्ञानिक शिक्षा दी जा सके।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेकिन एक दिन गजब हो गया। राजा साहब यों तो भारतीयता व हिन्दी के अनन्य भक्त थे। किन्तु इंग्लैंड में काफ़ी समय तक रहने के कारण मदिरापान के शौकीन हो गए थे। काफी ध्यान रखने के बावजूद एक दिन मुंह में शराब की गंध लिए राजा साहब मालवीय जी के पास आ गए। मालवीय जी यह देखकर बहुत दुखी हुए। हालांकि किसी प्रकार की कहा-सुनी नहीं हुई और न ही कोई अप्रिय घटना ही घटी, किन्तु स्वाभिमानी संपादक मालवीय जी ने तुरंत त्यागपत्र देकर घर का रास्ता लिया।

बाद में राजा साहब ने उन्हें वापस बुलाने के लिए बहुत प्रयत्न किए लेकिन पंडित जी अपने निर्णय से न डिगे। यह घटना मालवीय जी की निर्भीकता व उनके स्वाभिमान की परिचायक है।

अपने सम्पादकत्व में उन्होंने कर्मनिष्ठ, विद्वान् व हिन्दीभाषी साहित्यकारों को अपने सहयोगी के रूप में रखा। यही नहीं, उन्होंने उर्दू के लेखक कवि बालमुकुन्द गुप्त को हिन्दी सेवा के लिए प्रवृत्त किया। ऐसा असाध्य कार्य केवल वही कर सकते थे। गुप्त जी उर्दू के लेखक, कवि व सम्पादक थे, किन्तु मालवीय जी के आग्रह पर वे 'हिन्दोस्थान' में आ गए। बालमुकुन्द जी उच्चकोटि के पत्रकार साबित हुए। इसके अतिरिक्त उनके अन्य प्रमुख सहयोगी थे—पं० प्रताप नारायण मिश्र, पं० अमृतलाल चक्रवर्ती, पं० गुलाबचन्द चौबे और बाबू शशिभूषण चटर्जी।

सब से बड़ी देन

बनारस स्थित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय उनकी इस देश को सबसे बड़ी देन है। १९०७ में उन्होंने प्रयाग से एक साप्ताहिक पत्र 'अभ्युदय' प्रकाशित करना आरंभ किया, जिसके माध्यम से उन्होंने इस विश्वविद्यालय के निर्माण को मूर्त रूप देने का महान् कार्य किया। प्रारम्भ में दो वर्ष तक उन्होंने स्वयं इसे सम्पादित किया। बाद में इस पत्र का प्रकाशन कई वर्ष तक होता रहा। इसके अतिरिक्त उन्होंने एक अन्य पत्रिका 'मर्यादा' का भी प्रकाशन आरम्भ किया, जिसके उद्देश्य देश की एकता, अखंडता व धार्मिक मर्यादा को प्रोत्साहित करना था। कई वर्ष तक यह पत्रिका अपने उद्देश्य की पूर्ति सफलतापूर्वक करती रही।

हिन्दी भाषा के अतिरिक्त उन्होंने अंग्रेजी में २४ अक्तूबर, १९०९ को प्रयाग से एक दैनिक 'लीडर' निकालना आरंभ किया। अंग्रेजी में निकाले इस पत्र के पीछे उनकी यह धारणा थी कि सरकार को अंग्रेजी माध्यम से ही अपनी बात समझाई जा सकती है जबकि आम जनता को तो हिन्दी भाषा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में अपनी बात समझाने में कोई दिक्कत नहीं थी। लीडर के प्रकाशक होने के साथ-साथ मालवीय जी इसके सम्पादक भी थे। बाद में सी० वाई० चिन्तामणि जब उनके सम्पर्क में आए, तो मालवीय जी ने सम्पादन का कार्यभार उनके ऊपर छोड़ दिया। चिन्तामणि जी ने 'लीडर' के सम्पादक के रूप में अपार ख्याति अर्जित की और 'लीडर' को उस समय देश का उच्चस्तरीय पत्र बना दिया।

भारतीय संस्कृति की रक्षा और शिक्षा प्रसार के लिए उन्होंने काशी से ही साप्ताहिक पत्र 'सनातन धर्म' का प्रकाशन शुरू किया। यह पत्र काफी सफल रहा। इन्हीं दिनों १९२४ में मालवीय जी ने देश की राजधानी दिल्ली से कोई पत्र प्रकाशित करने की सोची। इसी समय अकाली दल आर्थिक संकट के कारण अपने दैनिक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' को बेचना चाह रहा था। मालवीय जी के लिए यह सुनहरा मौका था।

उन्होंने इस पत्र को खरीदने के लिए लोगों से घूम-घूमकर चंदा एकत्रित किया, व्यक्तिगत रूप से पंजाब नेशनल बैंक से ऋण लेकर इस दैनिक को खरीद लिया। अब वे इसका सफलतापूर्वक संचालन करने लगे। १९३४ में उन्होंने हिन्दी दैनिक 'हिन्दुस्तान' का प्रकाशन भी शुरु किया। बाद में श्री घनश्याम दास बिरला ने इस पत्र के अधिकतर शेयर खरीद लिए, जिससे इसका नियंत्रण उनके हाथ में आ गया। आज यही पत्र बढ़ते-बढ़ते 'हिन्दुस्तान टाइम्स' प्रकाशन के रूप में अति विकसित हो गया है।

दीन-भावना मालवीय जी में कूट-कूटकर भरी थी। वे अपने सहयोगियों का बड़ा ध्यान रखते थे। पत्रों में किसी प्रकार की गलती जाना उन्हें सहन नहीं था इसलिए अवसर काफी प्रूफ स्वयं पढ़ते थे। पत्र और प्रेस की व्यवस्था के वे अच्छे ज्ञाता थे। अपने सहयोगियों का ध्यान रखने के साथ-साथ वे उनकी महानता को भी सहर्ष स्वीकार करते थे। वे सदैव सीधी-सादी भाषा का सहारा लेते थे। नुक्ताचीनी अथवा व्यर्थ के विवाद से वे दूर रहना चाहते थे।

वेद प्रचार के लिए
अधिक से अधिक साहित्य बांटिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रान्तिकारी आर्य संन्यासी :
अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः
यशसि चाभिरुचि र्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥

निस्सन्देह महात्मा मुन्शी राम पूर्णत: कर्मठ महात्मा था। वित्तैषणा का परित्याग कर दिया था, जिस दिन उसने प्रसिद्ध बैरिस्टर नार्टन को, जिसका नाम कांग्रेस के अध्यक्षपद के लिए प्रस्तावित था, कानूनी पराजय दी। उस दिन गवर्नमेंट कालेज में दीवाली की गई। यह यूरोपियन बुद्धि पर भारतीय बुद्धि व मेधा की विजय थी। सन्त निहाल सिंह ने सगर्व लिखा है, वह उस दिन नाच उठा क्योंकि वकील ला० मुन्शी राम मेरे गांव तलवन का था।

लाहौर हाई कोर्ट का पहला भारतीय जज ला० मुन्शीराम होगा, यह चर्चा होने लगी थी, मगर महात्मा मुंशीराम जजी की सीढ़ी से सहसा उतर गया। पंजाब में गूंज उठा "महात्मा मुंशीराम की जय"। एक पंजाबी न[...] युवा का विलक्षण यह महान् वह था। वित्तैषणा और लोकैषणा का पथ [...] उसने त्याग दिया। क्योंकि मानता था :— आर्यस्य न दास भावः।

अग्रगन्ता

वहावलपुर (मुस्लिम रियासत) के स्नातक विश्वनाथ विद्यालंकार [...] कहना था कि महात्मा जी ने गुरुकुल की स्थापना समय से कम से कम [...] साल पहले की। ६० साल पहले तो यह बात महात्मा जी की बुद्धि [...] अपमान प्रतीत हुई थी, क्योंकि माना जाता था कि महात्मा जी कभी गलत [...] नहीं सकते। पर वर्तमान काल का इतिहास श्री विश्वनाथ की कही बा[त] को सच्चाई प्रकट कर रहा है। नैरोबी यूनिवर्सिटी (केनिया) में शिक्षा [...] माध्यम सुहाली भाषा हो गई। फलतः वहां की आर्य समाज को सत्या[र्थ] प्रकाश का अनुवाद सुहाली में ही करने को बाध्य होना पड़ा है। भार[त] सरकार के कश्मीरी शिक्षा मंत्री श्रीमती शीला कौल ने लोकसभा [...] श्री बागड़ी के प्रश्न के उत्तर में कहा—शिक्षा के माध्यम में परिवर्तन कर[ने] का कोई इरादा नहीं।

उसके द्वारा स्थापित गुरुकुल का क्या हाल है? विज्ञान की शिक्षा अं[...]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में दा जाती है। उसके समय आर्य भाषा पढ़ाई जाती थी। आर्य भाषा पाठावली तैयार की गई। म० गांधी, श्रीधर पाठक, डा० श्याम सुन्दर दास आर्य भाषा सम्मेलन के सभापति बनाये गये थे। क्यों? आर्यजाति की भाषा आर्य भाषा ही होगी या भारत प्राय :द्वीप की भाषा भारती होगी। वह एक आर्य था ! वह महान् पूर्वजों की कही इस बात पर विश्वास करता था :—

यां मेधा देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधया अग्ने नि मेधाविनं कुरु ॥

प्रसिद्ध रुसी नोबेल पुरस्कार प्राप्त सोल्ज नित्स का कहना है —जो जाति, जो देश और जो राष्ट्र अपने पूर्वजों को भूल जाता है वह अपना इतिहास खो देता है, जो अपना इतिहास खो देता है, वह नष्ट हो जाता है। सुमेरियनों का उदाहरण उसके सामने था। मुन्शी राम इस ध्रुव सत्य में विश्वास करता था। उसने देखा कि बौद्ध, जैन एवं ब्राह्मणवाद इस्लाम, ईसाई और आर्यजाति की स्मृति तक को नष्ट करने का प्रयत्न कर रहें हैं। इसके विपरीत उसके दीक्षा गुरु एवं आचार्य ऋषि दयानन्द ने लिखा है—एक समय सम्पूर्ण ज्ञातइससंसार पर आर्यजाति का सार्वभौम चक्रवर्ती कि एकावयवी—यूनिटरी-राज्य था। अन्य देश माण्डलिक थे। यही कारण है, दुनिया भर के देश में आज भी इसका पाठ किया जाता है:—

सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत् ॥

क्या कोई अन्य देश यह प्रार्थना करता है? क्या नपुंसक एवं पराजित यह कामना कर सकता है? यह विश्व-विजयी एवं जयशील आर्यजाति ही कर सकती है। आर्यजाति की स्मृति तक का अन्त करने का लगभग दो हजार वर्षों से ब्राह्मणवाद एवं ब्राह्मणधर्म द्वारा किए जा रहे प्रयत्नों का अन्त करने एवं प्रतिरोध करने तथा आर्यजाति के विजय गीत के निम्नपद को सार्थक बनाने के लिए मनीषी विद्वान् उत्पन्न करने के उद्देश्य से उस महान् भारतीय मुन्शीराम ने गुरुकुल की स्थापना की, जिसमें मजदूर दल के नेता ब्रिटिश प्रधान मंत्री रैमजे मैकडोनल्ड ने ब्रिटिश साम्राज्य के नाश की उठती महा-क्रान्ति को देखा। क्योंकि विजय गीत का वह पद कहता है : मनीषी विद्वानों का गंभीर जय नाद शत्रु के हृदय कंपा दे :—

इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ-
आदित्यानां मरुतांशर्म उग्रम् ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महा मनसा भुवनच्यवानां घोषो
देवानां जयतामुदस्थात् (ऋ०साम०)(चारों वेदोंमें)

महात्मा कितनी शती आगे चल रहा था।

वह गुरुकुल को बुकर टी वाशिंगटन द्वारा स्थापित टस्कैजी विश्वविद्यालय के समान स्वावलम्बी बनाना चाहता था। पर उसका यह स्वप्न अधूरा रहा। क्योंकि श्रम करने को एंग्लो-मुस्लिम दास "हिंदू" तैयार न था। और आज भी नहीं। उसके गुरुकुल के वार्षिकोत्सव ने कांग्रेस के अधिवेशनों से कुर्सी मेज उठवा दी और चटाई-दरी बिछवा दी।

पूर्ण भारतीय

अमेरिका को बसाने वाले भारतीय आर्यों की सन्तान पराजित होने पर भी यूरोपियन आहार नहीं छूती और दाल चपाती खाती है। यह भारतीय आहार ही मैक्सिको एंव पेरु का राष्ट्रीय भोजन है। सरदार खुशवन्त सिंह एम.पी. ने यह भोजन किया है। उस दिन ढावे में मसूर की दाल बनी थी। मसूर की दाल का उल्लेख यजुर्वेद में आता है। ठीक उसी प्रकार महात्मा भी भारतीयआहार लेता था। तुलसी की चाय पीता था। उसकी भारत भक्ति की कड़ी परीक्षा हुई। रुड़की का मजिस्ट्रेट उसके अमित साहस निर्भयता से एवं प्रभावित और मित्र था। गुरुकुल में तीरन्दाजी प्रचलित थी। इस वास्ते उसका अभिमान होता था। यू०पी० काले० गवर्नर लार्ड मैस्टन, भारत के वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड पैदल चलकर गुरुकुल आए। अतिथियों का स्वागत तुलसी की चाय, लड्डू, पेड़ा, मठरी और पकौड़े से किया गया। गुरुकुल मैड़वा रोटी रजत जयन्ती पर उसके अमर बलिदान के बाद म० गांधी की पार्टी के वास्ते पहले पहले खाई।

दिल्ली बेताज का सम्राट्

भारतीय क्रान्ति आगे बढ़ी। मुन्शीराम से श्रद्धानन्द होने के लिए संन्यास की दीक्षा किसी सन्यासी से नहीं ली, परमात्मा से दीक्षा ली। तपोवन छोड़ा। नया बाजार (श्रद्धानन्द बाजार) में डेरा डाला। पहला युद्ध समाप्त हुआ रौलेट एक्ट पास हुआ विरोध में तूफान उठा। म० गांधी ने सत्याग्रह का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शंखनाद किया। लिबरल दल ने इसका विरोध किया। बस आर्य संन्यासी रणक्षेत्र में कूद पड़ा। दिल्ली की कमान सम्भाली। डा० अन्सारी एवं अजमल खाँ दिल्ली छोड़ गए। आर्य संन्यासी ने रौलेट एक्ट के विरोध में तीन लेख "छाती पर पिस्तौल" शीर्षक से लिखे। वाइसराय चौंका। सरकारी वकील विजय पत्र पर मुकद्दमा चलाने व जमानत मांगने की कानून की धारा ढूंढने लगे। वाइसराय ने लन्दन तार दिया—सन्यासी विद्रोही हो गया। मुस्लिम समाज विजय पढ़ने के लिए आर्य भाषा—हिन्दी पढ़ने लगा। दिल्ली से उर्दू के प्रभुत्व का अन्त हो गया।

भारत के इतिहास में नया पन्ना लिखा गया

६ मार्च को दिल्ली में पूर्ण हड़ताल रही। स्टेशन पर पुलिस ने गोली चलाई। पटौदी हाउस में रौलेट एक्ट को रद्द करने की मांग के समर्थन में सभा थी। पुलिस फौज ने सभा-स्थल घेरा हुआ था। कलैक्टर उपस्थित था। विद्रोही आर्य संन्यासी का ओजस्वी भाषण जारी था। कलैक्टर ने बुलाया। सभा में क्षोभ फैला। सबके मन आशंका से भर गए, संन्यासी ने भाषण बन्द करने से इन्कार कर दिया। मंच तक कलैक्टर के आने का मार्ग बनवा दिया। लाचार कलैक्टर सन्यासी के पास पहुंचा। उसने पूछा शांति भंग हुई तो जिम्मेदार कौन होगा? आर्य संन्यासी का जवाब था पुलिस और मिलिटरी हटा ली जाय तो वह जिम्मेदारी लेने को तैयार है। पुलिस और फौज लौटती दिखाई दी। सभा समाप्त हुई। सन्यासी को उसके निवास स्थान पहुचाने भीड़ साथ चली। यह देख कतारबन्दजूलूस में भीड़ चली। पर चांदनी चौक के प्रवेश पर पुलिस तैनात थी। सन्यासी ने जूलूस का नेतृत्व किया। घन्टाघर पर जुलूस पहुंचा अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। गोरखों और गोरों की किरचें आर्य संन्यासी की छाती पर तनी थी उसके दुपट्टे को पार कर किरचें आर्य संन्यासी की छाती को छू रही थीं। सहसा घोड़ा दौड़ाता कलक्टर आ पहुंचा। ब्रिटिश सरकार का अन्त टल गया। पर आकाश गुंज उठा—

धिग् बलम् क्षत्रिय बलं
ब्रह्मतेजो बलम् बलम्

इसके साथ कलैक्टर ने दिल्ली का शासन दस दिन के लिए आर्य संन्यासी को सोंप दिया। चिरञ्जी पहलवान और वालंटियरों को मुहल्ले-मुहल्ले शांति रक्षा के तैनात किया गया। इन दस दिनों में चोरी,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हत्या, डकैती की कोई वारदात नहीं हुई। थानों में मक्खियां भिन-भिनाती थीं। कोर्टों में मजिस्ट्रेट टांग फैला कर सोते थे। कोई काम नहीं था। आखिरकार वालंटियरों ने कलक्टर को खारी बावली में टाट्टर उठाकर दुकान में घूसते पकड़ा। सन्यासी के सामने पेश किया। वह कलक्टर को कैदी देखकर मुस्कुरा दिया। उसे बन्धन मुक्त करा दिया। कलक्टर बोला मान लिया भारतीय शासन करने के योग्य हैं। परीक्षण समाप्त हुआ। अब आराम कीजिए। मैं अब अपना काम सम्भालता हूं

विश्व इतिहास में एक नया पन्ना जुड़ा :—

एक मुस्लिम शहीद की अर्थी अन्त्य विधि के लिए जामा मस्जिद लाई गई। भीड़ ने मांग की सन्यासी बादशाह को बुलाओ। वर्तमान इमाम का पिता बुखारी इमाम था। वह पैदल नया बाजार पहुंचा और आर्य सन्यासी को लेकर शाही जामा मस्जिद पहुंचा और मिम्बर पर सन्यासी को खड़ा कर दिया। इस्लाम के इतिहास ने नई करवट ली। आर्य सन्यासी ने इस देश के महान् पूर्वजों की अमर वाणी वेदवाणी में मृत शहीद की सद्गति व शान्ति की प्रार्थना की गांधी-भक्त श्री ब्रज कृष्ण चांदी वाले ने रेडियो पर अपने एक भाषण में कहा था—वह उस समय हिन्दू कालेज में पढ़ता था। उस दिन जामा मस्जिद के मैदान में मुसलमानों की जितनी भीड़ जमा हुई थी फिर उतनीं कभी दिखाई नहीं दी। भारतीय राष्ट्रवाद की विजय पताका फहराई। इसने सिद्ध कर दिया राष्ट्रीय एकता के आधार भारत भूमि के प्रति भक्ति पूर्वजों के प्रति वेदवाणी कि श्रद्धा है। मुस्लिम जनता का हृदय भी आर्यजन के समान वेदवाणी सुनकर तरंगित होता है। उसकी नस नाड़ियों में आर्य रक्त प्रवाहित हो रहा है। यह अनुभूति उत्पन्न होने पर क्या यदि जामा मस्जिद से एक आर्य सन्यासी वेदपाठ कर सकता है तब इस्लाम की जरुरत ही क्या रह गई। ईस्लामी शक्ति का अन्त के बीज का वपन हुआ। यदि भारत प्रायद्वीप में इस्लाम तिरोहित हो जाये तो क्या विश्व में अन्यत्र जीवित रह सकेगा? जामा मस्जिद के मिम्बर पर क्रान्तिकारी आर्य सन्यासी का खड़ा विश्व इतिहास की एक अमर घटना है। पानी से खून गहरा होता है। यह तथ्य प्रकट होने पर भारत प्रायद्वीप से २५ करोड़ इस्लामियों को आर्य जाति के बाड़े में लाने में क्या देर लगेगी? क्या यह विश्व क्रान्ति का बीज वपन नहीं। तब फिर हिमालय गिरि शृंगों से घोष उठेगा—मह्यम् नमन्ता प्रदिशः चतूसः।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अटूट व अखण्ड गुरुभक्ति

महर्षि दयानन्द उन्नीसवीं सदी में एक मात्र एक महान भारतीय हुए, । इस महान व्यक्ति ने भारत राष्ट्र का दर्शन भारतीय जनता को कराया । प्राचीनतम अमरवाणी का उद्घोष किया ।

आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्
आराष्ट्रे राजन्यः शूरईषव्यो अतिव्याधी महारथो जायताम्
दोग्ध्री धेनु र्वोढाअनड्वानाशु सप्तिःपुरंधिर्योषा
जिष्णू रथेष्ठा सोयो युवास्य भजना नस्यवी रो जायताम्
जिकाने निकामे नः पर्जन्यो पलवत्यो न ओषधयः
पच्यंतां योगक्षेमो नः कल्पताम् (यज०-२२ वर्षतु २२)

ऋषि की इच्छापूति के लिए उसने गुरुकुल की स्थापना की थी। कुल वन्दना का एक पद है -- आदित्य ब्रह्मचारी ज्योति जगा गया है ।

अनुरुप पुत्र उसका कुल हो यही हमारा ॥

दूरदर्शी महात्मा ने अपने जीवन का अन्त इस पद में प्रकट किया—

बादल गरज रहे हैं छाने को है अन्धेरा,
बत्ती बनेगे जलेंगे तेरे सपूत माता ॥

विचार स्वातन्त्र्य का आंदोलन

शुद्धि आन्दोलन आर्य संन्यासी की दृष्टि में विचार एवं बुद्धि स्वातंत्र्य का आन्दोलन था। उसकि इस कर्त्तव्य को कांग्रेस द्वारा भेजी जाँच कमिटी के सदस्यों बेरिस्टर देश बन्धु दास और तीक्ष्णमति वकील श्री राजगोपालाचारी ने स्वीकार किया था। शुद्धि आन्दोलन में इन को कोई आपत्ति जनक कुछ मिला। आन्दोलन भारत राष्ट्र का विघटन करी नहीं था। पर इस प्रचंड तेज को इस्लाम न सह सका। "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे" के प्रचारक को अपनी इस्लामी गोली का २३ दिसम्बर १९२३ को शिकार बनाया। इस प्रकार भारत को इस्लाम का अड्डा बनाने एवं पाकिस्तान बनाने का पथ प्रशस्त किया। इस महान् भारतीय को शतशः प्रणाम ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दु कहे तो मारिये मुसलमान भी नां ।
पंज तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां ॥

जगत भिखारी फिरत है सबको दाता राम ।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहि काम ॥

चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय ।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय ॥

जो उपजिमो सो विनस है परो काल कै गाल ।
नानक हर गुन गाय ले छोड़ सकल जंजाल ॥

राम गयो रावण गयो. जाको बहु परिवार ।
कहु नानक थिर कछु नहिं सुपने जियुं संसार ॥

झूठ बखान कहा करे जग सुपनें जियुं जात ।
इनमें कछु तेरो नहीं नानक कहियो बखान ॥

बिरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की ।
लोभ ग्रसयो दसहु दिस धावत आस लगयो धन की

संग सखा सब तज गये कोऊ न निबाहियो साथ ।
कहु नानक एहूं बिपत में टेक एक.रघुनाथ ॥

—श्री गुरुनानक देव जी

जो हमको हरमेस उचरि है ।
ते सब नरक कुंड महिं परि है ॥

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चन्दू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—१८५, वालकेश्वर मार्ग, तीनबत्ती, बम्बई-४००००६

१. जावेरी बाजार २. ग्रांट रोड़ ३. कोलाबा ४. दादरा टी० टी० ५. वरल नाका ६. सर्कल ७. ठाकुर द्वार ८. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट ९. घाटकोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड़, बांदरा ११. रेलवे स्टेशन के सामने सांताक्रुज (पश्चिम)

कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड़
बम्बई-४००००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

यज्ञोपवीत की मर्यादा

–राकेशरानी

अंडमान का कारागार, ब्रिटिश राजसत्ता के दिन और क्रांतिकारियों के दमन का सिलसिला। एक लोमहर्षक अध्याय लिखा जा रहा था भारत की आजादी का।

रामरखा भी देशभक्ति के अपराध में कालापानी में कारावास भोग रहा था। आज उसे १०२ डिग्री बुखार था। इसलिए उसने काम करने से इन्कार कर दिया था।

टंडैल ने अपने प्रमुख बदरुद्दीन से रामरखा की गुस्ताखी की शिकायत कर दी थी। बदरुद्दीन डिप्टी जेलर को साथ लेकर आ पहुंचा था उस स्थान पर जहां रामरखा नारियल के छिलकों के ढेर पर बैठा हुआ था।

बदरुद्दीन ने रामरखा पर डंडों का प्रहार करना शुरू कर दिया किन्तु वह क्रान्तिदूत टस से मस नहीं हुआ। यातनाएँ सहते-सहते अब उसकी मन: स्थिति ऐसी बन गयी थी कि वह सोच रहा था मन ही मन कि बहुत-से-बहुत जान ही तो जाएगी। वह भी तो रोज-रोज की यातनाओं से मुक्ति ही दिलाएगी।

बदरुद्दीन ने टंडैलों को आदेश दिया उतारो इस ढीठ कैदी का कुर्ता और सहायक टंडैल ने रामरखा का कुर्ता फाड़कर उसके शरीर से अलग कर दिया।

और अब दिखाई दे रहा था रामरखा के शरीर पर जनेऊ (यज्ञोपवीत)।

बदरुद्दीन आश्चर्य और क्रोध से चीख उठा — अच्छा तो ओ बमवाले (क्रांतिकारियों को कालापानी में यही संज्ञा दी जाती है) तू ब्राह्मण है। किसने इजाजत दी है तुझे जनेऊ पहने रखने की यहां। तुरंत उतार दे इसे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामरखा अब भी सर्वथा निश्चल-सा ही बैठा रहा। बदरुद्दीन ने रामरखा की नंगी पीठ पर दो डंडे और जमा दिए और एक बार फिर से चीख उठा "निकाल दे यह जनेऊ।"

मर्मान्तिक वेदना को सहते हुए रामरखा असीम सहनशक्ति का प्रमाण देता था। तभी बदरुद्दीन आगे बढा और बोला—'अच्छा, तू नहीं उतारता तो अब मैं ही तोड़ूंगा तेरा जनेऊ।'' उसने रामरखा का जनेऊ उतारने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

बदरुद्दीन का हाथ आगे बढते हुए देखकर रामरखा सहसा ही उठ खड़ा हुआ और अपनी जर्जर काया की सारी शक्ति को संचित कर उसने बदरूद्दीन के मुंह पर तमाचा जड़ दिया। फिर रामरखा ने उसकी कनपटी पर अपने घूंसे का प्रहार किया। किंतु बदरुद्दीन ने बचने की कोशिश की तो रामरखा के मुक्के का प्रहार उसके थोबडे पर हो गया और बदद्रुदीन का एक दांत उसके मुंह से बाहर आ गया।

बस फिर क्या था बदरूददीन चीख पड़ा ''खून-खून।''

तभी वहां उपस्थित डिप्टी जेलर ने आदेश दिया" इस कैदी को हथकडियां लगाकर इसका जनेऊ निकलवाओ और इसे कोठरी में ले जाकर बंद कर दो।"

आज्ञा का पालन हुआ। रामरखा को कोठरी में बंद कर दिया गया और टंडैल बदरुद्दीन को अस्पताल पहुंचाया गया।

× × ×

और उधर जेल में अफवाह फैल गयी बम गोले वाले रामरखा ने मुखिया टडैल बदरुद्दीन की हत्या कर दी है। सभी टंडैलों में एक आतंक-सा व्याप्त हो गया।

दूसरी ओर मुख्य जेलर रामरखा की कोठरी के आगे आ खडा हुआ। उस समय बुखार और पीडा से ग्रस्त रामरखा की आंखें मुंदी-मुंदीं सी थी। अपनी कोठरी के सामने हलचल की आहट सुनी तो उसने आंखे खोली और जेलर से कहा "मेरा जनेऊ मुझे लौटा दो।"

जेलर ने उसकी बात को सुना-अनसुना कर सवाल किया ''क्या तुमने काम करने से इनकार किया है?"

''मुझे बुखार है, मेरे लिए काम कर पाना असंभव है, ''जवाब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

था रामरखा का।"

जेलर ने उसकी एक न सुनते हुए उसे हुक्म सुनाया "तुमने काम करने से इनकार कर दिया है, इसलिए तुम्हें हथकडी लगाए जाने की सजा दी जाती है।"

और इसके बाद जेलर ने रामरखा से पूछा "क्या तुमने अधिकारी को पीटा है?"

रामरखा ने जवाब दिया—कौन अधिकारी? वह बदरूद्दीन? अरे वह भी तो सजायाफ्ता अधिकारी ही है। उसने मुझे धमकियां दी मैंने सहन ही किया। उसने मुझ पर डंडे बरसाए मैंने झेल लिया लेकिन वह तो मेरा जनेऊ उतारने लगा था।"

"तुम जनेऊ नहीं पहन सकते।"

"लेकिन क्यों?"

इसलिए कि जनेऊ से तुम खुद को फांसी भी तो लगा सकते हो।"

"लेकिन जनाब हमारे कम्बलों और चादरों में भी तो धागे हैं, उनका भी तो इस्तेमाल किया जा सकता है, यदि खुद को फांसी हीं लगानी हो।"

"तुम मुझसे बहस मत करो रामरखा। मैंने कह दिया है कि तुम जनेऊ नहीं पहन सकते।"

"लेकिन वह तो मेरा धार्मिक प्रतीक है, मैं उसका त्याग कैसे कर सकता हूं।" रामरखा गरज उठा और साथ ही उसने यह घोषणा भी करदी कि "मुझे मेरा जनेऊ जब तक वापस नहीं दिया जाएगा मैं कुछ नहीं खाऊंगा। इसका नतीजा जो भी होगा उसके जिम्मेदार तुम ही होगे जेलर, यह ध्यान रखना।

× × ×

डाक्टर ने रामरखा की जांच की। औषधि का प्याला उसके सामने रखा गया और कहा गया इसे पिला दो एक दिन में तुम्हारा बुखार दूर हो जाएगा।"

"डाक्टर साहब, मैं आपका आभारी हूं। किंतु मैं दवाई नहीं पिऊंगा। जब तक मेरे गले में जनेऊ नहीं होगा मैं औषधि भी ग्रहण नहीं कर सकता।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिकारियों ने रामरखा का जनेऊ नहीं दिया और रामरखा भी अपने संकल्प पर अटल रहा। उसने भी औषधि ग्रहण नहीं की।

× × ×

रामरखा के अनशन का समाचार कानोंकान सारे कारागार में फैल गया था। छह दिन हो चुके थे रामरखा के अनशन को अब। अधिकारियों ने उसे मनाने के पूरे प्रयास किए किंतु उनकी एक नहीं चली। अन्ततः उन्होंने लाहौर कांड के एक बंदी जगतराम को रामरखा के समीप भेजकर अनशन तुडवाने का इरादा कराया।

श्री जगतराम ने अधिकारियों के समक्ष शर्त रखी कि जब वे रामरखा से बातचीत करेंगे तो वहाँ और कोई मौजूद नहीं रहेगा।

× × ×

रामरखा को कोठरी से अस्पताल स्थानान्तरित कर दिया गया।

"तुमने मुझे पहचाना रामरखा" जगतराम ने अर्ध मूर्छित- रामरखा से पूछा।

"अरे जगतराम, तुम यहाँ कैसे ?" रामरखा ने अपनी मंद-सी आवाज में सवाल किया।

वे दोनों ही पंजाब के होशियारपुर इलाके के थे। एक दूसरे से सर्वथा परिचित—देश के लिए ही एक-दूसरे से बिछुडे थे और आज अनायास मिल रहे थे।

"तुम्हारा अनशन तुड़वाने के लिए अधिकारियों ने मुझे भेजा है। मैं तुम्हारे नाम विनायक दामोदर सावरकर का एक पत्र भी लाया हूं। सावरकर बन्धु भी इन दिनों यहीं अंडमान के इस कारागार में हैं।

जांघिये के नेफे में छिपाये गये कागज का एक पुर्जा निकालकर जगतराम ने रामरखा की ओर बढ़ा दिया। उस कागज के पुर्जे पर केवल एक ही पंक्ति थी "प्रिय बंधु! आपके प्राण अन्य किसी अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए उपयुक्त है।" वि० दा० सावरकर।

और रामरखा सोचने लगे सावरकर! लंदन के इंडिया हाउस की आत्मा। पं० श्यामजी कृष्ण वर्मा के अनन्य सहयोगी। महर्षि दयानन्द के आदर्शों से प्रेरित पुण्य आत्मा। हम सब की प्रेरणा। १८५७ के स्वातन्त्र्य समर से युवा पीढ़ी को अवगत कराने वाले द्रष्टा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और रामरखा ने जगतराम से कहा सावरकर जी से कहना "मुझे दूसरा छोर दिखाई दे रहा है। अब तो उस पार जाने के मोह का मैं संवरण नहीं कर पा रहा।" उन्हें मेरा सादर प्रणाम कहना।

जगतराम लौट गया।

× × ×

पन्द्रह दिन बीत गए। रामरखा का अनशन जारी था। अधिकारियों ने उसका अनशन तुड़वाने का एक और प्रयास किया।

एक अंग्रेज अधिकारी उसके पास आया और उसने कहा "रामरखा जनेऊ में कुछ धागे ही तो हैं। उसे इतना महत्त्व क्यों दे रहे हो ?'

"मुझसे यह सवाल मत पूछो ?"

'किंतु क्यों ?"

"इसलिए कि मेरे उत्तर पर तुम्हें क्रोध आयेगा।"

"नहीं, बिलकुल नहीं। तुम अपनी बात कहो।"

"तो सुनो। जवाब देने से पहले मैं अपने जूते तुम्हारे राष्ट्रध्वज यूनियन जैक से साफ करना चाहता हूं।

अंग्रेज अधिकारी क्रोध से तड़प उठा लेकिन संयम बरता उसने।

और फिर रामरखा ने आगे कहा "यूनियन जैक तुम्हारा मान चिन्ह है और यज्ञोपवीत हम हिन्दुओं का। तुम मेरे जनेऊ में धागों की चर्चा कर रहे थे तुम्हारा यूनियन जैक भी तो केवल कपड़ा ही है न। सवाल है तो भावना का ही है।

अंग्रेज अधिकारी संभला और उसने पूछा "रामरखा, तुम्हरे घर पर कौन है ?"

"मां है।"

"उसे तो तुम्हारी मृत्यु पर बहुत दुःख होगा।"

रामरखा ने उसके कहने का तात्पर्य समझते हुए कहा "नहीं, नहीं कोई दुःख नहीं होगा।"

"क्यों ?"

'इसलिए कि मैं अकेला नहीं हूं।'

"क्या तुम्हारे और भाई भी हैं ?"

"हां, और उनमें से कई तो यहीं हैं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"क्या तुम्हारे और भाई भी अंडमान में है ? कौन हैं वे ?"

"हरनाम सिंह, बलवंत सिंह, जगत सिंह, जगतराम, हृदयराम, गणेश दामोदर सावरकर, विनायक दामोदर सावरकर, भाई परमानंद।"

"बस–बस।" जेलर ने उसे टोका।

जेलर सोच रहा था। कितना अलौकिक हैं इस युवक का अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम।

उसने रामरखा से कहा "मित्र, जिस दुनिया में तुम रहना चाहते हो, रहो, सुखी रहो।"

जेलर की आंखे भी भर आयीं और वह वहां से चल दिया।

× × ×

दस दिन बाद डाक्टर ने बल प्रयोग द्वारा रामरखा को नली को गले से पेट तक उतारकर दूध पिलाने की कोशिश की।

रामरखा की छाती फट गयी। रक्त की उलटियां हुई और रामरखा ने महाप्रयाण कर दिया।

और उसके बाद शासन की ओर से एक विज्ञप्ति जारी की गयी "जो भी जनेऊ पहनना चाहे वह पहने रह एकता है। उसे यह छूट दी जायेगी।"

१६१६ में अंडमान रामरखा के रक्त से रंग गया। उसके बाद जिन्होंने भी वहां जनेऊ पहना उन्हें यह जरूर स्मरण रहा कि रामरखा के रक्त से पुनीत है वह यज्ञोपवीत।

दयानन्द संस्थान के दो नये प्रकाशन

अंग्रेजी साहित्य
(उपलब्ध है)

दी हिस्ट्री ऑफ असैसिन्स ३०)

इन-साईड दी कांग्रेस ३०)

दोनों का सम्मिलित मूल्य ५०)
आदेश के साथ धन अग्रिम भेजें–

हिन्दी अनुवाद
(छप रहा है)

हत्यारों का इतिहास ४०)

कांग्रेस की अंत:कथा ४०)

दोनों का सम्मिलित मूल्य ८०)
आदेश के साथ धन अग्रिम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योग और स्वास्थ्य

–आचार्य 'प्रणव'

जन सामान्य आज के युग को विज्ञान का युग कहता है, क्योंकि आज विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है कि उसकी सहायता से मानव चन्द्रमा पर पहुँचता है मगल और शुक्र पर पहुचने की योजनाएं बनाता हैं। समुद्र और पृथिवी के अन्तस्तल तथा सुदूर आकाश में विद्यमान तत्वों के देखने और हो रही ध्वनियों को सुनने में वह उत्तरोत्तर सक्षम बनता जा रहा है। मानव द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में इतनी प्रगति के बाद भी क्या विज्ञान उसके शरीर और मन की पीड़ा को हर सका है? शायद नहीं। शरीर और मन की असंख्य बीमारियाँ आज भी उसे चुनौती दे रही हैं।

यह ठीक है कि विज्ञान की इस आश्चर्यजनक प्रगति ने चिकित्सा के क्षेत्र में भी बहुत उपकार किया है। अनेक पुराने रोगों का हम केवल नाम ही सुन रहे हैं। प्लेग के रोग को वर्तमान पीढ़ी ने प्रायः देखा ही नहीं है, चेचक और हैजा की बिभीषिका प्रायः समाप्त हो चुकी है, राजयक्ष्मा जैसे रोगों पर भी विज्ञान ने विजय प्राप्त कर ली है, किन्तु इनके स्थान पर अब नयी-नयी असंख्य बीमारियां पैदा हो रही हैं। कुपोषण से उत्पन्न होने वाले रोगों का स्थान अत्यधिक सम्पोषण से उत्पन्न रोगों ने ले लिया। रक्तचाप, अल्सर, कैंसर और हृदय की व्याधियाँ स्थापित हो गयी हैं उसी विभीषिका के साथ जो पहले कभी प्लेग, हैजा और चेचक के साथ थी। पहले सुदूर पहाडियों बनों और एकान्त प्रदेशों में अकेलेपन के कारण जीवन की अनिश्चितता भय का कारण थी, अब इसके बिपरीत सघन नगरों में आत्मघाती वातावरण और प्रदूषण हमारे जीवन को अनिश्चित बनाए हुए हमारी सत्ता को भी चुनौती देने को तत्पर है।

बिकास के साथ सभ्यता और सुसंस्कृत जीबनचर्या ने जहां हमें उपकृत किया है, वहीं हम प्राकृतिक जीवन पद्धति से अलग हो गये हैं, जिसका परिणाम है कि मानसिक अशान्ति, द्वन्द्व, तनाव, निराशा आदि मानसिक महाव्याधियां हमारा सुख चैन छीन रही हैं।

क्या इस समस्या का कोई समाधान है? यदि हम बीमार होते हैं तो क्या स्वतः को किसी स्तर तक स्वस्थ बनाने में सक्षम हैं? क्या ऐसा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं हो सकता कि हम अपने शरीर को ऐसा दुर्भेद्य दुर्ग बना लें कि इसमें रोग रूपी शत्रु का प्रवेश ही न हो सके ? क्या हम आने वाली बीमारियों को, बुढापे को, अपने से दूर ही रख सकते हैं ? क्या हम मृत्यु पर विजय प्राप्त करके सौ दो सौ चार सौ वर्षों तक जी सकते हैं ? यदि विज्ञान के बल पर हम चांद पर पहुँच सकते है, भारहीनता की स्थिति में अपने को संस्थापित कर सकते हैं, समुद्र तल और पृथ्वी तल के रहस्यों को देख सकते हैं, तो उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर भी सकारात्मक ही होना चाहिए। यह सकारात्मक संभावना केवल कल्पना की ही वस्तु नहीं है रामायण, महाभारत और पुराणों से प्राप्त इतिहास यह सूचित करता है कि मानव मृत्यु को जीतता रहा है। यजुर्वेद यह घोषित करता है कि उसके पास तिगुनी आयु प्राप्त करने के कई उपाय थे।* परवर्ती योग ग्रन्थों में भी वृद्धावस्था (जरा) पर विजय के अनेक उपाय बताये गये हैं। आवश्यकता केवल उनके जानने और उपयोग करने की है।

योगविद्या इन समस्याओं का समाधान करोड़ों वर्षों से कर रहा है, हमारा मार्गदर्शन कर रहा है। योग साधना हमारे शरीर में पहले से ही विद्यमान किन्तु सोई हुई शक्तियों को जगाने का उपाय है। इसके प्रभाव से हम समस्त शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की बीमारियों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और स्वयं को इन तमाम कष्टों से मुक्त कर सकते हैं।

इस तथ्य को बिना विवाद के स्वीकार किया जाता है कि अधिसंख्य बीमारियाँ मानसिक तनावों के कारण उत्पन्न होती हैं ! यहां तक कि सम्पूर्ण रूप से शारीरिक मानी जाने वाली बीमारियाँ राजयक्ष्मा (टी०बी०) कैन्सर और अलसर आदि भी मन की निर्बलता अथवा मन पर भारी दबाव से उत्पन्न होते हैं। इन रोगों का मूल हमारे शरीर की रक्षात्मक प्रणाली में अदक्षता आना है, और यह अदक्षता बहुत कुछ मन के कारण आती है। मन के निर्बल होने, रोगी होने अथवा भारग्रस्त होने के कारण आती हैं। आधुनिक चिकित्सा शास्त्र भी अब यह स्वीकार करने लगा है कि ये और इस प्रकार के अनेक रोग मन के तनाव के परिणाम हैं। योग-विज्ञान के अनुसार तो प्राय: सभी रोग मन के भीतर उत्पन्न द्वन्द्व के

---

* त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद् देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ।। यजुर्वेद :

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं, केवल कुपोषण आदि से उत्पन्न रोग ही इसके अपवाद हैं। किन्तु ये भी निर्बल मन के व्यक्ति की अपेक्षा स्वस्थ और सबल मन वाले व्यक्ति को कम प्रभावित कर पाते हैं। दूसरे शब्दों में यों भी कह सकते हैं कि स्वस्थ और सबल मन वाला व्यक्ति कुपोषण आदि से उत्पन्न रोगों का प्रतिरोध कर लेता है और सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक स्वस्थ बना रहता है। अतः योग विज्ञान के अनुसार हम कह सकते हैं कि शरीर में होने वाली प्रायः सभी बीमारियों की जड़ मन है और हमें सर्व प्रथम मन का ही उपचार करना चाहिए। मन भौतिक शरीर में व्याधियों को किस प्रकार उत्पन्न करता है ?, इस प्रश्न पर हमें सर्वप्रथम विचार करना चाहिए।

यह निर्विवाद रूप से स्वीकृत तथ्य है कि मन केन्द्रीय स्नायु संस्थान (Central nervous system) के माध्यम से निम्नलिखित स्तरों से होते हुए शरीर को प्रभावित करता है।

१. सोमेटिक नर्वस सिस्टम— (चैतनिक स्नायु संस्थान) यह शरीर की ऐच्छिक गतिविधियों को नियन्त्रित करता है, जैसे—चलना, बोलना शरीर की विभिन्न मांस पेशियों का उपयोग करना।

२. अटोनामिक नर्वस सिस्टम— यह शरीर की अनैच्छिक गतिविधियों का नियामक है। रक्त चाप, हृदय की धड़कन, पाचन अंगों की समस्त क्रियाएं इसके अन्तर्गत आती हैं।

३. इण्डोक्राइन ग्रन्थियां—ये ग्रन्थियां हार्मोन बनाती हैं। ये वे रसायन हैं जो शरीर के अन्दर के रसायनों से प्रतिक्रिया करते हैं और शरीर को अनेक प्रकार से प्रभावित करते हैं।

मन नर्वस सिस्टम के माध्यम से शरीर के प्रत्येक सेल, अंग-प्रत्यंग और सभी प्रणालियों को प्रभावित करता है।

योग चिकित्सा की कार्य पद्धति–

योग चिकित्सा निम्नलिखित प्रकार से प्रभावकारी होती है—

१. चिकित्सा के क्षेत्र में योग का प्रथम कार्य है प्रभावित अंगों को सामान्य अवस्था में लाना। उदाहरणार्थ मानसिक तनाव के कारण एक व्यक्ति के सिर में दर्द रहता है, मेरु दण्ड (रीढ़ की हड्डी] में ऐंठन है, इस स्थिति में यौगिक उपचार से सिरदर्द, मेरुदण्ड की ऐठन दूर होती है, तनाव से प्रभावित शरीर के अंग सामान्य अवस्था में आ जाते हैं अर्थात्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रोगग्रस्त श्रंगों को योग श्रभ्यास प्रभावित करता है श्रौर रोगों के चिह्न पीड़ा आदि दूर होती हैं।

२. योगाभ्यास से केन्द्रीय स्नायु संस्थान (Central nervous system) से सम्बन्धित श्रंगों का सन्तुलन हो जाता है श्रौर वे सामान्य श्रवस्था में श्रा जाते हैं। उदाहरणार्थ—कुकुंजर श्रादि का श्रभ्यास अटोनामिक नर्वस श्रौर प्लेक्सस को सीधे प्रभावित करता है। इसके परिणाम स्वरूप दमा के रोगों के सिम्पेथेटिक और पैरा–सिम्पेथेटिक से से सम्बन्धित प्रणालियां सामान्य हो जाती हैं। फेफड़े की ब्रोंकाइल नलियां खुल जाती हैं और रोगी की श्वास–प्रश्वास की क्रिया सामान्य होने लग जाती है ।

३ योगाभ्यास का केन्द्रीय स्नायु संस्थान (Central Nervous System) पर भी प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है । उदाहरणार्थ भ्रामरी प्राणायाम श्रथवा योगनिद्रा आदि मस्तिष्क को सीधे प्रभावित करते हैं। परिणामस्वरूप ये मन पर तत्क्षण गहरा शिथिलीकरण उत्पन्न करते हैं।

४ योगाभ्यास रोग के कारणों को भी दूर करता है, ध्यान का श्रभ्यास योगनिद्रा (शवासन) का अभ्यास तनाव को दूर करता है। श्रासनों का श्रभ्यास हड्डियों के जोड़ों पर एकत्रित हो रहे विजातीय तत्त्वों के जमाव को ही दूर कर देता है, जिसके कारण श्रनेक रोग उत्पन्न हो रहे थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि योग एक सर्वाङ्गीण श्रौर सम्पूर्ण उपचार की पद्धति है। यह पद्धति शरीर से लेकर मन तक के सभी श्रंगों-उपांगों की कार्यप्रणाली को पूर्णतया शुद्ध श्रौर निर्दोष बनाकर उन्हे दक्ष बनाती है। स्थूल श्रौर सूक्ष्म नाड़ियों को भी श्रपने प्रभाव से दोष रहित करती हैं जिसके परिणाम स्वरूप रोगों के लक्षण शान्त हो जाते हैं, रोग लक्षणों (पीड़ा श्रादि) की शान्ति के साथ ही रोग को दूर करती है, रोग क कारणों को दूर करती है और शरीर के स्थूल श्रौर सूक्ष्म सभी श्रंगों और उपांगों के दोषों को दूर करके भविष्य में भी रोग की संभावना को समाप्त करती है। चिकित्सा के क्षेत्र में इतना व्यापक प्रभाव कोई भी अन्य चिकित्सा पद्धति नहीं कर पाती।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ भविष्य का ध्यान करो !

—प्रो० सारस्वत मोहन 'मनीषी'

भूत काल को रोने वालो
वर्तमान को ढोने वालो
ऐसे कब तक काम चलेगा कुछ भविष्य का ध्यान करो
चाहो देश रह सके जीवित अपना जीवन दान करो
बंटवारा जो करवाया है प्रकट उसी पर खेद करो
जिस थाली में खाना खाते उसमें तो मत छेद करो
अपने होकर गैरों जैसा मत निर्दय बर्ताव करो
अपनी माता की छाती में रोज नये मत घाव करो

समय बड़ा नाजुक है भैया
नचवा देगा ता-ता-थैया

बनकर कृष्ण कन्हैया फिर कंसों पर शर-संधान करो
चाहो...
औरंगजेब हुआ फिर जीवित 'राणा-शिवा' तलाश करो
आस्तीन के साँपों का तुम जरा नहीं विश्वास करो
'राम-कृष्ण' के बेटो जागो पानी सर तक आ पहुंचा
सोचो, समझो, संभलो अब तो दुश्मन घर तक आ पहुंचा
ओ कुर्सी के ठेकेदारो
ओ शरीफ दिखते बटमारो !
ज्यादा ही चढ़ जाय न सिर पर इतना मत सम्मान करो
चाहो...
भारत माँ का कभी खून से हो सकता शृंगार नहीं
घावों को राहत शीतलता दे सकते अंगार नहीं
देश पेट के लिए बेचकर कोई निशदिन हंसता है
केवल कुर्सी पूज रहे हैं ऐसी क्या परवशता है
देशभक्त लगते गद्दारो !
अरे स्वस्थ लगते बीमारो !
धुंध बढ़ गई है मजहब की इसका तुरत निदान करो
ऐसे कब तक काम चलेगा, कुछ भविष्य का ध्यान करो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू—एक राष्ट्रीय संबोधन

—ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ

हिन्दू नाम न तो साम्प्रदायिक है और न राष्ट्र-विरोधी ही । यह युगो से इस देश की राष्ट्रीयता का बोधक बना हुआ है। किसी राष्ट्रीय समूह को हिन्दू की संज्ञा देना दोषपूर्ण या देश-विरोधी बात नहीं है। हिन्दुत्व की थाती राष्ट्रीय एकता की सर्वाधिक सुगठित शक्ति रही है, जिसने विभिन्न जातियो, विरोधी जलवायु अनेक भाषागत और धार्मिक विश्वासो की भिन्नताओ के बीच इस देश को एक राष्ट्र बनाया है। हम देखते हैं कि आज भूतल से सभी पुरातन सभ्यतायें मिल चुकी हैं और संसार की महानतम शक्तियो के निरन्तर आघातो के पश्चात और भारत विविध जलवायु, जातियों, भाषाओ और धार्मिक विश्वासो के होने पर भी, एक राष्ट्र के रूप में जीवित है। इसका कारण यह है कि भारत के इतिहास में केवल एकात्म का भाव हिन्दुत्व ही रहा है हिन्दुत्व एक ऐसा एकीभत तत्व रहा है, जिसने सबको एक राष्ट्र के रूप में मिला दिया है।

दुर्भाग्य से हमारे राष्टीय नेता देश में हिन्दुत्व की एकीकरण शक्ति को अंगीकार करने में असफल रहे हैं। अगर हमारे धर्म-निरपेक्षतावादी विचारक विसेण्ट स्मिथ, सरदार पणिक्कर तथा अन्य लेखकों द्वारा लिखित भारत का इतिहास पढे तो देखेंगे कि देश के विभेदक और विरोधी तत्वो की एकसूत्रता और राष्टीय एकता का आधार एक मात्र हिन्दुत्व की भावना ही रही है। बहुत से विचारक हिन्दू शब्द के अर्थ से घबरा जाते हैं क्योकि वे यह समझने में असफल रहते हैं कि हिन्दू उस ऐतिहासिक प्रक्रिया की संज्ञा है, जिसने सभी धर्मो संस्कृतियो और सामाजिक प्रभावो को एक राष्ट्र के रूप में प्रतिष्टापित किया है ।

अतः जो हिन्दुत्व को विभेदक और पक्षपात-पूर्ण बताकर उसकी निन्दा करते हैं वे इस ऐतिहासिक प्रक्रिया की गरिमा को नही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समझ सके । जो लोग भारत में राष्ट्रीय एकता की स्थापना करना चाहते हैं, उन्हें इस एकीकरण की शक्ति हिन्दुत्व का अधिकाधिक उपयोग करना है भिन्न भाषा-भाषियो के, विपरीत जलवायु में निवास करने वालो विभिन्न रीति-रिवाजों और विश्वासों के लोगों को राष्ट्र के रूप में ढाल सके।

राष्ट्रीयता का परिचायक हिन्दुत्व

भाषा, जाति, प्रदेश और अन्य विघटनकारी प्रवृतियों की बढती हुई दुश्चिन्ताओ का एक मात्र निदान हिन्दुत्व ही है भारत के विभिन्न तीर्थस्थान, हमारी प्राचीन सामाजिक मान्यतायें और सामान्य आचरण संहिता हमारे हिन्दुत्व के व्यक्तिगत सिद्धान्त और धार्मिक ग्रन्थो में प्रतिपादित अनुष्ठान इन सबने एक राष्ट्र के रूप में हमें एकत्र करके महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है। हमारी पैतृक भाषा के रुप में संस्कृत और राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी ने भी देश की राष्ट्रीय एकता के गठन में बहुत बड़ा कार्य किया है ।

हमारे नेताओ ने राष्ट्र के समस्त खण्डो को एक सूत्र में बांधने के लिए इस महान राष्ट्रीय प्रभाव को भुला दिया है। हम जानते हैं कि दक्षिण भारत के महान आचार्यो का सम्मान दक्षिण भारत की अपेक्षा उत्तर भारत में कहीं अधिक हुआ और भारत के उत्तरी अंचल में प्रवाहित होने वाली गंगा को समूचे देश में दक्षिण पूर्व और पश्चिम की किसी भी नदी की अपेक्षा अधिक पवित्र समझा गया है । राम और कृष्ण जैसे हमारे राष्ट्र नायको और उनके जन्म स्थानो को सम्पूर्ण देश में श्रद्धा का केन्द्र माना जाता है। यह केवल हिन्दुत्व के व्यापक प्रभाव के कारण सम्भव हुआ ।

हिन्दू मुस्लिम एकता के मिथ्या नारे के परिणाम स्वरूप भारत का विभाजन हुआ और इस समय अलग-अलग नाम के आधार पर देश के विघटन का भय पुनः उत्पन्न हो गया है । देश की पूर्ण राजकीय एकता का प्रश्न आज राष्ट्रीय क्षितिज पर पूरी तरह छाया हुआ है जो करीब १०० वर्षों से चली आ रही सम्प्रदायातीत राष्ट्रीयता का ही प्रत्यक्ष परिणाम है। हमें उन अवसरो को ढूढना है जब हम सारे तत्वो को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप मे बांधने के लिए हिन्दू राष्ट्रीयता का उपयोग कर सकें ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संगीत सम्राट् तानसेन हिन्दू थे

—क्रान्तिकुमार वैद्य

संगीत के क्षेत्र में संगीत साम्राट, तानसेन का नाम अमर है। उनके जीवन में सम्बन्ध में अनेक ऐसी घटनाएं हैं जिन पर आज भी शोध जारी है। उज्जैन निवासी संगीतज्ञ डा० प्यारेलाल श्रीमाल सरस पंडित ने तानसेन के सम्बन्ध में कई प्रामाणिक तथ्य एकत्रित कर अनछुए पहलुओं को उजागर किया है।

डा० श्रीमाल का मत है कि तानसेन अपने समय के ऐसे असाधारण गायक हुए जो भारतीय संगीत का पर्याय बन गये। किन्तु इतिहास ने उनके साथ काफी मखौल किया है। तानसेन उनका बास्तविक नाम नही था। यह तो उन्हें राजा मानसिंह तोमर के पुत्र विक्रमाजीत (सन् १७१६ १८ई०) द्वारा प्रदान की गई उपाधि थी। तानसेन मृत्युपर्यन्त हिन्दू रहे जबकि उनके बारे में यह भ्रामक प्रचार किया गया है कि उन्होने मुस्लिम धर्म अंगीकार कर लिया था।

मध्यकाल में कई एतिहासिक घटनाओं को बहुत तोड़मरोड़ कर प्रचारित किया गया जिनके सम्बन्ध में अब शोध से वास्तविक तथ्य सामने आ रहे हैं। जैसे कुछ लोग 'कहे मियाँ तानसेन' ध्रुपदों में आने से उनका मुसलमान होना मानते हैं। मियां एक आदर-सूचक शब्द है जो मुस्लिम रियासतों में हिन्दू-मुसलमान दोनों के लिए प्रयुक्त किया जाता रहा है। इससे तानसेन का मुसलमान होना सिद्ध नहीं होता।

तानसेन मृत्युपर्यन्त हिन्दू रहे। यह इससे सिद्ध होता है कि तानसेन ने बादशाह अकबर को हमेशा बायें हाथ से मुजरा किया—कारण यह रहा कि जिस हाथ से वह अपने प्रिय आश्रयदाता रीवा के तत्कालीन राजा रामचन्द्र को मुजरा किया करते थे, उस दाहिने हाथ को उन्होंने उन्हीं के लिए रख छोड़ा था। यह बात अलग है कि कूटनीतिज्ञ अकबर ने इस घटना को गम्भीरता से नही लिया। तानसेन जैसा व्यक्ति अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए जान की बाजी लगा सकता था वह धर्म की खातिर अपने को बेंच दे यह सम्भव नही लगता।

हबेली संगीत में तानसेन के पदो का गाया जाना दूसरा कारण है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो उनका हिन्दू होना सिद्ध करता है। यवनो द्वारा भैरवी का प्रयोग कर लेने से वह अस्पृश्य हो गया ऐसा मानकर हवेली संगीत में भैरवी राग व्यवहार में नही लिया जाता। कठोर मर्यादाश्रो में बँधा हवेली सगीत श्राज भी श्रपनी परम्परा को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं।

नाथद्वारा के श्रीनाथ जी के मन्दिर में जो कीर्तन गाए जाते है वे हवेली संगीत के नाम से प्रसिद्ध है। जब कि अस्पृश्य होने पर एक राग के लिए जिस मन्दिर में प्रवेश निषिद्ध है तब मुसलमान बनने पर तानसेन के पद वहां कैसे गाये जा सकते थे।

मुगल शासक जब किसी मुसलमान गायक को उपाधि प्रदान करते थे तब उसके पीछे 'खाँ' लगा होता था। उदाहरण के लिए शाहजहां ने लालम खां को उपाधि दी थी। गुलशन मन्दरखां। बादशाह अकबर ने तानसेन को जो उपाधि दी वह थी 'कण्ठाभरणवाणीविलास'। इससे भी स्पष्ट है कि तानसेन मुसलमान नहीं बने थे।

श्रकबर के नवरत्नों में तानसेन के श्रलावा एक थे श्रबुलफजल। इनका देहावसान तानसेन के बाद हुश्रा। उन्होनें अकबर नामा ग्रन्थ लिखा जिसमें वह लिखते हैं कि तानसेन की मृत्यु श्रागरा में हुई श्रौर उनके शव को डोल के रूप में निकाला गया। डोल के आगे लोग गाते बजाते चल रहे थे। प्रश्न उठता है कि क्या मुसलमानो मे डोल निकाला जाता है? या कभी शव के श्रागे लोग गाते बजाते हुए चलते हैं यह विशुद्ध हिन्दू परम्परा है इन सब बातों से सिद्ध होता है कि संगीत सम्राट् तानसेन हिन्दू थे।

वैदिक संपत्ति

स्वर्गीय पंडित रघुनन्दन शर्मा की अमर कृति—
भारतीयता के प्रत्येक उपासक के लिए पठनीय।

कपड़े की जिल्द : मूल्य ८१)

अभी —६१) मे मंगाइये

दयानन्द संस्थान, वेद मंदिर

नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आइये, दिलों में पड़ी दरारों को भरें

संविधान की धारा २६ में जो विशेष रूप से पूजा स्थलों से ही संबन्धित है। स्पष्ट कहा गया है कि उन्हें दिये गये सभी अधिकार सार्वजनिक व्यवस्था के अधीन हैं। इस बात का समर्थन स्वयं अकाली दल ने मई १९६० के अपने एक प्रस्ताव द्वारा किया था, जिसमें कहा गया था कि वह अपना आंदोलन संवैधानिक रखेगा, और "यदि पूजा स्थलों का उपयोग उनके प्रवन्धकों द्वारा सरकार का प्रतिरोध करने या कानून का उलंघन करने वाली प्रवृत्तियों का समर्थन करने के लिए किया गया, तो उसे असंवैधानिक माना जायेगा

आजकल उन सिख भाई-बहनों को, जो सरकार द्वारा स्वर्ण मन्दिर में कार्रवाई करने के कारण क्षुब्ध हैं, अकाली दल की इस मान्यता की याद दिलाना आवश्यक है। उन्हे बड़ी हमदर्दी के साथ यह बताना भी जरूरी है कि यह कार्रवाई नैतिक रूप से अनिवार्य हो गयी थी तथा आतंकवादियों की गतविधियों ने सरकार के सामने कोई और विकल्प शेष नहीं छोड़ा था। अब इस वारे में तो कोई संदेह शेष रह ही नहीं गया है कि इन आतंकवादियों का इरादा पंजाब में एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने का था। सिखों से पूछा जा सकता है कि यदि खालिस्तान बन भी गया तो क्या वे वहां भारत से पृथक् कोई स्वतन्त्र राज्य वनने देंगे।

इससे पूर्व भी अनेक अवसरों पर स्वयं अकालियों ने स्वर्ण मन्दिर में गड़बड़ी पैदा होने पर सरकार से स्वर्ण-मन्दिर में पुलिस या सेना भेजने की माँग की थी। १९५० में जब निहंगों ने अपनी बन्दूकों के लिए लाइसेंस लेने से इन्कार कर दिया था, तो मेहसाम पुर गुरुद्वारे में उन्हें पकड़ने के लिए सेना ने प्रवेश किया था। मुठभेड़ मे सेना के ४ जवान मारे गये थे। तब किसी सिख ने सेना की इस कार्रवाई का विरोध नहीं किया था

अनेक भारतीयों मे यह भ्रामक धारणा व्याप्त है कि आतंकवादियों को सभी सिखों का समर्थन प्राप्त था आतंकवादियों को वास्तव में उन विदेशी ताकतों का समर्थन प्राप्त था, जो देश को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खंडित और निर्बल देखना चाहती हैं। सिखों तथा हिन्दुओं की एकता के आगे उनकी एक न चली और उनके मंसूबे बेकार हो गए। आज जरुरत इस बात की है कि हिन्दू और सिख दोनों अपने सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से इस एकता को और ज्यादा मजबूत करें।

जनता, सरकार, सीमा-सुरक्षा बल तथा सेना को भविष्य में इस बारे में सतर्क रहना है कि पड़ोसी देशों से अवैध रूप से हथियार भारत में न आ पाए और आतकंवादी अपना सिर दुबारा न उठा पाए।

स्थिति जब सामान्य हो जाये, तब सरकार को स्वयं नरम दल के अकाली नेताओं के साथ बात करने की पहल करनी चाहिए। अकाली नेतानों को भी इस भावना के साथ बातचीत में भाग लेना चाहिए कि उन्हें मिलजुलकर कोई स्थायी और समाधानकारक हल खोज निकालना है। उन्हें ऐसी माँगें पेश नहीं करनी चाहिए, जो समूचे राष्ट्र के हित को ध्यान में रखकर पेश की गयी हों और जिनसे पंजाब के पड़ोसी राज्यों के न्यायोचित अधिकारों का हनन होता हो। उनकी माँगें न्यायोचित होने के अलावा वास्तविकता से पूर्ण भी होनी चाहिए।

खुद राष्ट्रपति महोदय को इस बात पर आश्चर्य हुआ था कि स्वर्णमंदिर परिसर में इतनी भारी मात्रा में विदेशी हथियार कैसे जमा हो सके? उन्होंने इस संबंध में आवश्यक जांच कराने का सुझाव भी दिया था। सरकार को चाहिए कि इस बारे में एक उच्च-स्तरीय न्यायिक जांच आयोग का गठन करें जो यह मालूम करे कि ये हथियार (तथा नशीले पदार्थ) स्वर्णमंदिर में कहां से, कैसे और किन माध्यमों के अवैध सहयोग से अमृतसर पहुंचते थे। जांच के बाद जो व्यक्ति दोषी पाये जायें, उन्हें दंड देने में सरकार को कोई रिआयत नहीं दिखानी चाहिए।

सरकार को शीघ्रताशीघ्र एक ऐसा कानून भी पारित करना चाहिए, जिसके अनुसार कोई भी पूजा स्थल हथियारों का अड्डा या अपराधियों और हत्यारों का आश्रय-स्थल न बनने पाये।

आज सिर्फ सरकार ही नहीं, सारे राष्ट्र को एकजुट होकर इस गंभीर संकट का सामना साहस और सूझबूझ से करना है, ताकि ऐसा गंभीर संकट, जो स्वतन्त्र भारत के इतिहास में कभी उत्पन्न नहीं हुआ था, दुबारा न उत्पन्न हो पाये। आज इस संकट से उत्पन्न स्थिति को सामान्य करने की आवश्यकता है, न कि विद्वेषपूर्ण तथा मनोमालिन्य बढ़ाने वाली बातें कहकर उसे और विस्फोटक तथा तनावपूर्ण बनाने की।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

बाल जगत

बभ्रुवाहन

—प्रेमचन्द शास्त्री

बच्चो ! बभ्रुवाहन का नाम आपमें से बहुत कम ने सुना होगा। वह अर्जुन का पुत्र था। जिस प्रकार त्रेता युग में लव और कुश का युद्ध अपने पिता रामचन्द्र जी के साथ हुआ था, उसी प्रकार द्वापर युग में बभ्रुवाहन का भी युद्ध अपने पिता अर्जुन के साथ हुआ था। इसकी कथा इस प्रकार है :—

महाराजा युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ करने का विचार किया और इसके लिए श्री कृष्ण जी की सलाह ली। श्री कृष्ण जी ने कहा कि अब अच्छा अवसर है। आप अश्वमेध यज्ञ अवश्य कीजिए। श्री कृष्ण की बात मानकर युधिष्ठिर ने यज्ञ करने का विचार पक्का बना लिया।

वेदव्यास मुनि ने युधिष्ठिर से कहा-हे युधिष्ठिर ! चैत्र की पूर्णिमा में तुम्हारी दीक्षा होगी, इसलिए यज्ञ की सामग्रियों को इकठ्ठा करो। अश्व विद्या जानने वाले सूत और ब्राह्मण तुम्हारी यज्ञसिद्धि के लिए घोड़े की परीक्षा करें घोड़े की परीक्षा हो जाने पर शास्त्र के अनुसार उसे छोड़ो और वह घोड़ा तुम्हारे यश को प्रदर्शित करता हुआ समस्त पृथ्वी पर भ्रमण करे। मुनि की आज्ञा से युधिष्ठिर ने सब सामग्री इकट्ठी कर ली। फिर मुनि ने कहा कि घोड़ा आज ही छोड़ो। युधिष्ठिर के पूछने पर घोड़े की रक्षा करने के लिए मुनि ने कहा कि अर्जुन पृथ्वी को जीतने में समर्थ है, उसके पास दिव्य अस्त्र, दिव्य धनुष और दिव्य बाण विद्यमान है, इसलिए अर्जुन ही उस घोड़े की रक्षा करें। मुनि की आज्ञा से युधिष्ठिर ने अपने परम प्रतापी वीर भाई अर्जुन से कहा कि जाओ, तुम इस घोड़े की रक्षा करो। तुम्हारे सिवाय अन्य कोई भी वीर इसकी रक्षा करने में समर्थ नहीं है। उन्होंने फिर कहा कि हे वीर ! यदि कोई राजा तुम्हारे विरुद्ध आचरण करे, तो जिस भांति तुम्हारे साथ उसका युद्ध न हो वही उपाय करना और उन राजाओं को मेरे इस यज्ञ का स्वागत करके यज्ञ के अवसर पर आने के लिए उन्हें निमन्त्रण देना।

इतना कह अश्वमेध यज्ञ के लिए वह घोड़ा छोड़ दिया गया। वीर अर्जुन सफेद घोड़े पर चढ़कर धर्मराज युधिष्ठिर की आज्ञानुसार अपने गाण्डीव धनुष को चढ़ाकर उस यज्ञ के घोड़े के पीछे-पीछे चलने लगे। उस समय उस घोड़े और गाण्डीवधारी अर्जुन को देखने के लिए नर-नारियों की अपार भीड़ एकत्रित हो गई। वे लोग कहने लगे कि वह घोड़ा जा रहा

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है, उसके पीछे महाबाहु कुन्तीपुत्र अर्जुन धनुष धारण करके जा रहे हैं। कुछ पुरुषों ने जाते हुए अर्जुन को देखकर कहना आरम्भ किया कि हे अर्जुन ! तुम्हारा कल्याण हो, तुम गमन करो, फिर आना तुम्हारा मंगल हो, तुम्हारा मार्गभय रहित हों। नर-नारियों के ऐसे मधुर वचन सुनकर अर्जुन चलने लगे। पाण्डवों द्वारा जो देश पहले जीते गए थे, घोड़ा उन्ही देशों में विचरण करने लगा। वहाँ पर अर्जुन का घोर महायुद्ध हुआ। वे लोग अर्जुन की शरण में आकर निवेदन करने लगे कि हमें आज्ञा कीजिये, हम वही करेंगे। अर्जुन ने उन्हें अश्वमेध यज्ञ में आने का निमन्त्रण दिया।

त्रिगर्त के बाद यज्ञ का घोड़ा नगर ज्योतिषपुर में गया। वहाँ भी भगदत्त के पुत्र व्रजदत्त ने घोड़े को पकड़ा। अर्जुन का उससे भी भयंकर युद्ध हुआ। इसी प्रकार वह घोड़ा आगे-आगे चलता रहा, और अर्जुन ने वहाँ-वहाँ के लोगो को युद्ध में परास्त करके अपने अधीन किया और अश्वमेध यज्ञ में आने का निमन्त्रण दिया।

अर्जुन ने मणिपुर की राजकन्या चित्रांगदा से विवाह किया था। घोड़ा सभी देशों में विचरता हुआ मणिपुर में प्रविष्ट हुआ वहां का राजा बभ्रुवाहन अपने पिता अर्जुन का आगमन सुनकर अनेक प्रकार की भेंट और धन को लेकर ब्राह्मणों सहित विनीतभाव से उसके समीप आया। बभ्रुवाहन के इस प्रकार आने पर अर्जुन ने क्षत्रिय धर्म का स्मरण कर क्रोधपूर्वक उससे कहा कि तुम्हारा यह कार्य ठीक नहीं हैं। तुम क्षत्रिय धर्म के बाहर हो। मैं युधिष्ठर के यज्ञीय घोड़े की रक्षा करता हुआ तुम्हारे राज्य में आया हूं, तुम मेरे साथ युद्ध क्यों नही करते! हे मूर्ख! तू क्षत्रिय धर्म के बाहिर हुआ है, मेरे युद्ध के लिए आने पर, जब तू युद्ध न करके शान्ति का व्यवहार कर रहा है, तब तुझे धिक्कार है। मैं तो युद्ध के लिए यहां आया हूं और तू स्त्रियों की भांति मुझे शान्त करना चाहता है। यदि मैं शस्त्र रहित होकर तेरे पास आता, तो तेरा ऐसा करना ठीक होता। पिता द्वारा बार बार तिरस्कार के वचन सुनकर वह तेजस्वी राजा बभ्रुवाहन को जोश आ गया और उसने युद्ध करने का विचार बना लिया। वह सुवर्ण से बने कवच आदि धारण करके एक सौ तरकस लेकर युद्ध की सब सामग्रियों के साथ तेज दौड़ने वाले उत्तम घोड़े के रथ पर बैठ गया। अनन्तर उसने यज्ञ के घोड़े के निकट जाकर उसे पकड़ लिया। अर्जुन ने जब देखा कि उनके पुत्र बभ्रुवाहन ने घोड़े को पकड़ लिया है तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसको रोकने लगा। दोनों में युद्ध आरम्भ हो गया। राजा बभ्रुवाहन ने विषैले सर्प सदृश विष में बुझे हुए बाणों से वीर अर्जुन को पीड़ित किया। इसी प्रकार देवासुर-संग्राम के समान उन दोनों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिता पुत्र का भयंकर युद्ध होने लगा। तत्पश्चात बभ्रुवाहन ने हंस कर एक ऐसा बाण मारा जो पंखसहित अर्जुन के शरीर में घुस गया इससे अर्जुन को बहुत पीड़ा हुई और वह अचेत हो गया। फिर सावधान होकर अर्जुन ने अपने पुत्र से कहा कि हे बभ्रुवाहन, तुम धन्य हो। मैं तुम्हारा ऐसा कार्य देखकर परम प्रसन्न हुआ हूं। पुत्र ! तुम क्षणभर युद्ध में स्थिर रहो, मैं तुम्हारे ऊपर बाणो को छोड़ता हूं। यह कहकर अर्जुन उसके ऊपर बाण बरसाने लगा। बभ्रुवाहन ने गाण्डीव से छूटे हुए उन बाणों को भल्लों से दो-दो तीन तीन टुकड़े करके गिरा दिया। अर्जुन के दिव्य बाणों से बभ्रुवाहन के रथ की सोने से बनी ध्वजा काट दी और हँस के उसके बड़े-बड़े घोड़ो को मार डाला। राजा बभ्रुवाहन अत्यन्त क्रुध होकर पैदल ही अपने पिता के साथ युद्ध करने लगा।

अपने पुत्र के पराक्रम से अत्यन्त प्रसन्न होकर अर्जुन ने उसे अधिक पीड़ित नहीं किया। बभ्रुवाहन ने भी बाल स्वभाव के कारण उत्तम पंख वाली पत्री से पिता का हृदय छेद ड़ाला। वह बाण अर्जुन के अंदर घुस गया और उसने बहुत अधिक कष्ट दिया। उस पत्री से बेहोश होकर अर्जुन पृथ्वी पर गिर पड़ा यह देख बभ्रुवाहन ने बाण छोड़ना बंद कर दिया। अर्जुन के बाणों से बभ्रुवाहन भी अति घायल हो गया था, इसलिए पीड़ा को सहन न करके वह भी बेहोश होकर पृथ्वी पर गिर पडा। बभ्रुवाहन की माता चित्रांगदा ने जब देखा कि पिता और पुत्र दोनों ही बेहोश होकर गिर पड़े है तो वह अत्यन्त दुखी: होकर रणभूमि में पति के पास बैठकर शोक सन्तप्त हृदय से रोने लगी। अनन्तर सावधान होकर वह अर्जुन के पास जाकर कहने लगी हैं प्रिय, आप कुरुकुल के परम प्रिय हैं, आप उठिये। मैं आप के इस घोड़े को मुक्त करती हूं, आप घोड़े का अनुसरण कीजिए।

यह कह चित्रांगदा लम्बी सांस छोड़ती और बहुत बिलाप करती हुई अपने प्राण त्यागने का निश्चय करके पति के दोनों पैर पकड़कर बैठ गई। इतने में बभ्रुवाहन की मूर्च्छा टूट गई और उसने माता को देखकर कहा- इससे बढ़कर और क्या दुख होगा जो सदा सुख भोगने योग्य मेरी माता पिता के पीछे मर रही है ! हाय ! माता ने सर्वशस्त्रधारियों में श्रेष्ठ मृत पति को देखा है। जब मैं और मेरी माता, हम दोनों ही जीवित है तो ज्ञात होता है कि इस लोक में मृत्युकाल के आये बिना पुरुष की मृत्यु किसी प्रकार नही होती। मैंने युद्ध में पितृहत्या की है, मैं महापापी हूँ, मुझे क्या प्रायश्चित करना चाहिए ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसके अनन्तर बभ्रुवाहन ने आचमन करके प्रतिज्ञा की कि यदि मेरे पिता न उठेंगे तो मैं इस रणभूमि में अपना शरीर सुखा दूंगा। पितृहत्या के पाप से मेरा किसी तरह छुटकारा नहीं, मुझे निश्चय ही नरक मिलेगा। पितृशोक से व्याकुल राजा बभ्रुवाहन ने माता सहित अनशन व्रत धारण कर लिया।

इसके बाद चित्रांगदा और बभ्रुवाहन ने अमोघ औषधियों से अर्जुन का उपचार किया। उन औषधियों के प्रभाव से, बहुत समय के सोये हुए पुरुष की भाँति आँखे मलते हुए वीरवर अर्जुन उठ खड़ा हुआ। पिता को उठा देखकर वे दोनों अति प्रसन्न हुए। पिता ने पुत्र को आलिंगन करके उसका मस्तक सूंघा।

तब अर्जुन अपने पुत्र बभ्रुवाहन से बोला कि हे पुत्र! आगामी चैत्री पूर्णिमा में युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ होगा, तुम माता और मन्त्रियों सहित वहां आना। बभ्रुवाहन ने अर्जुन से प्रार्थना की कि मैं अश्वमेध यज्ञ में अवश्य आऊँगा, आप आज एक रात्रि यहीं विश्राम कर कल चले जाइये। अर्जुन ने कहा कि मैं तो घोड़े के पीछे-पीछे चल रहा हूँ, घोड़ा यदि नहीं रुकेगा तो मैं भी नहीं रुक सकता। तुम्हारा मंगल हो, मैं अब जाता हूँ, इतना कहकर अर्जुन वहाँ से घोड़े के पीछे पीछे चल दिया।

बालको! बभ्रुवाहन की वीरता आपने देखी। उसने अपने पिता अर्जुन को भी, जिससे युद्ध में कोई भी नहीं जीत सकता था, युद्ध में हरा दिया।

बाजार भाव

१८ सितम्बर १९४२		१८ सितम्बर १९८४
१) रु के आठ सेर—	जौ—	१)७४ रु के एक किलो
१) रु के सवा पांच सेर	गेहूँ देशी	२) रु के एक किलो
१) रु के साढ़े पाँच सेर	चना	२)५० रु के एक किलो
१) रु का नौ सेर	बाजरा	२)०० रु का एक किलो
१) रु की साढ़े दस सेर	ज्वार	१)५० रु की एक किलो
आठ आने का एक सेर	आलू	१)५० रु के एक किलो
३६) रु की एक मन	रुई	२०)०० रु की किलो
५२) रु प्रति तोला	सोना	१८२० रु का दस ग्राम
१) रु का चार सेर	गुड़	३) रु का एक किलो
१) रु की आधापाव दो सेर	शक्कर	४)७५ रु की एक किलो
१) रु का पौने दो सेर	तिल्ली का तेल	१८) रु का एक किलो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान का कारण

—धर्मवीर विद्यालंकार

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान एक ऐतिहासिक घटना है। भारतीय एवं विदेशी धर्मों का स्वामी जी का तुलनात्मक ज्ञान विस्तृत था। इतिहास को सम्मुख रखकर उन्होंने देश के भविष्य को सुधारने का आजीवन प्रयत्न किया। लेखक ने बलिदान के सन्दर्भ में कुछ नये तथ्य ढूंढने का प्रयत्न किया है। विद्वान लेखक का दृष्टिकोण विचारोत्तेजक है। —सम्पादक

आर्यसमाज के इतिहास में २३ दिसम्बर, १९२६ का दिन बहुत बुरा सिद्ध हुआ। उस दिन एक मतान्ध मुसलमान—अब्दुलरशीद ने स्वामी श्रद्धानन्दजी को तीन गोलियाँ मारकर उनके प्राण हर लिये। वे उस समय रोगग्रस्त थे और शय्या पर लेटे थे।

हमें बताया जाता है कि अब्दुलरशीद मतान्ध था। उसने बिना सोचे-समझे, केवल अन्धी भावुकता से स्वामी जी की हत्या की थी। स्वामी जी उन दिनों मुसलमान बने हिन्दुओं को फिर से हिन्दू बनाने वाले आन्दोलन—शुद्ध आन्दोलन—का बड़े उत्साह और तत्परता से कार्य कर रहे थे। इससे मुसलमान उद्वेलित तथा उद्विग्न हो उनके प्राणों के प्यासे हो गये थे। अन्त में स्वामी जी की हत्या हो गई।

यह तथ्य और तर्क हम आर्यों को युक्ति-युक्त प्रतीत हुआ है और हम आजत क इस पर विश्वास करते आ रहे हैं। मुझे इस पर विश्वास नहीं हो पा रहा। उसके निम्नलिखित कारण हैं—

(१) स्वामी जी कांग्रेस के प्रधान रहे। उस समय जलियांवाला काण्ड हो चुका था। कांग्रेस का मनोबल गिर चुका था। कोई भी व्यक्ति प्रधान बनना नहीं चाहता था। तब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प्रधान-पद सम्भाला था। कांग्रेस में नया जीवन डाला था। फिर शीघ्र ही कांग्रेस की "मुस्लिम तुष्टीकरण" नीति के कारण इतना मतभेद हुआ कि कांग्रेस छोड़ "हिन्दू महासभा" की स्थापना कर डाली। कॉंग्रेस हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के कार्य का समर्थन करने लगी थी। इस कारण स्वामी श्रद्धानन्दजी के शुद्धि आन्दोलन का समर्थन बढ़ाना आवश्यक था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(२) उन्हें मुसलमानों ने बड़े आदर के साथ जामा मस्जिद में बुलाया था। उनसे मार्ग-निर्देश करने की प्रार्थना की। स्वामी जी ने वेद मंत्र से अपना प्रवचन आरम्भ किया। उस समय स्वामी जी ने मुसलमानों को क्या उपदेश दिया यह उपलब्ध नहीं। इस घटना से लगभग २०/२२ वर्ष पूर्व सन १८९७ ई० में लिखे उनके लेख के निम्नलिखित अंश पढ़ने-समझने की आवश्यकता है

"हे मेरे बिछुड़े हुए मुहम्मदी और ईसाई मित्रों ! अविद्या की अन्धकार-मयी रात्रि में जब हाथ पसारा नहीं सूझता था, तुमने भाइयों के हाथ छोड़ कर अन्यों के हाथ में अपना हाथ दे दिया। जब क्रियात्मक रूप में तुम्हें विदित हुआ कि तुमने मूर्खता की है और तुम्हारी आत्माओं ने साक्षी दी कि तुम निज गृह से दूर जा रहे हो, तो तुमने व्याकुल होकर आतुर वचनों से अपने भाइयों की ओर देखा। तुम्हारे भाई उस समय स्वयं देखने योग्य न थे। फिर तुम्हारा हाथ क्यों कर पकड़ते ? अब अन्धकार दूर हो गया, वेदरूपी सूर्य का प्रकाश हो गया। जीवन के उद्देश्य को समझो और अपने उस भाई के जीवन वृत्तान्त को पढ़ो जिसने कि तुम्हारे लिए नहीं-नहीं, केवल तुम्हारे लिए नहीं—प्रत्युत मृत्यु की खोज करने वाले के लिए, अपनी जान को हेय समझा, सांसारिक सुख तथा आनन्द को हेय समझा, और परमेश्वर के अटल नियम के आगे सिर झुकाए हुए अपने मिशन को पूरा किया।

इस लेख का लेखक निरन्तर २०/२२ वर्षों तक अपने बिछुड़े भाइयों में आत्मीयता उत्पन्न करने की आतुरता लिए कितना प्रयत्नशील रहा होगा और बिछुड़े मित्र-भाई उसके हृदय की वेदना और सांसारिक कठोर सत्यों को समझ कर आपस में मिलने को कितने आतुर हुए होंगे, यह कल्पना की जा सकती।

हिन्दू, मुसलमान और ईसाई में आपस में मिलकर एक हो जाने टीस किस सीमा तक उजागर हो चुकी होगी। यही टीस थी जिसके का मुसलमानों ने स्वामीजी को जामा मस्जिद में बुलाया था। भारत के इति में अपनी तरह की यह पहली और अन्तिम घटना है।

बिछुड़े हृदय किस प्रबल आतुरता से मिलने लगे होंगे, यह बताने वाला आज हमारे मध्य कोई नहीं। ये सब बातें, तथ्य, साहित्य कहाँ दबा दिया गया है ? किसने नष्ट कर दिया है ? यह एकता किसके लिए हानिकारक थी, प्राणघातक थी ? हमने आज तक ध्यान नहीं दिया। वह अवश्य अपराजेय शक्ति होगी, अनुपमेय बुद्धि-चातुर्य होगा, विलक्षण कूटनीति होगी।

कौन हो सकता है वह, सिवाय अंग्रेजों के। उन्हें अपना साम्राज्य अस्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होता हुआ प्रतीत हुआ होगा।

(३) अब्दुलरशीद की हरकतों से ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उसके हृदय में स्वामी श्रद्धानन्दजी के प्रति द्वेष, ईर्ष्या, जलन अथवा प्रतिशोध की आग जल रही हो। ऐसा व्यक्ति बहादुरी के साथ प्रकट होता है, वीरता से काम करता है, वीरता से ही लौटता है और अन्तिम क्षण तक अपने कर्म से प्रसन्न रहता है। उसकी आत्मा उसे कहती है कि दुनिया चाहे कुछ कहे उसकी आत्मा को इस कार्य से सन्तुष्टि है। धर्म और देश की वेदी पर बलिदान होने वालों को हमने ऐसा ही पाया है। उन्होंने पुनर्जन्म लेकर फिर यही कार्य करने की शपथ, फाँसी के तख्ते पर ली है। उन्होंने हंसते-हंसते फांसी का फंदा चूमा है।

अब्दुलरशीद ने ऐसी कोई हरकत नहीं की। वह जब स्वामी श्रद्धानन्द जी के पास आया तो घबराया हुआ था। पौष मास की सर्दी में उसे प्यास लगी थी। वह पूरा तीन पाव पानी पी गया। फिर गोली मार कर भाग न सका। अपने को छुड़ा न सका। उसके चेहरे पर प्रसन्नता का लेशमात्र न था। वह आत्मग्लानि से तड़पता रहा। वह अपने वक्तव्यों में जोश व सन्तोष प्रदर्शित न कर सका। वह फाँसी के फंदे पर जाते हुए भयभीत था।

क्या यह सम्भव नहीं कि वह लालच में, अथवा दबाव में यह घृणित कार्य करने को मजबूर किया गया और उसे अपने कुकृत्य का अन्तिम समय तक पछतावा था।

उसे अपने कर्म का पछतावा क्यों था? वह अदृश्य दबाव किसका था? इस पर हमने सोचा नहीं। वह असली हत्यारा इतना समझदार है कि अपने पर किसी को शक होने का अवसर नहीं देता।

(४) अब स्वामी श्रद्धानन्दजी के जीवन की उन घटनाओं की ओर ध्यान दीजिए, जो अंग्रेजों की दृष्टि में परम घातक थी—

(क) जामा मस्जिद में स्वामी जी का भाषण जो अंग्रेजों की कूटनीति, "फूट डालो और राज्य करो" को समाप्त करने वाला था।

(ख) चाँदनी चौक में जुलुस का नेतृत्व करते हुए फौज की संगीनों के सामने सीना तानकर निर्भीक खड़ा सन्यासी- एक अद्भुत दृश्य तो है ही। अपने इस साहस से उन्होंने जनता में साहस का संचार किया, फौज को अपनी कर्त्तव्य परायणता का बोध हुआ और अंग्रेजों को भविष्य का भय हुआ। अंग्रेज को फौज में क्रान्ति की आशंका हुई। जिन गोरखों ने गोली चलाने के आदेश को नहीं माना, उनका कोर्ट मार्शल हुआ। परन्तु उन्हें सजा नही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दी गई। अंग्रेज १८५७ की पुनरावृत्ति नहीं चाहता था। वह मामूली सी दिखने वाली घटना का परिणाम बहुत भयंकर था। इसे जब अंग्रेज ने समझा होगा, तो स्वामीजी के प्रति उसकी धारणा अवश्य हिंसक हुई होगी।

(ग) गुरुकुल की स्थापना से अंग्रेज भयभीत थे। वहाँ क्रान्तिकारी आश्रय लेते थे। जंगल में अभ्यास भी करते थे। अफवाह थी कि वहाँ बम बनाए जाते है। एक बार भारत के वाइसराय वहाँ जा पहुँचे। कितना महत्वपूर्ण यह स्थल समझा गया होगा? उनका गुरुकुल में स्वागत हुआ। प्रत्येक कोना दिखाया गया। बम नहीं मिले। वाइसराय ने पूछा कि बम कहाँ है? स्वामी श्रद्धानन्दजी ने ब्रह्मचारियों को आगे कर दिया। वाइसराय महोदय मुस्करा दिए और हमारे मन भी प्रसन्न हुए। हमने उसके आगे नहीं सोचा, जिसे अंग्रेज ने सोचा। बम तो एक बार धमाका करता है। ये जीवित, सचेत, कर्मठ, निष्ठावान ब्रह्मचारी जीवन में कितने धमाके करेंगे, उनका भविष्य में क्या परिणाम और प्रभाव होगा, यह विचार अंग्रेज ने अवश्य किया होगा।

(घ) गुरुकुल-शिक्षा प्रणाली मैकाले की शिक्षा प्रणाली के प्रभाव को समाप्त कर रही थी और गुरुकुल के स्नातक संसार में आ चुके थे। उनके गुण, कर्म, स्वभाव का अंग्रेज भय से और भारत की जनता आशा और उत्साह से स्वागत कर रही थी।

ऐसा संन्यासी अंग्रेजों के लिए बहुत खतरनाक था—हमने ऐसा कभी नहीं सोचा।

(ङ) स्वामीजी द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक समाचार पत्र "सद्धर्म-प्रचारक और "विजय" के लेखों से जनता जागरुक हो गई थी। धर्म और देशभक्ति पर्यायवाची शब्द बन गए थे। इन अखबारों के कार्यालयों में क्रान्तिकारी कुछ दिन काम करते थे। सी० आई० डी० के कर्मचारी उनके पीछे आते थे। कई क्रान्तिकारियों को स्वामीजी से सही दिशा का ज्ञान मिला था। ये तथ्य सरकार से छिपे नहीं थे।

(५) स्वामीजी की मृत्यु पर हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई सभी शोक से संतप्त हुए। अपने हृदय के उद्गार सभी ने व्यक्त कर उनके कार्यों की, गुणों की प्रशंसा की।

अतः यह सत्य प्रतीत नहीं होता कि धार्मिक भावना के वशीभूत होकर एक व्यक्ति ने अपने द्वेष, ईर्ष्या और जलन से प्रतिशोध लिया है। अपितु स्वामी श्रद्धानन्दजी अंग्रेजो की योजना-बद्ध कूटनीति के शिकार हुए।

गुरुकुल डी० ए० वी० कालेजों एवं अन्य विश्वविद्यालयों के स्नातकोत्तर शोध-छात्र इस संबध में शोध करें, तो बहुत सामग्री मिल सकती है तथा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत—हमारी मातृभूमि

स्वा० विवेकानन्द

भारत का नाम दुनिया से क्या मिट जायगा? तब तो दुनिया से मिट जायगी—सारी आध्यात्मिकता, सारी आदर्श परिपूर्णता नष्ट हो जाएगी, धर्म के लिए सारी मधुर सहानुभूति, सारी चारित्रिक आदर्शवादिता लुप्त हो जायगी, और उसकी जगह राज हो जाएगा वासना और विलास के द्वैत का, जैसे पुरुष और स्त्री देवों की उपासना का, जिनके पूजन संस्कारों में छल कपट और प्रतियोगिता करने वाला धन पुजारी होगा और मानव-जीवों की बलि चढ़ाई जाया करेगी। ऐसा कभी नहीं हो सकता—कोई कभी नहीं।

क्या वह मर जाएगी? वह वृद्धा माता जो समस्त शिष्टता, सदाचारिता अध्यात्मिकता की जननी है। जो वह पुण्यभूमि है जिस पर आज भी ईश्वर जैसे लोग रहते हैं और सांस लेतेहैं। मेरे बन्धु! मैं तुमसे यूनानी संतो की लालटेन मांग लूंगा और तुम्हारे साथ चलूंगा, शहरों और गांवो में, मैदानों और जंगलों में, सारी दुनिया के कोने-कोने में, कहता हुआ कि—दिखाओ मुझे दूसरी पुण्यभूमि, जहां ऐसे लोग रहते हों, अगर दिखा सको?

□ □ □ □

सारी दुनिया हमारी मातृभूमि की ऋणी है। वह ऋण बहुत भारी है! देश-देश की तुलना कीजिए, सारी धरती पर ऐसी कोई जाति नहीं मिलेगी जिसका संसार इतना अधिक ऋणी है जैसा धीर, गभीर हिंदू, विनम्र हिंदू जाति का·········यहां उस समय कर्मठ कार्य कलाप चल रहा था, जब यूनान का जन्म भी नहीं हुआ था, रोम का अस्तित्व भी नहीं था, और जब आज के यूरोपियनों के सगे पितृ लोग जंगलों में रहते थे, और अपने मुखड़े नीले रंगते थे। उससे भी पहले, जिस जमाने का इतिहास में अब जिक्र भी नहीं हैं उस पुरातन अतीत के अँधेरे में परम्परा की एक भी किरण नहीं चमकी थी, उस प्राचीन काल से आज तक, हमारी मातृभूमि से सिद्धान्तों पर सिद्धान्त नक्षत्रों की तरह खिल-खिल कर सारे आकाश में फैलते

आश्चर्यजनक तथ्य सामने आ सकते हैं।

प्रभु हमें बुद्धि एवं सामर्थ्य प्रदान करें कि हम स्वामी श्रद्धानन्दजी के पद चिन्ह्यों पर चलते हुए देश, धर्म एवं मानव जाति का कल्याण कर सकें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहे, जिनके एक-एक शब्द से सुख और शान्ति की वर्षा होती रही है।

□ □ □ □

क्या तुम कोई कारण बता सकते हो कि आर्य राष्ट्रों के उद्यानों में भारत की माधवी लता क्यों मूर्छित जैसी मुर्झाई धूल में लोट रही है ? क्या वह बुद्धि में किसी से कम है? क्या वह कला कौशल में किसी से कम है? क्या तुम उसकी ललित कलाओं को देख सकते हो, उसके गणित और दर्शन शास्त्रों को पढ़ सकते हो ? और फिर भी प्रश्न का उत्तर "हाँ" कहकर दे सकते हो ? उसे त्राटक द्वारा मोहनिद्रा में सुला दिया गया है। आवश्यकता केवल उसे उस बनावटी नींद से जगा देने की है, और यह कहने की कि वह राष्ट्रों के परिवार में अपने पुराने सर्वोच्च सिंहासन पर आसीन हो जाए। भारत के राष्ट्रीय आदर्श हैं —त्याग और सेवा। इन दोनों अमर बेलों को सींचो —सारा उद्यान लहलहा उठेगा।

□ □ □ □

मेरे देशवासियों ! ऐ अमर महापुरुषों की सन्तानों ! हमारा राष्ट्रीय जलपोत युगों-युगों से सभ्यता को दूर-दूर के देशों तक पहुंचाता रहा है और अपने अमूल्य रत्न-सम्पदाओं से सारे संसार को धनवान बनाता आया है। बीसियों चमकती हुई शताब्दियों से हमारा यह राष्ट्रीय जलपोत करोड़ों प्राणियों को दुःख-सागर से पार उतारता आया है परन्तु आज इसमें कुछ छिद्र हो जाने से क्षतिग्रस्त हो गया है। अपराध तुम्हारा है या किसी और का,यह सोचने का समय आज नहीं है। जिन्होंने तुम्हें इस टूटे हुए जहाज पर लाद दिया और चले गए उनका अब तुम क्या कर सकोगे ? क्या तुम उनको कोसते फिरोगे, या आपस में लड़ते मर कट जाओगे ? क्यों नहीं मिलकर फिर तुम सब एक हो जाते, और अपनी पूरी शक्ति से छिद्रों को बन्द कर जहाज को जल पर उठाते ? आओ, हम सब मिलकर अपने हृदय का रक्त बल उसे उठाने में लगाएँ। भले ही उस कोशिश में यह पीढ़ी डूब जाए, हम राष्ट्र का जयजयकार करते मर जाएं, मगर हमारे मुंह से उफ न निकले।

□ □ □

अब तुम साफ समझ गए हो कि इस राष्ट्री (पत्तन) के प्राण कहां टिके हैं धर्म में टिके हैं। धर्म को हम नहीं नष्ट कर सके, यही कारण है कि हिंदू राष्ट्र आज भी, कितने ही पैशाचिक काण्डों और संकटों को झेलते हुए मिटे नहीं और जीवित हैं।

एक भारतीय विद्वान पूछता है—"धर्म में राष्ट्र का प्राण रखने से क्या

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फ़ायदा ? उसे सामाजिक या राजनैतिक आजादी में क्यों नहीं रखते, जैसा दूसरे राष्ट्र करते हैं

इस प्रकार की बातें करना बहुत सरल है……सत्य यह है ……यह (धर्म की) नदी पर्वतों में अपने उद्गम से निकल कर हजारों मील की दूरी से बहती चली आई है। क्या वह फिर वापस अपने उद्गम को लौट जाएगी; या जा सकती है ? अगर यह उल्टी गंगा बह भी सके, तो वह केवल इधर-उधर फैल कर सुख जायेगी।

कुछ भी हो, जल्दी या देर से, सुन्दर मैदानों में आसानी से बहते हुए या पथरीली भूमि पर उछलती कूदती वह महासागर में अवश्य गिरेगी। अगर हमारा पिछला दस हजार वर्षों का राष्ट्रीय जीवन गलत रहा है, तो उसे ठीक नहीं किया जा सकता, और अगर एक नया आचरण ग्रहण करें तो अनिवार्य परिणाम यह होगा कि हम निश्चय ही मर जाएंगे।

□ □ □

प्रत्यक्ष मृत्यु की राख के नीचे छिपी राष्ट्रीय जीवन की आग फिर भी भीतर ही भीतर जल रही है, और इस राष्ट्र का जीवन ही धर्म है, इसकी भाषा धर्म की है और इसके विचार धार्मिक हैं, —और तुम्हारी राजनीति समाज, न्याय, शासन, प्लेग-निरोधक कार्य और-अकाल सहायता कार्य-यह सब काम वैसे ही होते रहेंगे जैसे वे यहां होते रहें हैं; मतलब यह कि धार्मिक शैली से; अन्यथा तुम्हारी सारी चिल-पों और विलाप बेकार होंगे, मेरे दोस्त।

□ □ □

साधन हर हालत में हर देश में वही है, यानी थोड़े से ताकतवर लोग जो फर्मान जारी करते हैं वही मुकद्दर का लिखा बन जाता है बाकी सब लोग भेड़ की तरह दुम दवाए हुकम बजाते पीछे-पीछे दौड़ रहें हैं, बस यही सर्वत्र हो रहा है। हमने देख लिया—तुम्हारी पार्लियामेंट, तुम्हारी सिनेट, तुम्हारे वोट, मेजारिटी, बैलट; यह सब सर्वत्र वही है मेरे दोस्त…अब सवाल यह है कि भारत में यह ताकतवर लोग कौन हैं ? ……वे हैं धर्मधुरन्धर लोग। इस तथ्य से मुंह मोड़ा जा रहा था कि रिलजन (मजहब) को हिन्दू ने सदैव व्यक्तिगत मामला माना है। इस कारण हिन्दुत्व कोई साम्प्रदायिक नहीं वे लोग हैं जो हमारे समाज का नेतृत्व कर रहे हैं, और ये ही वे लोग हैं जो जरुरत पड़ने पर हमारे सामाजिक कानूनों और परंपराओं को बदल देते हैं, और हम चुपचाप उनको सुनते हैं और उनका हुक्म बजाते हैं।

पौष संवत् २०४१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सबसे पहले यह समझने की कोशिश कीजिए ——क्या आदमी कानून बनाता है, अथवा क्या कानून आदमी को बनाता है? क्या आदमी रुपया पैदा करता है, अथवा रुपया आदमी को पैदा करता है? क्या आदमी नाम और शोहरत पाते हैं? अथवा नाम और शोहरत आदमी को पाते हैं?

पहले आदमी बनो; मेरे दोस्त! फिर तुम देखोगे कि कैसे यह सब बातें और बाकी सब कुछ अपने आप तुम्हारे पीछे चलने लगता है। छोड़ दो, वह नफरत भरी ईर्ष्या, वह कुत्तों जैसी कुकर भूँ और एक दूसरे के खिलाफ गुर्राना और खड़े हो जाओ अच्छे उद्देश्य, सदाचारी साधनों और सदाचारी हिम्मत की जमीन पर; और बहादुर बनो! जब आदमी जैसे पैदा हुए हो, तो कुछ ऐसा कर जाओ जो तुम्हारे बाद कोई अमिट निशान छोड़ जाये।

□ □ □

सत्य, प्रेम और दिल की सच्चाई को कोई ताकत नहीं रोक सकेगी। क्या तुम्हारे दिल में सच्चाई है? क्या वह मृत्यु पर्यन्त निःस्वार्थ और प्रेम मय बनी रहेगी? हाँ! तो डरो मत, मौत के सामने भी। आगे बढ़ो! मेरे लाल! सारी दुनिया रोशनी मांगती है। वह गर्भिणी है। केवल भारत के ही पास वह रोशनी है, जादू की नकाब पोशी और नीम-हकीमों में नहीं, बल्कि वह रोशनी है सच्चे धर्म की भावना की, कीर्ति देने वाले सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्य के उपदेशों में। यही कारण है जिसके लिए ईश्वर ने इस हिंदू जाति का रक्षा तमाम उसके शिकजे के बीच आजतक की है। आगे वह समय आ गया है। ईश्वर की इच्छा पूरी करो। विश्वास करो कि तुम सब, मेरे बहादुर लड़का बड़े काम करने के लिए पैदा हुए हो। कुतियों की कुकर भूँ से मत डरो आसमान के वज्रपातों से मत डरो—बल्कि खड़े हो जाओ और काम करो।

□ □ □

भारत का उत्थान होगा, मांसपेशियों के बल से नहीं, बल्कि आत्मा की शक्ति से; संहार की पताका से नहीं, बल्कि शान्ति और प्रेम की ध्वजा फहराने से————

मैं अपने सामने जिन्दगी जैसा साफ एक दिव्य दृश्य देख रहा हूँ, कि प्राचीन मातेश्वरी एक बार फिर जाग उठी है, अपने सिंहासन पर, फिर से जवान होकर, हमेशा से ज्यादा तेज बिखराती हुई बैठ गई है। शांति और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उदारताभरी आवाज से दुनिया में उसका डंका बजा दो।

नये भारत को उठने दो—किसानों की झोपड़ी से, हल की मुठीय पकड़े, मछुओं, चमारों, और भंगियों के कुटीरों से पंसारियों की दूकानों से, टिकीया-कचालू बेचने वालों की अंगीठियों की बगल से, उसे उछल कर सामने आने दो। फैक्टरीयों से, हाटों से, और बड़ा बाजारों से उसे बाहर निकलने दो। बगीचों और जंगलों से, पहाड़ियों और पर्वतों से उसे मैदान में आने दो।

□ □ □

हम भारतीयों में एक सबसे बड़ी बुराई है, कि हम लोग कोई स्थायी संगठन नहीं बना सकते, और उसकी वजह यह है कि हम लोग अपनी पावर में साझेदारी कभी नही पसंद करते, और कभी यह नही सोचते की जब हम गुजर जाएंगे तो क्या होगा ?

× × ×

सिपाही (१८५७) विद्रोह के क्रान्तिकाल में, जनरल स्ट्रांग नाम का एक दोस्त भारत आया हुआ था। इस विद्रोह के विषय में वह मुझसे तमाम कहानियाँ बताया करता था। बातों बातों में, एक दिन मैंने उससे पूछा कि यह कैसे हो गया कि विद्रोही सिपाही हार कैसे गए जब उ के पास काफी तादाद में बन्दूकें, गोला-बारूद और खाने-पीने की रसद ती और अव्वल दर्जे की फौजी ट्रेनिंग पाए हुए थे। उसने जवाब दिया कि उनके नेता लोग आगे बढ़कर उनकी कमान साधते इसके बजाय वह उनके पीछे सुरक्षित स्थान पर खड़े हो कर चिल्लाते थे—"बढ़े जाओ बहादुर लड़कों !", और इसी तरह के नारे लगाते थे। लेकिन जब तक कमांड का सरदार आगे बढ़कर मौत से टक्कर नही लेता, तब तक फौज के पैदल-सवार सिपाही दिल से कभीं नही लड़ते। "कप्तान के लिए अपने सिर की कुर्बानी सबसे ज्यादा जरुरी होती है

अगर तुम किसी उद्देश्य के लिए अपनी जान की बाजी दांव पर लगा सकते हो तभी तुम एक नेता बन सकते हो। लेकिन हम सब लोग बिना जरुरी कुर्बानी दिये नेता बन जाना चाहते हैं और नतीजा होता है जीरो— कोई हमारी नही सुनता।

× × ×

हुक्म कि बन्दे बनना पहले सीखो। इन पश्चिमी राष्ट्रों में आजादी की भावना सबसे ऊँची होने के साथ-साथ उसके ही जैसी आज्ञाकारी अनुशासन की भावना भी वैसी ही मजबूत होती है। हम सब खुद मुखं बनना चाहते हैं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिससे कोई काम पूरा नहीं होता। भारी खतरे में कूद पड़ने की जुर्रत, बेहद दिलेरी, भय पैदा करने वाली ताकत, और सबसे बढ़कर पूरा अनुशासन— यही वे करिश्में हैं जिनसे व्यक्ति और राष्ट्र को पुनर्जीवन मिलता है। यह करिश्मे हम लोगों में बिल्कुल नहीं हैं।

× × ×

ईर्ष्या, जो गुलामों में स्वाभाविक पाई जाती है, हमारे राष्ट्रीय आचरण का अभिशाप है। इसी ईर्ष्या के कारण ईश्वर भी सर्वशक्तिमान होते हुए हमारी मदद के वास्ते कुछ नहीं कर सकता। मेरे बारे में सोच लो कि उसने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया और अब मरकर चला गया। सोचो! कि तुम, हमारी मातृभूमि के नौजवानों के भाग्य में यह काम करना है। काम करने में जुट जाओ।

× × ×

मेरी समझ में यह पूरी तरह आ गया है कि कोई व्यक्ति हो या कोई राष्ट्र, वह दूसरे के समुदायों से अलग थलग रहकर जिन्दा नहीं रह सकता।

एक हाथ दो, दूसरे हाथ लो—यह कानून कहता है, और अगर भारत एक बार फिर अपना अभ्युत्थान करना चाहता है तो अनिवार्य रूप से आवश्यक है कि वह अपने खजानों को तिजोरियों से बाहर निकाले और विश्व के राष्ट्रों के सामने फेंक दें, और बदले में दूसरे उसे जो देते है वह लेने को तैयार हो जाए।

विकास जीवन है, सबसे सिकुड़ कर अलग हो कर जिन्दा रहना मौत है। प्रेम ही जीवन है, घृणा ही मृत्यु है। हम लोगों ने उसी दिन मरना शुरू कर दिया था, जिस दिन हमने दूसरी जातियों से नफरत करना शुरू किया था, और अब कोई हमें तब तक मौत से नहीं बचा सकता जब तक हम सबका आलिंगन करने के लिए अपने हाथ नहीं फैलाते, यह ही जीवन का मूलमंत्र है।

× × ×

सबसे बड़ा राष्ट्रीय पाप मेरी समझ में आम जनता की उपेक्षा है, और वही हमारे पतन का एक मुख्य कारण है। कितनी ही किस्मों की राजनीतियाँ अमल में लाई जाएँ, वे तब तक किसी काम न आएँगी, जब तक भारत के आम लोग एक बार फिर सुशिक्षित, नहीं होते, पेट भर रोटी नहीं पाते और हमारी उचित रखवाली नहीं की जाती। वे शिक्षा के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी कमाई देते हैं, वे हमारे मंदिरों का निर्माण करते हैं, लेकिन बदले में पाते हैं ठोकरें। व्यवहार में वे गुलाम हैं। अगर हम भारत को पुनर्जीवन प्रदान करना चाहते हैं, तो हमें उनके लिए परिश्रम करना होगा।

× × ×

इसलिए जितना ही हिन्दू लोग प्राचीन इतिहास पढेंगे उतना ही अधिक गौरव वाला उनका भविष्य होगा, और जो भी कोई उस बीते हुए जमाने को हर एक आदमी के द्वार पर लाने की कोशिश करेगा, उतना ही बड़ा वह देश का भला करने वाला होगा। भारत का पतन इस कारण नहीं हुआ कि प्राचीन लोगों के कानून और उनकी परम्पराएं खराब थीं, बल्कि इस कारण कि उन्हें अपने उचित बुनियादी अधिकारों को अमल में लाने की अनुमति नहीं दी गई।

× × ×

करने को बहुतेरी बातें हैं, लेकिन इस देश में साधनों की कमी है। हमारे पास दिमाग है, मगर हाथ नहीं हैं। हमारे पास वेदान्त का सिद्धान्त हैं, लेकिन उसे अमल में लाने वाली ताकत नहीं है। हमारी किताबों में सार्वभौम समानता का सिद्धान्त है, लेकिन अमल में हम भारी ऊंच-नीच के व्यवहार करते है। यह भारतवर्ष ही था, जहां सबसे ऊंची किस्म के निःस्वार्थी और कर्म करने के उपदेश दिये जाते थे, लेकिन व्यवहार में हम भयंकर रूप से क्रूर, भयंकर रूप से हृदयहीन हैं, और केवल आप हाड़मांस के शरीरों का पोषण करने के सिवाय अन्य कुछ सोच भी नही सकते!——

मेरा भी विश्वास है कि अगर इस देश के लोगों के पूरे दिल से कोई प्रेम कर सके तो भारत फिर जाग उठेगा—जो आज सम्पन्नता के सौभाग्य से वंचित है, जिसकी तकदीर फूट गई है, जिसकी अपनी महत्वाकांक्षा बिल्कुल मर गई है। जो पद-दलित, भूखमरी से तबाह, दंगा पीड़ित एक-दूसरे से जलने वाले लोगों का देश है।

भारत उसी हालत में जाग सकेगा जब सैंकड़ों की तादाद में विशाल-हृदय वाले पुरुष और औरतें, जिन्दगी की ऐयाशियों के मजे लेने की सारी इच्छाओं को त्याग कर अपने करोड़ों देशवासियों के कल्याण के लिए जो दिनबदिन गरीबी और अज्ञान के कुण्ड में गहरे डूबते जाते हैं, दिल से इच्छा करे जोर लगाकर कोशिश करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आठवीं लोक-सभा का चुनाव : एक युग बदलेगा !

—धर्मपाल शर्मा

आठवीं लोकसभा का चुनाव अब तक के निर्वाचन इतिहास में सबसे उत्तेजक चुनाव संघर्ष का रूप ले चुका है। कहा जा सकता है कि १९७७ और १९८० के चुनाव भी इसी प्रकार निर्णायक तथा देश और संसार का ध्यान आकृष्ट करने वाले थे, लेकिन वर्तमान लोकसभा चुनाव और उन चुनावों में एक मूलभूत अन्तर है। वे चुनाव श्रीमती इन्दिरा गांधी और जनता पार्टी के उत्थान-पतन से जुड़े थे, इसलिए निर्णायक थे लेकिन उस समय सारे राजनीतिक क्षितिज पर छा जाने वाला इंदिरा गांधी का व्यक्तित्व एक ओर था तो दूसरी ओर विभाजित होने के बावजूद प्रतिपक्ष के पास श्रीमती गांधी की नीतियों के विरुद्ध जन असन्तोष को जगाने का एक मुद्दा था। अब स्थिति भिन्न है। कांग्रेस (इ) के पास इंदिरा जी जैसा प्रभावी नेतृत्व नहीं है इसलिए इसने फिल्म अभिनेताओं की लोकप्रियता की बैसाखी और विपुल धन-भंडार को अपना संबल बनाया है। कांग्रेस (इ) को श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या से उपजी सहानुभूति का भी कुछ लाभ मिल सकता है। दूसरी ओर विरोध पक्ष अपनी रणनीति का मुद्दा कमजोर और अनुभवहीन नेतृत्व की आलोचना और कांग्रेस (इ) के शासन की विफलताओं को बना रहा है। इस प्रकार सकारात्मक मुद्दे इस बार प्रायः किसी के पास भी नहीं हैं। परिणामस्वरूप इस बार सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष के खेमों में आपाधापी का ऐसा दृश्य दिखाई दे रहा है जैसा अब तक के निर्वाचनों में प्रायः कभी दिखाई नहीं दिया।

आँकड़े बोलते हैं

वर्तमान स्थिति को समझने के लिए १९८० की चुनाव पृष्ठभूमि में झांकना उपयुक्त होगा। १९८० के निर्वाचन में कांग्रेस (इ) को ३५२ क्षेत्रों में बहुमत प्राप्त हुआ था जबकि कांग्रेस (इ) ने ४९१ स्थानों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए थे। इस बार लोकसभा की ५१५ (असम और पंजाब को छोड़कर) पार्टी के लिए कांग्रेस (इ) ४९६ सीटों पर चुनाव लड़ रही है। १९८० में कांग्रेस (इ) को आंध्रप्रदेश में ४२ में से ४१ स्थान प्राप्त हुए थे और कर्नाटक में २८ में से २७ सीटें प्राप्त हुई थीं लेकिन इस बार वहां

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विरोधी दलों की सरकारें हैं इसलिए इन प्रदेशों में वैसी सफलता पाने का आशा स्वयं कांग्रेस (इ) को भी नहीं है। पंजाब में १३ में से १२ लोकसभा सीटें कांग्रेस ने जीती थीं। इस बार वहां चुनाव ही नहीं हो रहे हैं। इसके साथ ही कांग्रेस (इ) ने बिहार में ५४ में से ३०, गुजरात में २६ में से २५, हिमाचल प्रदेश में ४ में से ४, मध्यप्रदेश में ४० में से ३५, महाराष्ट्र में ४८ में से ३९, उड़ीसा में २१ में से २०, राजस्थान में २५ में से १८, तमिलनाडु में से ३९ में से २०, उत्तर प्रदेश में ८५ में से ५१, दिल्ली में ७ में से ६ और हरियाणा में १० में से ५ स्थान प्राप्त किये थे। प० बंगाल में कांग्रेस (इ) ने ४२ में से केवल ४ सीटें प्राप्त की थीं लेकिन यहां कांग्रेस (इ) ने कोई ऐसा करिश्मा नहीं दिखाया कि वह बहुत अधिक सीटें कम्युनिस्ट पार्टी से छीनने की आशा करे। जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस (इ) ने ६ में से १ सीट जीती थी। शायद शाह से समझौता हो जाने के कारण कांग्रेस (इ) इसमें कोई वृद्धि कर सके। केरल में कांग्रेस (इ) ने २० में से ५ स्थान प्राप्त किये थे, लेकिन कांग्रेस (इ) के नेतृत्व वाले संयुक्त मोर्चे का अन्तर्कलह को देखते हुए इससे अधिक सीटों पर विजय प्राप्त करने के संभावना कठिन ही है। इस प्रकार स्पष्ट है कि आंध्र, कर्नाटक, केरल, पश्चिम बंगाल और जम्मू-काश्मीर में कांग्रेस (इ) को जो क्षति उठानी प[ड़ेगी उस] की पूर्ति इसे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान और हरियाणा राज्यों में ही करनी होगी जहां इसकी सरकारें तो हैं ही, इन्दिरा गांधी की हत्या से उपजी सहानुभूति की लहर भी कुछ है, तो इन्हीं राज्यों में है। पर क्या ऐसा हो पायेगा ?

अन्तःकलह और विभाजन

राजीव गांधी और उसके सलाहकारों की प्रत्याशी-चयन-नीति के कारण कांग्रेस (इ) में जो जबर्दस्त विद्रोह हुआ है, उससे कांग्रेस दो-फाड़ हो गई है। ऐसी स्थिति में धन, सत्ता, सहानुभूति की लहर और राष्ट्रीय अखंडता के आकर्षक नारे तथा अभिताभ, सुनीलदत्त, शिवाजी गणेशन् और वैजयन्ती माला जैसी फिल्मी हस्तियों की वैसाखियां कितनी कारगर होंगी, कहना कठिन है। महाराष्ट्र में ए० आर० अन्तुले ने सभी बड़े इंका नेताओं की नींद हराम कर दी है। उड़ीसा में श्री रामचन्द्र रथ और श्यामसुन्दर महापात्र भी विद्रोह की लगाम थामे हुए हैं। गुजरात में झीनाभाई दज प्रबल चुनौती देने की मनःस्थिति में हैं। उत्तरप्रदेश में वी० पी० मौर्य और मायापति त्रिपाठी ने तो खुला विद्रोह शुरू कर ही दिया है। अन्दर ही अन्दर बगावत की आग चारों तरफ काम कर रही है। इस विद्रोह के कारण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
कांग्रेस (इ) का युवा नेतृत्व सुगठित और व्ययसाध्य चुनाव अभियान के बावजूद अपनी नीति के प्रति संशक हो उठा है। इसके परिणामस्वरूप इस बार अपने प्रत्याशी को विजयी बनाने की ओर ध्यान देने के साथ ही उन्होंने रणनीति में एक बदल यह भी की है कि किसी भी तरह विरोध पक्ष के प्रभावी नेता संसद में न पहुंच सकें। चुनावी द्वन्द्व की यह शत्रुतापूर्ण शैली पहली बार उभरी है। चौ० चरणसिंह का सोनीपत से नामांकन पत्र रद्द होना और बागपत से राजनारायण को कांग्रेस (इ) का पर्दे के पीछे से भारी समर्थन इसी का प्रतीक है। बहुगुणा के विरुद्ध अमिताभ और राम-जेठमलानी के विरुद्ध सुनीलदत्त जैसे लोकप्रिय अभिनेताओं का चयन और अटलबिहारी वाजपेयी के विरुद्ध माधवराव सिंधिया को खड़ा करने के पीछे भी यही मानसिकता रही है। दक्षिण मद्रास से वैजयन्ती माला की लोकप्रियता को भी दांव पर लगाया गया है।

विद्रोह विपक्ष में भी है

कांग्रेस (इ) को इस सारी स्थिति के बावजूद यह लाभ अवश्य है कि बिखरे विपक्ष में भी इस बार कम दरारे नहीं पड़ी हैं। चौ० चरणसिंह के नेतृत्व वाली दलित मजदूर किसान पार्टी का अन्तर्कलह खुलकर सामने आया है। जहां तक विरोध पक्ष में तालमेल का सवाल है, उसमें अन्तिम क्षण तक वार्ता के बाद कोई खास सफलता नहीं मिल पाई। हिन्दी क्षेत्रों की ढाई सौ सीटों के लिए बहुकोणीय संघर्ष ही अब एक मात्र वास्तविकता है।

चुनाव आयोग की भूमिका

इस बार चुनाव आयोग ने भी बड़े उत्साह के साथ निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए आचार संहिता जारीकर रखी है। इसने बड़ी तीव्रगति से कई राज्य सरकारों से भी संहिता का उल्लंघन करने के लिए जवाब तलब किया है। मध्यप्रदेश और बिहार में सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग की बातें सामने आई तो आयोग ने उन्हें चेतावनी दे दी लेकिन आंध्र में रामाराव सरकार के विरुद्ध ऐसे ही आरोपों को आयोग ने अधिक गंभीरता से लिया है और चुनाव आयोग के प्रवक्ता श्री गणेशन् ने इसे गंभीर मामला बताते हुए जांच करने की आवश्यकता समझी है। इसी प्रकार विरोधी नेताओं के नामांकन पत्र रद्द करने में चुनाव अधिकारियों ने खासी तत्परता दिखाई। भूतपूर्व विधिमंत्री शांतिभूषण ने कहा कि सोनीपत में चौ० चरणसिंह का नामांकन पत्र रद्द करने में पूर्वाग्रह से काम लिया गया है। उनका कहना है कि जनप्रतिनिधित्व नियम में स्पष्ट उल्लेख है कि सामान्य वार्ता के लिए नामांकन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्र रद्द नहीं किये जाने चाहिए। इसके विपरीत माधवराव सिंधिया के नामांकन में भूल सुधार के लिए चुनाव अधिकारी द्वारा बाकायदा समय दिया गया और चन्देरी विशेष विकास क्षेत्र प्राधिकरण के अध्यक्ष के रूप में लाभ के पद पर रहते हुए भी उनका नामांकन पत्र स्वीकार किया गया। इस पद से त्याग पत्र देने के लिए उन्हें एक दिन का समय दिया गया। कांग्रेस (इ) के इशारे पर राजनारायण तो निरन्तर चुनाव आयोग कार्यालय से संबंध बनाकर बागपत में विशेष व्यवस्थाएं करा रहे हैं। क्या चुनाव आयोग के लिए देश के अन्य क्षेत्र इतने महत्वपूर्ण नहीं हैं ?

विश्व भर की निगाहें

वैसे तो दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के आम चुनावों का ओर सदैव ही विश्व का ध्यान केन्द्रित रहता है, लेकिन इस बार दुनिया भर को और विशेषकर महाशक्तियों की रुचि इन चुनावों में कुछ अधिक ही है। इसका कारण है हाल ही में गुजरा भारत का घटना चक्र। हाल में ही भारत को उग्रवाद और आतंकवाद से जूझना पड़ा और इसी घटनाक्रम में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या भी हुई। श्रीमती इन्दिरा गांधी चाहे-अनचाहे राष्ट्रीय नेतृत्व की एक मात्र प्रतीक बनी हुई थीं। उनके राजनीतिक मंच से हटने के बाद निश्चित रूप से राजनीतिक शून्य कांग्रेस (इ) में ही है, देश में नहीं; लेकिन इसका परिस्थितियों पर असर जरूर है। पण्डित नेहरू की मृत्यु के बाद भी कांग्रेस में एक शून्य उत्पन्न हुआ था लेकिन उस समय इस दल में अनेक ऐसे नेता अवश्य थे जिनकी जनता में छवि थी। किन्तु आज कांग्रेस (इ) में ऐसा कोई राष्ट्रीय नेता नहीं है जिसकी लोकप्रिय छवि हो। हां, राजीव गांधी को श्रीमती इन्दिरा गांधी की लोकप्रियता का प्रतिदान अवश्य मिल गया है। दूसरी ओर विपक्ष में अनेक नेताओं की लोकप्रिय छवि होने के बावजूद वे बुरी तरह विभाजित हैं। इसलिए इस बार न संघर्ष नेतृत्व का है, न सुनिश्चित मुद्दों का, और न ही कोई प्रभावी लहर है; बल्कि इस बार संघर्ष ने अनिश्चित किन्तु तनावपूर्ण राजनीतिक युद्ध का रूप ले लिया है। अतः इस चुनाव के बाद जो भी सरकार आयेगी उसे भारी चुनौतियों का सामना जरूर करना होगा। वह किसी पुरानी वसीयत के बल पर नहीं चल सकेगी। बल्कि उसे अपनी क्षमता दिखानी होगी। भारत का आम मतदाता ही नहीं, बल्कि जिनके मत नहीं हैं, वे युवा भी इस चुनाव में भारी रुचि लेते देखे जा रहे हैं।

(युगवार्ता)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साधुओं के वेश में विदेशी जासूसों का व्यापक जाल

लगता है कि भारत में विदेशी शक्तियों के लिये काम कर रहे अनेक साधुओं ने अपना गहरा जाल देश में फैलाया हुआ है। इस सम्बन्ध में नवीनतम सनसनीखेज विवरण ऋषिकेश के एक ओंकारानन्द आश्रम के सामने आये हैं जिसने वहां आश्रम, दुर्गा मन्दिर, स्कूल, अस्पताल, ध्यान व योग केन्द्र चला रखे हैं। इस आश्रम को जब भारी मात्रा में विदेशी फन्ड मिलने की रिपोर्ट सामने आयी तो केन्द्र ने आश्रम के संस्थापक स्वामी ओंकारानन्द की पृष्ठभूमि जानने का कार्य रॉ (रिसर्च एंड एनालिसिस विंग) को सौंपा। इसी मध्य स्विट्जरलैंड की राजधानी बर्न स्थित भारतीय दूतावास से गृह मंत्रालय को यह स्तब्धकारी समाचार मिला कि स्वामी ओंकारानन्द को जासूसी गतिविधियों के षड्यंत्र में १४ वर्ष का दंड दिया गया। अतः वे स्विस जेल में बन्द हैं। पर आश्चर्य कि इसके बावजूद तथाकथित गुरु ओंकारानन्द के विदेशी शिष्यों का दल न केवल ऋषिकेश आश्रम को रहस्यमय ढंग से चला रहा है, अपितु रहस्यमय स्थितियों में करोड़ों की नई परिसम्पत्ति की खरीद व निर्माण कर रहा है।

विदेशी शक्तियों के एजेन्ट या जासूस के रूप में साधुओं की भूमिका को नजर-अन्दाज नहीं किया जा सकता। यहां उल्लेखनीय है कि २२ सितम्बर १९७६ को सीमा सुरक्षा पुलिस ने स्वामी जयकुमार को जम्मू-कश्मीर के पास रणबीरपुरा क्षेत्र से पकड़ा था जो श्रीमती गांधी की हत्या के लिये आपरेशन रेस्टोरेशन डैमोक्रेसी के अन्तर्गत कार्य कर रहा था। वास्तव में वह आस्ट्रियन जार्ज सीवेरैर था। वह १९६२ से भारत में रह रहा था। वह साधु बन गया था व अयोध्या के श्रीराम नामक योगाश्रम के मुख्य स्वामी का शिष्य बन गया था। वह हिन्दी में धाराप्रवाह बोलता था व विभिन्न वेदों से संस्कृत के श्लोक उद्धृत करता था। उसने भारतीय पत्रों में धर्म पर अंग्रेजी में अनेक लेख भी लिखे थे। वह अयोध्या में एक मन्दिर भी बनवा रहा था। श्रीमती गांधी के विरुद्ध उसने हत्या की योजना बनाई थी, उसमें चम्बल के डकैत की भी सहायता ली थी। इसके अलावा पाक फौजी अफसरों से भी वह सम्पर्क बनाये था।

भारत में स्वयं अनेक साधु पाकिस्तान के जासूस के रूप में भी पकड़े

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जा चुके हैं। इन्होंने अपनी बांह पर ओम् गुदवा रखे थे व येगले में जनेऊ पहनते थे।

यहां उल्लेखनीय है कि १६६६ में सरकार ने जासूसी के आरोप में प्रसिद्ध स्वामी कैलाशानन्द को गिरफ्तार किया था जिसके पास एक शक्तिशाली ट्रांसमीटर भी पकड़ा गया। उनकी पुनः १६७३ में एक विदेशी मुद्रा विनियम रैकिट में शामिल होने के आरोप में जांच की गई थी। १६७८ में कैलाशानन्द मिशन ट्रस्ट के दो कर्मचारियों की रहस्यमय मृत्यु ने उनके विरुद्ध फिर नये सन्देहों को जन्म दिया था। पर उच्च राजनीतिक प्रभाव से वे निरन्तर बच निकलने में सफल रहे हैं।

यहां उल्लेखनीय है कि स्वामी कैलाशानन्द ने श्रीमती गांधी के शासन में आपात काल में आश्रम के बाहर २० सूत्री कार्यक्रम के बोर्ड लगा रखे थे जनता काल में उन्हें हटाकर नया चोला बदल लिया था। जो हो ऋषिकेश में लक्ष्मण झूला आश्रम में उन्होंने अत्यन्त आकर्षक १६ मंजिला अनुपम मंदिरों का भवन बनवाया हुआ है। हर मंजिल पर पृथक देवता का मंदिर व पुराणों में वर्णित विभिन्न देवी-देवताओं की कांच की फ्रेम में बन्द सुन्दर भव्य हजारों मूर्तियां है। पूरा मन्दिर ध्यान से देखने में कई दिन लगते है। इस मन्दिर में रोज हजारों रुपये का चढ़ावा आता है।

भारत के प्रख्यात योगी महर्षि महेश योगी पर भी अनेकों बार सी० आई० ए० के एजेन्ट होने के आरोप लगाये जा चुके हैं। सी० आई० से उनके सम्बन्धों के सन्देह को सबसे पहले ज्योतिमठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द ने १६७८ में उठाया था। उनका कहना था कि ज्योतिर्मठ के पास महेश योगी ने जो शंकराचार्य नगर बसाया था, वह दरअसल भारत-चीन सीमा पर अमरीकी जासूसी केन्द्र था और १६६४ व १६६७ में नन्दा देवी पर्वत पर जिस पारमाणविक उपकरण को जासूसी के लिये लगाया गया था, उसमें महेश योगी ने सहायता की थी। इस विवाद के उठने के तीन दिन बाद ही तत्कालीन जनता सरकार ने महेश योगी का निजी ६ सीट का बैल हैलीकाप्टर वैध लाइसैंस के अभाव में जब्त कर लिया था। इस घटना व विवाद के बाद महेश योगी कुछ समय तक भारत छोड़कर स्विट्जरलैंड के पहाड़ी कस्बे के एक पुराने राजमहल में ही रह रहे थे और १६७६ तक उनकी गतिविधियां विदेशों तक ही सीमित रही थीं।

पर यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित रहा है कि महेश योगी की सैकड़ों करोड़ की परिसम्पत्ति का रहस्य क्या है? यह सारी केवल भक्तों के चढ़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से नहीं बन सकती। फिर स्विट्जरलैंड में उन्होंने मुख्यालय, यूनिवर्सिटी व अन्य केन्द्र क्यों बना रखे है? बहरहाल महेश योगी का साम्राज्य भारत में निरन्तर बढ़ रहा है। हाल में फरीदाबाद के अलावा आंध्र में सैकड़ों एकड़ जमीन प्राप्त करने पर विवाद उठा हुआ है।

जहां तक वर्तमान में ऋषिकेश के स्वामी ओंकारानन्द आश्रम की गतिविधियों का सम्बन्ध है, पुलिस के अनुसार वह व्यक्ति १९४६ में हैदराबाद से शिवानन्द आश्रम में आया था। वह स्वामी शिवानन्द का शिष्य हो गया। उसने पूर्वी व पश्चिमी दर्शन पर दो पुस्तकें भी लिखीं।

१९६६ में वह स्विट्जरलैंड चला गया जहां उसने अपना आश्रम कायम कर लिया। वहां उसका विशाल आश्रम बन गया। पर स्थानीय नागरिकों की शिकायत पर पुलिस जांच करने आई तो उसके अधिकारियों पर घातक आक्रमण किये गये। बाद में स्वामी ओंकारानन्द पर स्विस अदालत में मुकदमा चला व जासूसी एवं हत्या के प्रयत्न में उन्हें १४ वर्ष की सजा दी गई।

पर आश्चर्य कि इन्टैलीजैंस ब्यूरो से एवं भारतीय दूतावास की रिपोर्ट मिल जाने के बाद भी भारत सरकार की आंखें नहीं खुलीं। श्री वली ने जो उस समय केंद्रीय गृह सचिव थे, कुछ ही मास पूर्व ओंकारानन्द के सभी विदेशी शिष्यों का वीजा यह कहते हुए बढ़ाया कि स्वामी ओंकारानन्द आश्रम के बारे में विवाद से अवगत होने पर भी वे संसद सदस्य श्री टी. एस. नेगी के इस स्पष्टीकरण पर यह अनुमति दे रहे हैं कि विवाद के पीछे स्थानीय गपशप है। श्री वली ने नोट में लिखा था कि यदि आगे भी प्रतिकूल रिपोर्ट आई तो वीजा रद्द कर दिये जायेंगें।

आज की स्थितियों को देखते हुए यह मांग गलत नहीं कि साधुओं के रूप में या जो भी रहस्यमय गतिविधियां है, उनका पुनः स्पष्टीकरण सामने आना चाहिए। अगर उनके पीछे कोई भी विदेशी हाथ है तो उन्हें उच्च से उच्च राजनैतिक दबावों के बावजूद बन्द कर दिया जाना चाहिए। यह बताने की जरूरत नहीं कि साधु क्षेत्र भी सी. आई. ए., पाक व अन्य विदेशी जासूस एजेंसियों का आज एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। इसलिये संदिग्ध तत्वों को छूट देना देश के लिए भारी खतरनाक सिद्ध हो सकता

[पब्लिकेशन सिंडीकेट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य — मूल्य ५००)
२. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड) — ५०)
३. वेद ज्योति — १५)
४. वेदांजलि : ३६५ मंत्रों की प्रेरक व्याख्या — ३०)
५. सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या— पं० चमूपति) — १५)
६. ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितीश वेदालंकार — १५)
७. संस्कारविधि [सजिल्द] : — १५)
८. सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र) — ३०)
९. अग्निहोत्र दर्पण (डा० रामनाथ वेदालंकार) — २०)
१०. सत्यार्थ-प्रकाश (१०×१५ इंच) स्थूलाक्षर — १५१)
" " आर्ट पेपर पर — २५१)
११. ज्योति स्तम्भ : — १०)
१२. वैदिक सम्पत्ति — ८१)
१३. योगासन :
१४. योग और ब्रह्मचर्य : — ३)
१५. Concept Of God — ३०)
१६. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश : — २५)
१७. LIGHT OF TRUTH — ५०)
१८. प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री — ६
१९. अथर्ववेद परिचय : — ६)

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग,
करौलबाग, नई दिल्ली ५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कायदे आजम जिन्ना कितने डरपोक थे ?

—निरंजन वर्मा, पूर्व संसद् सदस्य

भारत में अंतिम गवर्नर जनरल की नियुक्ति के पश्चात् जब लार्ड माउन्टबैटन ने श्री जवाहरलाल नेहरू से श्री जिन्ना के विषय में पूछा तो उन्होंने कहा कि जिन्ना को सफलता अपने जीवन के अंतिम समय में अर्थात् ६० वर्ष की आयु के पश्चात् ही मिली ! इससे पहले वे भारतीय राजनीति में अनभिज्ञ व्यक्ति थे। वे एक सफल वकील अवश्य थे परन्तु चोटी के वकीलों में उनकी गणना नहीं की जाती थी। उनकी अपूर्व सफलता का रहस्य यह था कि वे सदैव नकारात्मक रुख धारण किया करते थे। सन् १९३५ से लेकर अंत तक वे अपने इस रूप में अकेले ही जमे रहे। वे जानते थे कि पाकिस्तान किसी भी क्रियात्मक आलोचना के सामने नहीं ठहर सकता परन्तु इसकी उन्होंने कभी चिन्ता नहीं की।

१९४७ के दिनों में जब लार्ड माउन्टबैटन के एक प्रेस प्रतिनिधि ने नेहरू परिवार के साथ चाय पीते हुए तत्कालीन मुस्लिम लीग की प्रगति और उसके जन्मदाता जिन्ना साहब के विषय में जानकारी ली इन्दिराजी ने उसे बताया कि जन्म से जिन्ना हिन्दू थे ! उसी समय कृष्ण-मेनन ने आगे कहा कि मुस्लिम लीग की बढ़ोत्तरी तो ब्रिटिश लोगों के प्रोत्साहन का परिणाम है।

उक्त संदर्भ जिन्ना एवं तत्तकालीन मुस्लिम लीग के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश डालता है ! सन् १९२० के आसपास लोकमान्य तिलक उन्हें कांग्रेस में लाए। वे शीघ्र ही उसके महामन्त्री बन गये। पर जवाहरलाल नेहरू की लोकप्रियता से वे पिछड़ गये अतः उन्होंने न केवल कांग्रेस को त्याग दिया, अपितु अन्त तक वे उसके प्रबल शत्रु बने रहे।

निश्चय ही यह आश्चर्य की बात है कि उर्दू भाषा से अनभिज्ञ, अचकन पाजामे से रहित और दाढ़ी मूंछ से सफाचट, ठेठ हैटपैन्ट वाले जिन्ना कट्टर-पंथी मुसलमानों के नेता कैसे बन गये ! बाद में वे स्वभाव से हठी और कांग्रेस के घोर आलोचक बन बैठे।

जब भारत को स्वराज देने की चर्चा चल रही थी तो माउंटबैटन ने प्रथम साक्षात्कार में उनके स्वभाव का पता लगाकर अपनी एक स्टाफ मीटिंग में कहा—हे ईश्वर, यह व्यक्ति तो अत्यन्त रुखे स्वभाव का है। जब जिन्ना प्रत्येक मुद्दे पर अड़ते रहे तो वाइसराय ने उनके स्वभाव को भांप लिया।

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को उत्सुक थे। पर ब्रिटिश सरकार ने इसकी अनुमति नहीं दी। अतः कुछ दिनों के लिये माउंटबैटन को ले जाने की बात खटाई में पड़ गई।

पांच अगस्त सन् १९४७ को जिन्ना साहब को अपने सूत्रों से पता चला कि अगले सप्ताह कराची समारोह के जुलूस में उनकी मोटर पर सिखों द्वारा आक्रमण होगा और उनको मार डाला जाएगा तो वह अत्यन्त भय-भीत हो गये। अतः उन्होंने और लियाकत अली खां ने शीघ्र ही तारा सिंह और अन्य सिख नेताओं की गिरफ्तारी की जोरदार मांग की। परन्तु सरदार पटेल ने दृढ़तापूर्वक अस्वीकार कर दिया इससे वे और आतंकित हो उठे और उन्होंने अनुनय विनय द्वारा वायसराय को करांची चलने हेतु मना लिया।

तारा एलेन ने लिखा है कि १३ अगस्त को जब वायसराय करांची के लिए हवाई अड्डे पर उतरे तो उनकी अगवानी को हिदायतुल्ला नाम का एकमेव अफसर खड़ा हुआ था। जब पत्रकारों में इस विषय में कानाफूसी हुई और ब्रिटिश अधिकारियों ने जिन्ना के इस व्यवहार को वायसराय के लिये अपमानजनक समझा, तो वाइसराय ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वे सम्पूर्ण घटना जानते थे, इसलिये वे हंस कर रह गये। रास्ते में जिन्ना साहब के सेक्रेटरी ने वायसराय को बतलाया कि कल के प्रोसेशन में जिन्ना साहब की गाड़ी पर बम फेंका जायेगा। या तो इस राजकीय जुलूस को न निकाला जाये अथवा उसका मार्ग परिवर्तन कर दिया जाये उसने यह भी बतलाया कि यदि जुलूस में जिन्ना साहब के साथ वाइसराय भी बैठेंगे तभी वे जुलूस में जावेंगे। वायसराय ने हंसकर उनकी मोटर में बैठना स्वीकार कर लिया।

कैम्बल ने मजाक उड़ाते हुए लिखा है कि एक ओर तो यह दृश्य चल रहा था, दूसरी ओर उसी रात को लीग की मीटिंग में प्रत्येक सदस्य जिन्ना साहब के सामने अपनी बहादुरी की डींग मारकर भाषण प्रतियोगिता में एक दूसरे को मात करने का नाटक कर रहा था।

१३ अगस्त की रात को जिन्ना साहब के निवास पर राजकीय भोज हुआ। इस अवसर पर अंग्रेज मेहमानों को एक नये आश्चर्य से गुजरना पड़ा। वे हैरान थे कि वाइसराय के आस-पास तो विशिष्ट व्यक्तियों की भीड़ लगी ही थी, पर जिन्ना साहब अकेले एक कोने में खड़े हुए थे। उन्हें आश्चर्य था कि एक राष्ट्र का निर्माता अपने स्वप्न लोक में ही अपने व्यक्तियों से इतना दूर लग रहा था। उन्हें अकेला देखकर कुछ अंग्रेज अधिकारी उनके पास पहुंच कर उनसे बातें करने लगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूसरे दिन कायदे आजम का काफिला जुलूस के रूप में पाकिस्तान को जन्म देने के लिये असेंबली भवन जा रहा था तो जिन्ना साहब सर्वेसर्वा दिखाई दे रहे थे। परन्तु वे लार्ड माउंटबैटन से सटे हुए बैठे थे। इस समय कायदे आजम एक साथ गवर्नर जनरल, पाकिस्तान के शाहंशाह; मजहब के कैंटबरी के लाट पादरी के समान, स्पीकर और प्रधान मंत्री के एकीकृत स्वरूप को ग्रहण किये हुए थे। चारों ओर देखते जा रहे थे। जब पार्लियामेंट (असेंबली) भवन के सामने जुलूस समाप्त हुआ तो जिन्ना साहब ने माउंटबैटन का घुटना दबाते हुए कहा : अल्लाह का शुक्र है, मैं आपको सही सलामत लौटा लाया।' मानों किसी आक्रमण से माउंटबैटन को बचाने का श्रेय उन्हीं को था। माउंटबैटन ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे उनकी इस बहादुरी पर केवल हँस भर दिये।

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए

पवित्र धर्म-ग्रन्थ : परमात्मा की अमरवाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मंत्र-शब्दार्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

लागत मूल्य : ५०० रु०

किन्तु प्रचार के लिए

पुस्तकालय संस्करण : २७५ रु०

उपहार संस्करण : लागत मूल्य : १,००० रु०

अभी केवल ७०० रुपये में लीजिये।

आदेश के साथ ५० रु० अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

दूरभाष : ५६२६३६-५६४७४१-५०१२११

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन्मदिवस [१२ दिसम्बर] पर विशेष लेख

सैनिकीकरण के महामन्त्रदाता डा० मुंजे

—श्रीमती मृणालिनी ओक एम० ए०

क्लैब्यं मास्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्यु पपद्यते ।
क्षुद्र हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥

सांसारिक मोह माया से ग्रसित भारत को, अपूर्व तत्ववेत्ता, महान कूटनीतिज्ञ, सुदर्शनधारी वीर महापुरुष कृष्ण ने कुरुक्षेत्र की रणस्थली पर दिया हुआ शाश्वत अमर मन्त्र विगत अगणित वर्षों से कोटि-कोटि कर्णों में निनादित होते आ रहा है तथा अनन्तकाल तक गुंजायमान् होता रहेगा? इसलिए कि यह पवित्र भारत-मां वसुन्धरा सुप्रसन्ना है। युग-युग में प्रति-कृष्णों को जन्म देकर इसने उस आदि कृष्ण के उपर्युक्त महामन्त्र की पुनरोक्ति उनके मुखारविन्द से करवाकर ग्लानि से क्लान्त, निराशा से म्लान होने वाले वीरों को उक्त ज्ञान से आलोकित किया है। ऐसे ही एक प्रतिकृष्ण थे डॉ० बालकृष्ण शिवराम मुंजे। युद्ध की काली छाया से समाच्छादित भारत उस महान सेनापति की १२ दिसम्बर को ११२ वर्ष वी जन्मदिवस का समारोह मनायेगा? वीर का वास्तविक जन्म रणभूमि पर होता है उसका वास्तविक युद्ध क्षेत्र में व्यतीत होता है तथा उसे जीवन निर्वाण की प्राप्ति भी संग्राम स्थल पर ही होती है।

हिंदू धर्म के अभिमानी डा० मुंजे

यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि डाक्टर महोदय का जन्म हमारे हा मध्य प्रदेश के नगर बिलासपुर में हुआ था और यहीं पर उनके पिताजी से उन्हें वे संस्कार प्राप्त हुये जिनके कारण ही पाश्चात्य-पद्धति की शिक्षा पाने के उपरान्त भी वे प्रखर हिन्दू धर्माभिमानी के रूप में प्रसिद्ध हैं। १८९४ से १८९८ की कालावधि तक डाक्टरी का प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु आप जब बम्बई के ग्रेट मेडिकल कालेज में थे तब महान क्रांतिकारी दामोदर पन्त चाफेकर के क्रान्ति कार्य से आप बहुत ही प्रभावित हुए। १८९९ में रायगढ़ के किले पर लोकमान्य तिलकजी के सर्वप्रथम दर्शन किये और तब ही से आपने तिलकजी का शिष्यत्व प्राप्त किया। दक्षिण अफ्रीका के बोअर युद्ध का अवसर पाकर आप सेना के डाक्टर के रूप में भर्ती हुए और युद्ध का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनुभव प्राप्त किया। डा० मुंजे नेत्र विशेषज्ञ थे, युद्ध से वापस लौटने के उपरान्त आपने नागपुर में नेत्र चिकित्सालय प्रारम्भ किया, और कुशल नेत्रविद् के रूप में ख्याति अर्जित की। व्यवसाय के आधार को सुदृढ़ बनाकर सन १९०४ में आपने राजनैतिक क्षेत्र में पग रखा। १९०४ के कांग्रेस के अधिवेशन में आप बम्बई गये और अगले ही वर्ष कांग्रेस के वाराणसी अधिवेशन में आप एक प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित रहे। और इस प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में स्वप्रतिभा से आप उच्चतर स्थान प्राप्त करने लगे। आपकी प्रखर साहसिकता को केवल इसी बात से समझा जा सकता है कि लोकमान्य तिलक जी के शिष्य होने के उपरान्त भी १९१६ का तिलकजी का जो हिन्दू-मुस्लिम समझौता लेखनी समझौता था उसका आपने स्पष्ट शब्दों में विरोध किया था।

चोटी के राजनैतिक नेता

डाक्टर मुंजे को दक्षिण में मोपला मुसलमानों द्वारा हिंदुओं पर किये जाने वाले पाशविक अत्याचार के व्यवस्थित जेहाद का प्रत्यक्ष-स्थिति अध्ययन करने हेतु सन् १९२२ में मद्रास जाना पड़ा। स्वदेश में ही हिन्दुओं पर होने वाले अकथनीय अत्याचारों से आपका हृदय क्रोध से भर गया और आप हिन्दू महासभा की ओर आकर्षित हुए। अगले ही वर्ष मुसलमानों की तुष्टि हेतु हिन्दुओं के धार्मिक बल समारोह दिण्डी पर नागपुर में लगे शासकीय प्रतिबन्ध को हटाने हेतु आपने आन्दोलन छेड़ दिया जो दिण्डी सत्याग्रह के नाम से प्रसिद्ध है। इसी वर्ष आप तत्कालीन मध्यप्रदेश की धारा सभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए। आपने युद्ध शास्त्र का प्रगाढ़ अध्ययन किया जिसका साक्षात्कार देश के अन्यान्य नेताओं को आपके केन्द्रीय धारा सभा के भाषणों से प्राप्त हुआ। १९२७ के हिन्दू महासभा के पटना अधिवेशन के आप अध्यक्ष थे। आपने अध्यक्षीय भाषण में 'सेना के हिंदूकरण' की दूरदर्शी बन्धों द्वारा दुर्लक्षित क्रांतिकारी घोषणा आपने की जो काल की कसौटी पर पूर्णतः सत्य सिद्ध हुई है। १९३१ की गोलमेल परिषद में आपने तर्कपूर्ण एवं प्रभावी वक्तृता से बैरिस्टर जिन्ना एवं मुसलमान प्रतिनिधियों की राष्ट्रघाती मांगों का प्रखर विरोध किया।

जिसकी फौज उसका राज

अहिंसा के परम पुनित महामन्त्र के अनर्थ से ग्रसित, भ्रमित एवं त्रसित भारत के लिए उसके वास्तविक अर्थ का परिचय देकर राष्ट्र की स्वतन्त्रता एवं सुरक्षा के हित राष्ट्र को सैनिकीकरण के मार्ग का केवल मात्र दिग्दर्शन ही नहीं तो प्रत्यक्ष सैनिका प्रशिक्षण की व्यवस्था इस बाल कृष्ण ने ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करवाई। दासता के बन्धनों से आबद्ध भारत के हिंदू युवकों में छात्रभाव भरने एवं उन्हें सैनिकी-प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से अशासकीय रूप में 'भोंसला सैनिकी विद्यालय' स्थापित करने का एकमेव अद्वितीय साहसिक कार्य आप ने ही किया जो साक्षात है, आज भी विद्यमान है—उन्नति के पथ पर अग्रसर है। काश्मीर से कन्याकुमारी तक और कामरूप से कच्छ तट को भारत राष्ट्र के युवा रक्त को 'जिसकी फौज उसका राज' के उपदेशादेश से मन्त्रमुग्ध करने वाली वह प्रभावी वाणी आपकी ही थी जिससे प्रेरित हो अगणित हिंदू युवकों ने सेना में प्रवेश किया और देश के दुखद विभाजन के समय पर देश की सीमाओं को तथा देश के अन्तर को शत्रुओं एवं मन्त्र-मांगियों से सुरक्षित रखा।

सैनिकी मानवन्दना का अधिकारी सेनाविद्

इस प्रकार इस लोक का निज कर्तव्य पूर्ण कर १९४८ के मार्च में अपनी कार्यस्थलि 'भोंसला सैनिकी विद्यालय' पंचवटी नासिक में आपको निर्वाण की प्राप्ति हुई ऐसे महान सेनाविद को मैं सादर श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं और देश के युवा-रुधिर से आग्रह करती हूं कि वे स्वतः में छात्र भाव का समावेश कर, स्वतः को सेना में समाविष्ट कर राष्ट्र को बलशाली बना कर सैनिकी करण के महामन्त्रदाता डाक्टर बालकृष्ण शिवराम मुंजे की ब्रम्हीभूत आत्मा को श्रद्धापूर्ण सैनिकी मांग वन्दना दे।

शक्तिरेव जयते न दौर्बल्यम

अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति

स्थापित कर—देश धर्म की

रक्षा कीजिए।

संपादक मुद्रक व प्रकाशक पंडिता राकेशरानी द्वारा
जन-ज्ञान मुद्रणालय दिल्ली-३६ में छपा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi